नई दिल्ली RNI NO. DELHIN/2010/37009

वर्षः 11

अंकः 66

सोमवार, 03-09, जनवरी 2022

मूल्यः 5 रु प्रति

रु 250 वार्षिक

महिला मतदाताओं को प्रोत्साहित करने की तैयारी, डिजिटल प्रचार पर दिया गया जोर 03

सर्वेक्षण तो यूपी में भाजपा की सरकार बनवा रहे हैं, परन्तु हकीकत क्या है? 08

NCR समाचार

www.ncrsamacharlive.in

BY C.R.O. TEAM

twitter-@ncrsamacharlive

अपने गहरे दोस्त से मिलने चीन जाएंगे पाकिस्तान के पीएम इमरान खान 10

विदेशी कोच के साथ प्रेक्टिस नहीं करना चाहते बजरंग पूनिया और रवि 11

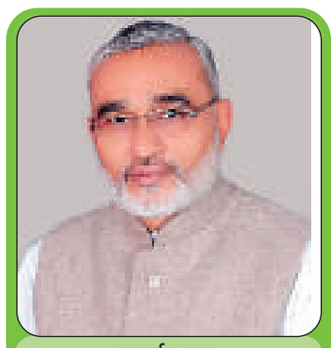

इस्माईल खान

भारत का नं 1 साप्ताहिक समाचार पत्र

नॉटी मूड में संजीदा शेख ने शेयर की हॉट तस्वीर, क्लीवेज पर अटकी फैंस की नजरें 12

7 चरणों में होंगे यूपी के चुनाव

पंजाब, गोवा, उत्तराखंड में 1 फेज में मतदान, 10 मार्च को आएंगे नतीजे

एजेंसी

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में विधानसभा चुनाव का बिगुल बज गया है। चुनाव आयोग की ओर से प्रेस कॉन्फ्रेंस कर आज इसकी जानकारी दी गई। इसके साथ ही इन पांचों राज्यों में आचार संहिता भी लागू हो गया। पांचों राज्यों के चुनाव 7 फेज में में होंगे। पहला चरण का मतदान 10 फरवरी को होगा। गोवा, पंजाब और उत्तराखंड में एक चरण में चुनाव। होंगे जबकि उत्तर प्रदेश में 7 पेज में चुनाव कराए जाएंगे। 14 फरवरी को दूसरे चरण का मतदान होगा। दूसरे चरण में ही गोवा, उत्तराखंड और पंजाब में चुनाव होंगे। 20 फरवरी को तीसरे चरण का चुनाव होगा। 23 फरवरी को चौथे चरण के लिए मतदान डाले जाएंगे। मणिपुर में दो चरणों में चुनाव होंगे। पांचवें चरण के मतदान 27 फरवरी को होगा। छठे चरण का मतदान 3 मार्च को होगा। 27 फरवरी और 3 मार्च को मणिपुर में चुनाव होंगे। आखरी चरण के चुनाव 7 मार्च को कराए जाएंगे। 10 मार्च को सभी राज्यों के चुनावी नतीजे आएंगे।

चुनाव आयोग की ओर से यह भी कहा गया कि 24.9 लाख मतदाता इस बार पहली बार वोट डालेंगे। इसके साथ ही यह भी बताया गया है कि इस बार महिला वोटरों की भागीदारी बढ़ेगी। उत्तर प्रदेश में 29 प्रतिशत मतदाता पहली बार वोट डालेंगे

मुख्य निर्वाचन आयुक्त ने कहा कि कोरोना नियमों के साथ चुनाव कराए जाएंगे। उन्होंने कहा कि मतदाता सूची 5 जनवरी को प्रकाशित हुई थी। उन्होंने कहा कि आगामी चुनाव में 18.3 करोड़ मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। मुख्य चुनाव आयुक्त ने कहा कि चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों को ऑनलाइन नामांकन दाखिल करने का विकल्प भी दिया जाएगा। इसके साथ ही चुनाव आयोग की ओर से यह भी कहा गया कि 24.9 लाख मतदाता इस बार पहली बार वोट डालेंगे। इसके साथ ही यह भी बताया गया है कि इस बार महिला वोटरों की भागीदारी बढ़ेगी। उत्तर प्रदेश में 29% मतदाता पहली बार वोट डालेंगे। यह सुनिश्चित किया जाएगा कि सभी पोलिंग बूथ ग्राउंड फ्लोर पर ही रहे। पोलिंग स्टेशन में 16 फ़ीसदी की वृद्धि की गई है। कुल 215368 पोलिंग स्टेशन होंगे।हर विधानसभा क्षेत्र में कम से कम एक मतदान केंद्र ऐसा होगा जो विशेष रूप से महिला कर्मियों द्वारा संचालित किया जाएगा ताकि महिला मतदाताओं को प्रोत्साहित किया जा सके। मुख्य चुनाव आयुक्त ने कहा कि चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों को ऑनलाइन नामांकन दाखिल करने का विकल्प भी दिया जाएगा। सीईसी सुशील चंद्रा ने कहा कि 80 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिक, विकलांग व्यक्ति और COVID19 रोगी डाक मतपत्र द्वारा मतदान कर सकते हैं। सभी मतदान केंद्रों पर ईवीएम और वीवीपैट का इस्तेमाल किया जाएगा। चुनाव आयोग ने चुनाव के सुचारू संचालन के लिए पर्याप्त संख्या में ईवीएम और वीवीपैट सुनिश्चित करने के लिए पहले ही व्यवस्था कर ली है। सीईसी सुशील चंद्रा ने कहा राजनीतिक दलों के लिए यह अनिवार्य है कि वे मतदान उम्मीदवारों के रूप में चुने गए लंबित आपराधिक मामलों वाले व्यक्तियों के बारे में विस्तृत जानकारी अपनी वेबसाइट पर अपलोड करें। उम्मीदवार के चयन के लिए उन्हें कारण भी देना होगा। चुनाव आयोग ने बड़ा फैसला लेते हुए साफ तौर पर कह दिया है कि 15 जनवरी तक यात्रा रोड शो, साइकिल-बाइक रैली पर पाबंदी रहेगी। जबकि चुनावी दल वर्चुअल तरीके से रैली कर सकते हैं। डोर टू डोर कैंपेन के लिए सिर्फ 5 लोगों की ही इजाजत रहेगी। घर-घर जाकर सिर्फ 5 लोग ही प्रचार कर सकेंगे। कोविड-19 नियमों के उल्लंघन करने पर कार्यवाही की जा सकती है।

पीएम मोदी की सुरक्षा में चूक पर चन्नी ने प्रियंका को किया ब्रीफ

संबित पात्रा ने साधा कांग्रेस पर निशाना

एजेंसी

नई दिल्ली। पंजाब में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सुरक्षा में हुई चूक का मामला शांत होता दिखाई नहीं दे रहा है। इन सब के बीच खबर यह भी है कि पंजाब के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने इस मामले को लेकर प्रियंका गांधी से बातचीत की है और सारे मसले से उन्हें अवगत करा दिया है। चन्नी ने यहां तक कहा कि पंजाब में प्रधानमंत्री को कोई खतरा नहीं था। प्रधानमंत्री पूरी तरह से सुरक्षित थे। हालांकि भाजपा प्रियंका गांधी को ब्रीफ करने को लेकर पूरी तरह से भड़क गई है। भाजपा प्रवक्ता संबित पात्रा ने पंजाब के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी पर जबरदस्त तरीके से पलटवार किया है। भाजपा प्रवक्ता ने साफ तौर पर पूछा कि चन्नी ने प्रधानमंत्री की सुरक्षा में हुई चूक को लेकर प्रियंका गांधी को ब्रीफ क्यों किया? संबित पात्रा ने साफ तौर पर कहा कि एक सीटिंग मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री की सुरक्षा जैसे गंभीर मसले पर प्रियंका गांधी को ब्रीफ किया। इसके साथ ही उन्होंने सवाल किया कि आखिर

मुख्यमंत्री ने प्रियंका गांधी वाड्रा को पीएम की सुरक्षा की जानकारी क्यों दी प्रियंका के पास कौन सा संवैधानिक पद है और वह पीएम की सुरक्षा के संबंध में क्या जानकारी रखती हैं? इसके साथ ही संबित पात्रा ने मांग की कि गांधी परिवार को इस मामले को लेकर सफाई देनी चाहिए। उन्होंने साफ तौर पर पूछा कि प्रियंका गांधी कौन है जिन्हें एक सेटिंग चीफ मिनिस्टर ब्रीफ करते हैं। इसके साथ ही तंज में उन्होंने कहा कि चन्नी साहब थोड़ा ईमानदार हो जाइए।

सरदार पटेल के कथन का इस्तेमाल

इससे पहले चरणजीत सिंह चन्नी ने दोहराया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हालिया फिरोजपुर यात्रा के दौरान उनकी जान को कोई खतरा नहीं था और उनपर निशाना साधने के लिए सरदार वल्लभभाई पटेल की एक टिप्पणी का सहारा लिया। चन्नी ने सरदार पटेल के उद्धरण को ट्विटर पर साझा करते हुए कहा, "जो कर्तव्य से अधिक अपने जीवन की परवाह करता है, उसे भारत जैसे देश में बड़ी जिम्मेदारियां नहीं संभालनी चाहिए। पहले यहां पत्रकारों से बात करते हुए, मुख्यमंत्री ने बार-बार दोहराया कि प्रधानमंत्री के जीवन को कोई खतरा नहीं है और कहा कि वह यह कहते-कहते थक गए हैं और प्रधानमंत्री के लंबे जीवन के लिए महामृत्युंजय पाठ करने के लिए भी तैयार हैं।

निर्वाचन आयोग चुनावों को धार्मिक रंग देकर राजनीति करने वालों के खिलाफ सख्त कदम उठाए: मायावती

एजेंसी

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने विधानसभा चुनाव की तारीख घोषित होने के एक दिन बाद रविवार को निर्वाचन आयोग से अनुरोध किया कि वह ''चुनावों को धार्मिक रंग देकर स्वार्थ की संकीर्ण राजनीति'' करने वालों के खिलाफ सख्त कदम उठाए। बसपा प्रमुख ने रविवार को मीडिया से कहा कि उत्तर प्रदेश सहित पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव के लिए कार्यक्रम की घोषणा की जा चुकी है। उन्होंने कहा कि इन राज्यों में चुनाव के मद्देनजर यह बहुत जरूरी है कि निर्वाचन आयोग आदर्श आचार संहिता को पूरी सख्ती से लागू कराने के लिए ठोस कदम उठाए, ताकि आमजन में स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण ढंग से चुनाव कराने के संबंध में विश्वास कायम हो सके। उन्होंने

आरोप लगाया, ''पिछले कुछ वर्षों में चुनावों के दौरान हर प्रकार की धांधली करने तथा सत्ता एवं धर्म का चुनावी लाभ लेने के लिए अनुचित काम करने की प्रवृत्ति काफी घातक रूप में बढ़ी है। मायावती ने कहा कि यह चिंता का विषय है। उन्होंने कहा, पिछले कुछ चुनावों में कोरोना वायरस के प्रकोप के बीच भी जिस प्रकार से रैलियों एवं रोड शो आदि के जरिये आचार संहिता का खुला उल्लंघन किया गया है, उससे पूरा देश हैरत में है। इसके अलावा, पिछले कुछ वर्षों से चुनावों को धार्मिक रंग देकर जिस प्रकार से स्वार्थ की संकीर्ण राजनीति की जा रही है, उस पर भी चुनाव आयोग को सख्त कदम उठाने की जरूरत है। उत्तर प्रदेश में चार बार मुख्यमंत्री रह चुकीं मायावती ने अपने कार्यकाल में कानून व्यवस्था को बेहतर करार देते हुए राज्य में सत्तारूढ़ भारतीय जनपा पार्टी (भाजपा) पर आरोप लगाया कि मौजूदा सरकार के पक्षपातपूर्ण रवैये के कारण राज्य में ''अपराधियों का जंगलराज'' है।

जैश-ए-मुहम्मद की रडार पर नागपुर के कई इलाके, बढ़ाई गई आरएसएस मुख्यालय की सुरक्षा

नागपुर, एजेंसी। नागपुर पुलिस कमिश्नर अमितेश कुमार ने बयान में कहा कि पिछले कुछ दिनों से खबर आई थी कि जैश-ए-मुहम्मद के कुछ आतंकी नागपुर के कुछ इलाकों में रेकी की थी। इसी को लेकर पुलिस ने पर सक्रिय हो गई है। हमने गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम के तहत अपराध दर्ज किया है, इसकी जांच अपराध शाखा द्वारा की जा रही है।

पाक समर्थित आतंकवादी संगठन जैश-ए-मुहम्मद लगातार भारत में साजिश की फिराक में रहता है। इसी कड़ी में बड़ी खबर नागपुर से आ रही है। बताया जा रहा है कि नागपुर के कई इलाकों में जैश-ए-मुहम्मद ने रेकी की है। नागपुर के कई ठिकाने जैसे मोहम्मद के रडार पर है और यही कारण है कि नागपुर स्थित आरएसएस मुख्यालय की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। इसके अलावा रेशमबाग स्थित हेडगेवार भवन की सुरक्षा बढ़ा दी गयी है। नागपुर पुलिस कमिश्नर अमितेश कुमार ने बयान में कहा कि पिछले कुछ दिनों से खबर आई थी कि जैश-ए-मुहम्मद के कुछ आतंकी नागपुर के कुछ इलाकों में रेकी की थी। इसी को लेकर पुलिस ने पर सक्रिय हो गई है। हमने गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम के तहत अपराध दर्ज किया है, इसकी जांच अपराध शाखा द्वारा की जा रही है। सुरक्षा को लेकर उन्होंने बताया कि नागपुर के अहम इलाकों में सुरक्षा के कड़े बंदोबस्त कर दिए गए हैं। कई जगहों पर सुरक्षा बढ़ा दी गई है। साथ ही साथ लोगों को भी एतिहाद बरतने के निर्देश दे दिए गए हैं। नागपुर के कई इलाकों में पुलिस की सुरक्षा बढ़ा दी गई है।

योगी भाजपा के सदस्य भी नहीं, कभी यहां से तो कभी वहां से टिकट मांग रहे हैं: अखिलेश

एजेंसी

लखनऊ। समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने शुक्रवार को दावा किया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सदस्य भी नहीं हैं तथा वह कभी इस विधानसभा से और कभी उस विधानसभा क्षेत्र से टिकट मांग रहे हैं और उन्हें कोई टिकट नहीं दे रहा है। अखिलेश आज पूर्व मंत्री विनोद कुमार सिंह उर्फ पंडित सिंह की पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल होने के लिए गोंडा में थे। उन्होंने पत्रकारों से एक सवाल के जवाब में कहा कि मुख्यमंत्री (योगी आदित्यनाथ) टिकट मांग रहे हैं, कभी इस विधानसभा से, कभी उस विधानसभा सेऔर कोई उन्हें टिकट नहीं दे रहा है। पूर्व मुख्यमंत्री ने यह भी दावा किया, वह (योगी)

भारतीय जनता पार्टी के सदस्य नहीं हैं और पूरी भाजपा के लोग उनसे दुखी हैं, जितने भी सीनियर (वरिष्ठ) हैं, सब दुखी हैं। वो कहते हैं कि खून पसीना बनाकर हमने पार्टी बनाई और ये जाने कहां से आ गए और बैठ गए। अखिलेश ने यह भी कहा, जिस तरह से सूचना आ रही है कि वह (योगी) यहां से चुनाव लड़ेंगे, वह वहां से लड़ेंगे उससे लगता है कि वो टिकट मांग रहे हैं, कितने कमजोर मुख्यमंत्री हैं जो टिकट मांग रहे हैं। उल्लेखनीय है कि योगी के बारे में कभी मथुरा तो कभी अयोध्या तो कभी गोरखपुर से चुनाव लड़ने की खबरें मीडिया में आ रही हैं। भाजपा के राज्यसभा सदस्य हरनाथ सिंह यादव ने बीते दिनों एक पत्र लिखकर योगी को मथुरा से चुनाव लड़ाने की मांग की थी।

अखिलेश ने एक अन्य सवाल के जवाब में कहा, हम बहुत जल्द बता देंगे कि हम कहां से चुनाव लड़ेंगे, हमारी पार्टी तय करेगी कि मैं चुनाव लड़ाऊं कि चुनाव लडूं या चुनाव लड़कर भी लड़ाऊं, यह पार्टी तय करेगी। उन्होंने भाजपा पर अपने कार्यक्रमों की नकल करने का आरोप लगाते हुए कहा, समाजवादी पार्टी के एक नेता ने भगवान परशुराम की मूर्ति लगा दी तो आज भाजपा ने भी उनकी मूर्ति लगा दी।

संक्षिप्त समाचार

पाकिस्तानी बोट के बाद मोगा में हैंड ग्रेनेड बरामद, जहां रोका गया था पीएम मोदी का काफिला, वहां से 50 किमी दूर का है मामला

फिरोजपुर, एजेंसी। पंजाब के जिस फिरोजपुर जिले में प्रधानमंत्री की सुरक्षा में गंभीर चूक हुई उसी जिले में एक पाकिस्तानी नाव मिलने के बाद अब वहां से करीब 50 किलोमीटर दूर मोगा में दो हथगोले मिलने का मामला सामने आया है। शुक्रवार को मोगा जिले के चोगावां गांव से पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। कनाडा स्थित खालिस्तान टाइगर फोर्स (केटीएफ) का संचालक अर्शदीप सिंह उर्फ अर्श डाला के तीन साथी को पुलिस ने अपनी गिरफ्त में लिया है। तीनों को दो हथगोले और दो पिस्तौल के साथ गिरफ्तार किया गया था। पुलिस ने कहा कि उन्होंने कानून-व्यवस्था की स्थिति को बिगाड़ने के लिए मोगा के एक चर्च पर हमला करने की योजना बनाई थी। आरोपियों की पहचान गांव शादीवाला निवासी गुरप्रीत सिंह उर्फ गोपी, मखू निवासी वरिंदर सिंह उर्फ विंदा और मोगा जिले के गांव फतेहगढ़ पंजतूर के बलजीत सिंह के रूप में हुई है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि आरोपी ने एक चर्च की रेकी की थी और उस पर ग्रेनेड हमले की योजना बनाई थी। हालांकि, हमने उन्हें पकड़ लिया और हमले को टाल दिया। मोगा के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक चरणजीत सिंह सोहल ने कहा कि जब उसने नाके बंदी के दौरान थाना मह्ना के अधीन पड़ते गांव चुगावा के पास एक काले रंग की पिकअप गाड़ी PB 04 AC 2831 को रोकने का इशारा किया गया। पहले आरोपियों ने पुलिस टीम को अपने वाहन से कुचलने की कोशिश की, जब उन्हें रोका गया और फिर उन्होंने उन पर ग्रेनेड फेंकने की कोशिश की।

2024 का सेमीफाइनल है 2022 का विधानसभा चुनाव

तय हो जाएगी भाजपा और कांग्रेस की दशा-दिशा

एजेंसी

उत्तर प्रदेश सहित पांच राज्यों में विधानसभा के चुनावों का ऐलान हो गया है। इन पांच में से चार राज्यों में भाजपा की सरकार है।

देखा जाए तो पश्चिम बंगाल में मिली करारी शिकस्त के बाद भाजपा को इन राज्यों से काफी उम्मीदें हैं। 2024 के लोकसभा चुनाव में अगर अपना दबदबा कायम रखना है तो भाजपा के लिए उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में सरकार को बचाए रखना सबसे महत्वपूर्ण है। 2019 के लोकसभा चुनाव के बाद विधानसभा चुनाव में भाजपा को कुछ खास सफलता नहीं मिल पाई है। झारखंड में उसका प्रदर्शन बेहद खराब रहा। महाराष्ट्र में गठबंधन कर चुनाव मैदान में उतरने वाली भाजपा को चुनाव बाद बड़ा झटका लगा। हरियाणा में 2014 के मुकाबले 2019 में सीटों की संख्या

काफी कम रही। बंगाल में पार्टी को काफी उम्मीदें थी लेकिन वह पूरी नहीं हो सकी। असम, बिहार और पुडुचेरी में भाजपा को सफलता जरूर हाथ लगी। यही कारण है कि माना जा रहा है कि इन विधानसभा चुनावों में पार्टी पूरी दमखम के साथ चुनावी मैदान में उतरना चाहेगी। कहते हैं कि अगर दिल्ली की सत्ता में आपको अपना दबदबा कायम रखना है तो उत्तर प्रदेश में आपको जीत हासिल करना बेहद जरूरी है। लखनऊ के रास्ते ही दिल्ली तक पहुंचा जा सकता है। यही कारण है कि भाजपा उत्तर प्रदेश में हर हाल में अपनी सत्ता को बरकरार रखना चाहती है। इसी वजह से पार्टी का पूरा फोकस उत्तर प्रदेश पर है। उत्तर प्रदेश में पिछले 30 साल से ज्यादा के इतिहास को देखें तो कोई भी पार्टी लगातार दो बार सत्ता में नहीं आई है। योगी आदित्यनाथ कहते है कि हम रिकॉर्ड तोड़ने के लिए ही आए है। 2014 के बाद उत्तर प्रदेश में भाजपा का दबदबा रहा है। 2017 और 2019 के चुनाव में भी भाजपा ने यहां कमाल किया। उत्तर प्रदेश में अगर पार्टी जीतती है तो कहीं ना कहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कामकाज पर भी मुहर लगेगा। माना जा रहा है कि उत्तर प्रदेश में अगर भाजपा इस चुनाव में भी बाजी मार लेती है तो मोदी सरकार की राजनीतिक पूंजी में काफी इजाफा हो सकता है और केंद्र की सरकार आगे कई बड़े कदम भी उठा सकती है। वर्तमान में देखे तो कृषि कानूनों का मुद्दा उत्तर प्रदेश में ठंडा पड़ता दिखाई दे रहा है लेकिन कहीं ना कहीं चुनाव में यह बड़ा रोल अदा कर सकता है।

योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में भाजपा अपने हिंदुत्व के रथ को भी आगे बढ़ाना चाहती है।

एनसीआर समाचार, साप्ताहिक समाचार पत्र में विज्ञापन के लिए संपर्क करें।

कार्यालय:
12/276, संगम विहार
नई दिल्ली-62

फोन:
8888883968,
9811111715

पीएम की 'सुरक्षा में चूक' के लिए कांग्रेस को चन्नी को बर्खास्त करना चाहिए : हिमंत

गुवाहाटी, एजेंसी। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा ने शुक्रवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पंजाब में फिरोजपुर दौरे के वक्त हुई सुरक्षा चूक को लेकर कांग्रेस को राज्य के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी को बर्खास्त कर देना चाहिए। सरमा ने यह भी कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी और उनके बेटे राहुल गांधी जब भी गैर-कांग्रेस शासित राज्यों में जाते हैं तो वहां के सुरक्षा तंत्र पर निर्भर होते हैं। सरमा ने यहां संवाददाताओं से कहा, "कोई बुरी मिसाल कायम नहीं की जानी चाहिए। अगर ऐसा हुआ है, तो पार्टी के वरिष्ठों को उस व्यक्ति की निंदा करनी चाहिए।" उन्होंने कहा, '' सोनिया गांधी और राहुल गांधी को मामले में अपने संबंध में समान संवेदनशीलता को समझते हुए सबसे पहले पंजाब के मुख्यमंत्री की आलोचना या निंदा करनी चाहिए थी।"

एनसीआर समाचार पत्र के स्वामित्व/ प्रकाशन परिवर्तन के संबंध में

आवश्यक सूचना

एनसीआर समाचार के समस्त पाठकों तथा पत्र के साथ जुड़े समस्त पत्रकारों, व्यावसायिक संयोजक, सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं/संस्थानों को यह सूचित किया जाता है कि गत वर्षों से श्री बलबीर सिंह के नेतृत्व व स्वामित्व में चले आ रहे वर्तमान एनसीआर समाचार पत्र का प्रकाशन व स्वामित्व मो. हनीफ, पुत्र श्री इस्माईल खान मास्टरजी, संगम विहार के स्वामित्व व नेतृत्व में हो रहा है। अतः भविष्य में समस्त प्रकार की व्यावसायिक, कानूनी एवं सामाजिक गतिविधियों के संचालन हेतु मो. हनीफ/ नये कार्यालय जी 12/276, संगम विहार, नई दिल्ली - 110062, दूरभाष (मोबाईल) 8888883968, 9311111715 से सम्पर्क करें

संक्षिप्त समाचार

एक महीने में तीन बार प्रकाश राजभर से मिले बीजेपी के नेता, मायावती ने कही ये बात!

नई दिल्ली। भाजपा उपाध्यक्ष और ज्वाइनिंग कमेटी के सदस्य दयाशंकर सिंह ने सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर से मुलाकात की। एक महीने में दोनों के बीच यह तीसरी मुलाकात है। कहा जाता है कि बीजेपी चाहती है कि ओम प्रकाश राजभर फिर से उनके साथ आ जाएं. इस मुलाकात के बाद एक बार फिर दोनों के बीच गठबंधन की अटकलें तेज हो गई हैं. उधर ओम प्रकाश राजभर के बेटे अरुण राजभर का बयान मीडिया में सामने आया है. उन्होंने कहा, दयाशंकर सिंह अपने लिए गठबंधन की सीट पक्की करने आए थे। वह सुभाष के टिकट पर चुनाव लड़ना चाहते हैं।

मायावती का बड़ा बयान

चुनाव की तारीखों की घोषणा कर दी गई है। उत्तर प्रदेश में सात चरणों में मतदान होना है. पहले चरण में 10 फरवरी को मतदान होना है। चुनाव कार्यक्रम जारी होते ही बहुजन समाज पार्टी प्रमुख मायावती का बड़ा बयान सामने आया। उन्होंने अपनी पार्टी के पदाधिकारियों, उम्मीदवारों और कार्यकर्ताओं से चुनाव के नियमों का पालन करने को कहा. ट्वीट किया, 'बसपा के सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं और उम्मीदवारों आदि को पार्टी अनुशासन के साथ-साथ आज से ही लागू आदर्श आचार संहिता का सख्ती से पालन करने का सख्त निर्देश दिया।

सामूहिक निकाह कराएगी अल्पसंख्यक विकास कमेटी: उसैद एडवोकेट

नूर मोहम्मद

मध्य प्रदेश अल्पसंख्यक विकास कमेटी के आवश्यक बैठक संपन्न हुई जिसमें समाज में हो रहे बुराइयों पर अंकुश लगाए जाने एवं समाज को शिक्षित करने हेतु व समाज के बालिग लड़कियों का सामूहिक निकाह कराने हेतु बृहद रूप से चर्चा किया गया, देवसर से आए हुए प्रतिनिधि सिंगरौली जिले के प्रभारी आबिद हुसैन अंसारी, ब्लॉक प्रभारी डॉ शमशेर अंसारी, एवं ब्लॉक अध्यक्ष महमूद अंसारी ने एकजुट होकर कहा कि समाज को शिक्षित करने के लिए हम लोग डॉ एपीजे अब्दुल कलाम इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल खोवा तहसील देवसर में खोलना चाहते हैं एवं स्कूल के संगे बुनियाद भोपाल मध्य विधायक एवं अल्पसंख्यक विकास कमेटी के संरक्षक आरिफ मसूद व मध्य प्रदेश अल्पसंख्यक विकास कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष शेख रियाजउद्दीन साहब एवं स्थानीय जनप्रतिनिधि व सामाजिक कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में हो प्रस्ताव रखा गया। सभी ने समर्थन किया उपस्थित रीवा संभाग अध्यक्ष अशरफ अली अंसारी जी ने कहा कि कोरोना को देखते हुए यदि जनजीवन सामान्य रहा तो निश्चित रूप से स्कूल का संगे बुनियाद विधायक आरिफ मसूद के हाथों करवाया जाएगा।

शिक्षा के क्षेत्र में हर संभव मदद कि जाएगा, इसी कड़ी में मध्य प्रदेश विधिक सलाहकार अधिवक्ता उसैद हसन सिद्दीकी ने कहा कि बहुत जल्द हर जिले में कमेटी के द्वारा सहयोग से सामूहिक निकाह कराया जाएगा, इसी कड़ी में उपस्थित वरिष्ठ अधिवक्ता अलाउद्दीन खान ने कहा कि समाज को जागरूक करने के लिए हम मुफ्त में विधिक सलाह देने हेतु तत्पर हैं।

भटिंडा एयरपोर्ट लौटने पर प्रधानमंत्री मोदी ने अधिकारियों से कहा

अपने मुख्यमंत्री को धन्यवाद कहना कि मैं जिंदा लौट पाया

भाजपा पूरी तरीके से मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी और पंजाब पुलिस पर हमलावर हो गई है। इन सब के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दिल्ली लौटने के लिए भटिंडा एयरपोर्ट पहुंचे।

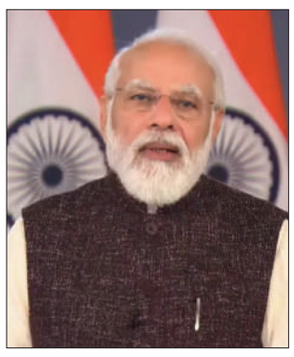

एजेंसी

चंडीगढ़। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पंजाब के फिरोजपुर में एक रैली करने वाले थे। हालांकि प्रधानमंत्री की सुरक्षा में हुई चूक के बाद इस रैली को रद्द कर दिया गया। प्रधानमंत्री का काफिला एक फ्लाईओवर पर लगभग 20 मिनट तक फंसा रहा। इसको लेकर गृह मंत्रालय ने पंजाब की सरकार से रिपोर्ट भी मांगी है। भाजपा पूरी तरीके से मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी और पंजाब पुलिस पर हमलावर हो गई है। इन सब के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दिल्ली लौटने के लिए भटिंडा एयरपोर्ट पहुंचे। एएनआई की रिपोर्ट के मुताबिक भटिंडा एयरपोर्ट पहुंचने पर वहां मौजूद अधिकारियों से प्रधानमंत्री ने कहा कि 'आप अपने सीएम को धन्यवाद कहना कि मैं भटिंडा एयरपोर्ट तक जिंदा लौट पाया।' भाजपा ने आरोप लगाया कि पंजाब की कांग्रेस सरकार ने प्रधानमंत्री की सुरक्षा को लेकर बड़ी साजिश की है। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने यह तक आरोप लगा दिया कि पंजाब के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने फोन तक नहीं उठाया। गृह मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पंजाब यात्रा के दौरान गंभीर सुरक्षा खामी के बाद उनके काफिले ने लौटने का फैसला किया। बयान में यह भी कहा गया कि मंत्रालय ने पंजाब सरकार से इस चूक के लिए जवाबदेही तय करने और कड़ी कार्रवाई करने के लिए कहा है। जिस वक्त यह घटना हुई, उस वक्त प्रधानमंत्री बठिंडा से हुसैनीवाला में राष्ट्रीय शहीद स्मारक की ओर जा रहे थे।

पीएम के रूट की जानकारी हुई थी लीक? किसान नेता ने किया यह दावा

किसान नेता ने दावा किया कि सरकार ने हमारी मांगों को लेकर हमें आश्वासन दिया था लेकिन अब तक उसे पूरा नहीं किया है। यही कारण है कि किसान अभी भी सरकार के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं

एजेंसी

फिरोजपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सुरक्षा में आज एक बड़ी चूक हुई थी। प्रधानमंत्री एक रैली को लेकर पंजाब के फिरोजपुर में गए थे जहां कुछ प्रदर्शनकारियों ने उनके काफिले को रोक दिया जिसकी वजह से प्रधानमंत्री का काफिला एक फ्लाईओवर पर लगभग 20 मिनट तक फस गया था। प्रधानमंत्री बिना रैली को संबोधित किए हुए ही दिल्ली वापस लौट आए। लेकिन सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर प्रधानमंत्री के रूट की जानकारी कैसे लीक हुई? इसको लेकर भारतीय किसान संघ क्रांतिकारी ने प्रधानमंत्री की सुरक्षा की खबर लीक होने की बात बात को स्वीकार किया है। बीकेयू नेता ने पुष्टि की कि पंजाब पुलिस ने उन्हें पीएम के रूट की जानकारी दी थी। किसान नेता ने इस बात को भी स्वीकार किया कि पुलिस वालों ने किसानों को मोदी के रैली स्थल से पहले ही रोक दिया था। 2:00 बजे के करीब पुलिस वालों ने ही बताया कि प्रधानमंत्री रोड के जरिए रैली स्थल पर जा रहे हैं। किसान नेता ने दावा किया कि सरकार ने हमारी मांगों को लेकर हमें आश्वासन दिया था लेकिन अब तक उसे पूरा नहीं किया है। यही कारण है कि किसान अभी भी सरकार के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं। चुनावी राज्य पंजाब के दौरे पर गए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सुरक्षा में बुधवार को उस वक्त ''गंभीर चूक'' की घटना हुई, जब फिरोजपुर में कुछ प्रदर्शनकारियों ने उस सड़क मार्ग को अवरुद्ध कर दिया जहां से उन्हें गुजरना था। इस घटना पर, केंद्रीय गृह मंत्रालय ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए पंजाब सरकार से इस चूक के लिए एक रिपोर्ट मांगी और इसके लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कठोर कार्रवाई को कहा।

भारत में 150 करोड़ के पार हुआ टीकाकरण का आंकड़ा

प्रधानमंत्री ने अपने एक ट्वीट में कहा कि भारत उन सभी का आभारी है जो हमारे टीकाकरण अभियान को सफल बनाने के लिए काम कर रहे हैं। हम अपने डॉक्टरों, वैज्ञानिकों, इनोवेटर्स और स्वास्थ्यकर्मियों को धन्यवाद देते हैं जो लोगों का टीकाकरण कर रहे हैं। मैं सभी पात्र लोगों से टीका लेने का आग्रह करता हूं। आइए मिलकर COVID-19 से लड़ें।

एजेंसी

नई दिल्ली। देश ने कोविड वैक्सीनेशन की दिशा के आज एक बड़ा लक्ष्य हासिल कर लिया है। शुक्रवार को कोविड-19 रोधी टीकों की 81 लाख से अधिक खुराक दी गयी और इसी के साथ देश में टीकाकरण का आंकड़ा 150 करोड़ को पार कर गया। इसको लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्वीट कर देशवासियों को बधाई दी है। प्रधानमंत्री ने लिखा कि टीकाकरण के मोर्चे पर एक उल्लेखनीय दिन! 150 करोड़ का मील का पत्थर पार करने पर हमारे देशवासियों को बधाई। हमारे टीकाकरण अभियान ने सुनिश्चित किया है कि कई लोगों की जान बची है। साथ ही, हम सभी को COVID-19 संबंधित प्रोटोकॉल का भी पालन करते रहना है। प्रधानमंत्री ने अपने एक ट्वीट में कहा कि भारत उन सभी का आभारी है जो हमारे टीकाकरण अभियान को सफल बनाने के लिए काम कर रहे हैं। हम अपने डॉक्टरों, वैज्ञानिकों, इनोवेटर्स और स्वास्थ्यकर्मियों को धन्यवाद देते हैं जो लोगों का टीकाकरण कर रहे हैं। मैं सभी पात्र लोगों से टीका लेने का आग्रह करता हूं। आइए मिलकर COVID-19 से लड़ें। कोविड टीके की 150 करोड़ खुराक का आंकड़ा पार करने पर शुक्रवार को केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया ने कहा कि यह ''ऐतिहासिक उपलब्धि'' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में स्वास्थ्यकर्मियों की अनवरत कड़ी मेहनत के कारण हासिल की जा सकी। स्वास्थ्य मंत्रालय के अधिकारियों के अनुसार 91 फीसद से अधिक वयस्क जनसंख्या को टीकों की कम से कम एक खुराक दी जा चुकी है जबकि66 फीसद आबादी का पूर्ण टीकाकरण हो गया है।

देश में 15-17आयु वर्ग के 22 फीसद किशोरों को कोविड-19 रोधी टीकों की पहली खुराक लग गयी है। इस आयुवर्ग के लाभार्थियों के लिए तीन जनवरी को कोविड-19 रोधी टीकाकरण शुरू किया गया था। मंत्रालय के आंकड़े के अनुसार टीकाकरण के तीसरे चरण की शुरुआत के बाद से अबतक राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों में 18-44 साल के उम्रवर्ग के 51,14,33,066 लाभार्थियों को पहली खुराक जबकि 34,80,27,006 लोगों को दूसरी खुराक दी गयी। सरकार का कहना है कि 15-17 साल के उम्रवर्ग के 1,99,64,801 किशोरों को कोविड-19 रोधी टीकों की पहली खुराक दे दी गयी है। मंत्रालय के अनुसार अबतक कोविड-19 रोधी टीकों की 87,80,31,738 लाभार्थियों को पहली खुराक और 62,71,89,576को दूसरी खुराक दी गयी। मंत्रालय ने कहा कि देश में सबसे अधिक जोखिम वाले समूहों को कोविड से बचाव के उपाय के तौर पर टीकाकरण अभियान की शीर्षतम स्तर पर लगातार नियमित रूप से समीक्षा एवं निगरानी की जाती है।

अब पंजाब के स्टेट आइकन नहीं हैं सोनू सूद, चुनाव आयोग ने रद्द की नियुक्ती

एजेंसी

नई दिल्ली। जब-जब लॉकडाउन का भारत में संकट गहराता हैं तब तक गरीबों का दुख-दर्द समझने वाले सोनू सूद का नाम चर्चा में आता हैं। प्रवासी मजदूरों के लिए मसीहा बने सोनू सूद पर्दे के नहीं असल जिंदगी के हीरो है। उन्होंने जो कुछ भी गरीबों के लिए लॉकडाउन की स्थिति में किया उनसे लिए प्रवासी लोग उन्हें रोज दुआएं देते हैं। सोनू सूद का नाम काफी दिनों से विवादों से जोड़ा जा रहा हैं लेकिन सोनू ने इस मुद्दों पर कभी खुल कर बात नहीं ही।

सोनू को कुछ बयानों को लेकर उन्हें कई राजनीतिक पार्टियों ने भी अपने साथ आने के लिए अप्रोच किया। सोनू को कई राजनेताओं के साथ मीटिंग करते हुए तो तस्वीरें आयी लेकिन किसी पार्टी में शामिल होने की खबरें नहीं आयी। अब ताजा जानकारी के अनुसार भारत के निर्वाचन आयोग ने अभिनेता सोनू सूद की पंजाब के ''राज्य प्रतीक' के तौर पर नियुक्ति रद्द कर दी है। राज्य के मुख्य निर्वाचन

अधिकारी एस करुणा राजू ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। वहीं, बॉलीवुड अभिनेता ने कहा कि उन्होंने स्वेच्छा से पद छोड़ दिया क्योंकि परिवार का एक सदस्य आगामी विधानसभा चुनाव लड़ रहा है। निर्वाचन आयोग (ईसीआई) ने करीब एक साल पहले सोनू सूद को पंजाब का 'आइकॉन' नियुक्त किया था। राजू ने एक आधिकारिक बयान में कहा कि भारत के निर्वाचन आयोग ने सूद की पंजाब के 'राज्य के प्रतीक' के तौर पर नियुक्ति को चार जनवरी को रद्द कर दिया है। उल्लेखनीय है कि अभिनेता और समाज सेवी सोनू सूद ने पिछले साल नवंबर में कहा था कि उनकी बहन मालविका राजनीति में आ रही हैं, लेकिन उनकी ऐसी कोई योजना नहीं है।

यूपी में आदर्श आचार संहिता लगते ही प्रशासन ने हटाने शुरू किए बैनर, पोस्टर व होर्डिंग

उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव की तारीख घोषित होने और आदर्श आचार संहिता लागू होने के साथ ही राज्य के सभी जिलों में इसका पालन कराने के लिए प्रशासनिक मशीनरी सक्रिय हो गई और शनिवार शाम से ही जगह-जगह लगे होर्डिंग-बैनर, पोस्टर हटाने के साथ ही दीवारों पर लिखे नारे मिटाने शुरू कर दिए।

एजेंसी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव की तारीख घोषित होने और आदर्श आचार संहिता लागू होने के साथ ही राज्य के सभी जिलों में इसका पालन कराने के लिए प्रशासनिक मशीनरी सक्रिय हो गई और शनिवार शाम से ही जगह-जगह लगे होर्डिंग-बैनर, पोस्टर हटाने के साथ ही दीवारों पर लिखे नारे मिटाने शुरू कर दिए। निर्वाचन आयोग ने शनिवार को उत्तर प्रदेश समेत पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव की तारीख तय करने के साथ ही आदर्श आचार संहिता लागू कर दिया। उत्तर प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी अजय कुमार शुक्ल ने रविवार को पीटीआई- को बताया,''राज्य में आदर्श आचार संहिता लागू हो गई है और उसका अक्षरशः पालन कराया जाएगा। उन्होंने कहा, ''सभी जिलाधिकारियों/ जिला निर्वाचन अधिकारियों को इसकी जिम्मेदारी दी गई है और वे अपनी नियमित रिपोर्ट भेजेंगे। आचार संहिता लागू होने के साथ ही राज्य के सभी जिलों में जिलाधिकारियों के निर्देश पर निकायों और अन्य प्रशासनिक इकाइयों ने बैनर, पोस्टर, होर्डिंग हटाने के साथ ही दीवारों पर लिखे नारे मिटाने शुरू कर दिए।'' उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश के 75 जिलों में 403 विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र हैं। राज्य में पुलिस, प्रशासन और निकाय के अधिकारियों ने आचार संहिता का पालन कराने के लिए मोर्चा संभाल लिया है और इसके लिए अब सभी विधानसभा क्षेत्रों में पर्यवेक्षकों की भी नियुक्ति होगी। चुनाव आयोग ने 15 जनवरी तक चुनावी रैली, रोड शो, पद यात्रा और साइकिल रैली पर भी रोक लगा दी है। पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों के साथ ही नगर निगम के आयुक्त को भेजे गये आदेश में कहा कि शनिवार को विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 की घोषणा के साथ ही तत्काल प्रभाव से आदर्श आचार संहिता लागू हो गई है।

बिहार में जेडीयू और आरजेडी के बीच पक रही सियासी खिचड़ी, तेजस्वी की ओर से नीतीश को दिया गया ऑफर

एजेंसी

पटना। सियासत के लिहाज से देखें तो बिहार अपने आप में हमेशा दिलचस्प प्रदेश रहा है। वैसे तो खरमास चल रहा है लेकिन बिहार के सियासी हलचल पर काफी तेज है। दरअसल, बिहार में यह सवाल खूब सुर्खियों में है कि क्या जदयू एक बार फिर से आरजेडी के साथ मिलकर सरकार बनाने जा रही है। यह सवाल ऐसे ही नहीं हो रहा है। आपको बता दें कि राजद के प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह की ओर से नीतीश कुमार को एक ऑफर दिया गया है। इतना ही नहीं, राजद ने अपने इस ऑफर के साथ यह भी दावा कर दिया कि खरमास बाद बिहार की सियासत में बड़ा भूचाल आ सकता है। इसी को लेकर अब तरह तरह के मायने निकाले जा रहे हैं। दरअसल पूरा का पूरा मामला जातिगत जनगणना को लेकर है। जातिगत जनगणना को लेकर जदयू और राजद एक साथ हैं। जातिगत जनगणना को लेकर एक प्रतिनिधिमंडल ने अगस्त में नीतीश कुमार के नेतृत्व में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की थी। उस प्रतिनिधिमंडल में तेजस्वी यादव भी थे। इसी कड़ी में अब राजद के प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह ने बड़ा बयान दे दिया है। जगदानंद सिंह ने तो यहां तक कह दिया कि अगर जातिगत जनगणना को लेकर भाजपा नीतीश कुमार का साथ छोड़ेगी तो राजद नीतीश कुमार का समर्थन करेगा। सिंह के इसी बयान को लेकर अब सियासी बवाल बिहार में जारी है। जगदानंद सिंह ने तो जातिगत जनगणना को लेकर बीजेपी पर हमला करते हुए कहा कि सरकार ने इस मसले को फिलहाल ठंडे बस्ते में डाल दिया है। राजद के इस ऑफर को जनता दल यू के संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा ने स्वागत किया है।

डोंगरगढ़ पहाड़ी में लगी आग, 10 दुकान जलकर खाक, लाखों का नुकसान

नोहार सिंह

डोंगरगढ़। छत्तीसगढ़ की पहाड़ा वाली मां के दरबार के करीब पहाड़ों पर सजी दुकानों में आगजनी की घटना हो गई है। बीती रात हुई आगजनी की इस वारदात में 10 दुकानों के पूरी तरह से जलकर खाक होने की जानकारी सामने आई है। गनीमत यह है कि इस दुर्घटना में कोई भी जनहानि की सूचना नहीं है। देररात लगी भीषण आग के बाद मां बम्लेश्वरी मंदिर के आसपास अफरा—तफरी मच गई थी, जिसके बाद तैनात सुरक्षा बल ने मोर्चा संभाला और आग बुझाने पर ध्यान केंद्रित किया। वहीं आसपास के लोगों को दूसरी तरफ भेजा गया। कड़ी मशक्कत के बाद आग पर नियंत्रण पा लिया गया है, लेकिन इस हादसे में 10 दुकान जलकर खाक हो गए हैं।

पंजाब में टिकट बंटवारे को लेकर आप में घमासान

राघव चड्ढा के सामने ही कार्यकर्ताओं ने काटा बवाल

एजेंसी

बताया जा रहा है कि पार्टी के कई कार्यकर्ता टिकट कटने से नाराज चल रहे हैं

पंजाब में विधानसभा के चुनाव होने है। आम आदमी पार्टी पूरी मजबूती के साथ चुनावी मैदान में उतरने की तैयारी कर रही है। हालांकि आम आदमी पार्टी को कई तरह की समस्याओं से जूझना भी पड़ रहा है। इसी कड़ी में आज पंजाब में पार्टी के साथ प्रभारी राघव चड्ढा जालंधर में एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। इसी समय पार्टी के कई कार्यकर्ताओं ने उन्हें घेर लिया। मिल रही जानकारी के मुताबिक राघव चड्ढा के सामने ही आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं के बीच धक्का-मुक्की हुई और एक दूसरे की पिटाई करते दिखाई दिए। सोशल मीडिया पर यह घटना तेजी से वायरल हो रही है। कहीं ना कहीं यह वीडियो आम आदमी पार्टी के लिए आगामी चुनाव में मुश्किलें खड़ी कर सकती हैं। बताया जा रहा है कि पार्टी के कई कार्यकर्ता टिकट कटने से नाराज चल रहे हैं। यही कारण है कि पार्टी के सह प्रभारी राघव चड्ढा के सामने ही उन लोगों ने हंगामा शुरू कर दिया। आम आदमी पार्टी के डॉक्टर शिव दयाल माली, डॉक्टर संजीव शर्मा और जोगिंदर पाल शर्मा के कई समर्थकों ने पार्टी नेताओं पर गंभीर आरोप भी लगा दिए है। इन नेताओं का यह भी आरोप है कि दूसरी पार्टी से शामिल हुए लोगों को टिकट दिया गया और इन लोगों को जमीन पर काम करने के बावजूद कुछ हासिल नहीं हुआ। राघव चड्ढा के सामने ही कई नेता पार्टी के खिलाफ नारेबाजी करते भी नजर आए। आपको बता दें कि आम आदमी पार्टी पंजाब चुनाव में पूरे दमखम के साथ उतरने जा रही है। आम आदमी पार्टी फिलहाल पंजाब में मुख्य विपक्षी पार्टी है। आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल लगातार राज्य का दौरा कर रहे हैं। मुफ्त में बिजली, पानी और पेंशन देने की भी घोषणा वह कर चुके हैं। चुनावी सर्वे में भी आम आदमी पार्टी को पंजाब में बड़ी बढ़त दिखाई जा रही है। देखना दिलचस्प होगा कि आम आदमी पार्टी पंजाब में कितनी सफलता हासिल कर पाती है। लेकिन यह बात भी निश्चित है कि इस तरह के बवाल होते रहे तो पार्टी को चुनाव में नुकसान भी झेलना पड़ सकता है।

संक्षिप्त समाचार

बरेली नगर में चल रहा रोको टोको अभियान रोको टोको अभियान पर हुई चालानी कार्रवाई

अंसार खान

कोविड-19 के बढ़ते हुए ओमीक्रॉन की तीसरी लहर से सतर्क कर रहे बरेली तहसीलदार संतोष बिटोलिया एवं पटवारी अमित श्रीवास्तव नगर परिषद अधिकारी सहित बाजार में दुकानदारों को एवं राहगीरों को मास्क लगाने की हिदायत दी गई। बिना मास्क के दुकानदारों एवं राहगीरों पर चालानी कार्रवाई कर 28 ₹100 रूपए की चालानी रसीद काटी गई। अधिकारियों को चालानी कार्रवाई करते देख राहगीरों एवं दुकानदारों में हड़कंप मच गया बरेली तहसीलदार संतोष बिटोलिया ने रोको-टोको अभियान की शुरुआत करते हुए दुकानदारों को सख्त हिदायत दी कि वह दुकान पर आने वाले ग्राहकों से मास्क लगाने का आग्रह करें और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करवाएं। इस कोरोना जैसी भयंकर महामारी से सुरक्षित रहने का आग्रह किया।

रायबरेली में थानेदार की गुंडागर्दी

हंसराज

जबरन महिलाओं को गाली देखकर खींचतान अभद्रता से पेश हुए इस तरह के पुलिसकर्मी को तुरंत सस्पेंड कर देना चाहिए, योगी सरकार महिलाओं को सुरक्षा देने की बात करती है यहां तो पुलिसकर्मी अभद्रता से बात कर रहे हैं। महिलाओं से थानेदार की गुंडई का वीडियो वायरल, गाली गलौज और अभद्रता का वीडियो वायरल हो गया हैं महिलाओं को भी पुलिसकर्मियों ने नहीं बख्शा भदोखर थाना क्षेत्र के थानेदार अध्यक्ष साहब से जनता परेशान हो चुकी हैं ए दिन इस तरह के मामले देखने को मिलते रहते हैं। जिस तरह योगी सरकार पुलिस प्रशासन को लेकर बड़े-बड़े दावे करती आ रही है मगर जब सोशल मीडिया पर इस तरह की वीडियो देखने को मिलती है तब योगी सरकार की पोल खुलती दिखती हैं।

10 किलोग्राम गांजा के साथ दो आरोपी पुलिस गिरफ्त में

एनसीआर समाचार

वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन मे अवैध मादक पदार्थों के क्रय, विक्रय एवं परिवहन पर अंकुश लगाने के लिये विशेष अभियान चलाया जा रहा है इस अभियान के तारतम्य मे वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन एवं एसीपी मिसरोद के निर्देशन मे थाना प्रभारी मिसरोद के नेतृत्व मे विशेष पुलिस टीम का गठन कर अवैध मादक पदार्थ तस्करों के विरूद्ध बड़ी कार्यवाही की गई। घटना का संक्षिप्त विवरण- दिनांक 06/01/2022 को थाना मिसरोंद पुलिस द्वारा 11 मील चौकी पर वाहन चेकिंग एवं वर्तमान मे बढ रहे एमीक्रोन वायरस के तहत थाना क्षेत्र मे लोगों को समझाइस एवं शासन के दिशा निर्देशों का पालन कराने हेतु तथा कोविड-19 महामारी के तहत बिना मास्क के वाहनो एवं राहगीरों को चेक कर रहे थे चेकिंग के दौरान रात्रि करीबन 19.05 बजे दो व्यक्ति रॉयल एनफिल्ड क्लासिक कंपनी की काले रंग की मोटर साइकिल जिस पर रजिस्ट्रेशन क्रमांक अंकित नही था से आते दिखे, जिन्हे पुलिस ने रोका तो वो पुलिस चेकिंग देखकर भागने का असफल प्रयास किया जिन्हे पुलिस ने हिकमतअमली से घेराबंदी कर पकड़ा और नाम पता पूछने पर वाहन चालक ने अपना नाम संजीव सौदागर तथा पीछे बैठे लड़के ने अपना नाम अजय केवट सर्व निवासी बंगाली कॉलोनी जिला होशंगाबाद का रहने बाले बताये तथा अजय के हांथ मे प्लास्टिक की बोरी के बारे मे पूछताछ करने पर बोरी मे मादक पदार्थ गांजा होना बताया । आरोपीगणों द्वारा अवैध मादक पदार्थ गांजा का परिवहन करना पाये जाने पर विधिवत धारा 8/21 एन.डी.पी.एस. एक्ट के तहत कार्यवाही कर 10 किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ गांजा मय रॉयल एनफील्ड गाड़ी के जप्त कर आरोपीगणों को गिरफ्तार कर पूछताछ की जा रही है

ऊर्जा मंत्री तोमर ने जिला चिकित्सालय गुना का किया निरीक्षण

एनसीआर समाचार

भोपाल । ऊर्जा मंत्री एवं प्रभारी मंत्री जिला गुना श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने शुक्रवार को कोरोना की संभावित तीसरी लहर से निपटने की गयी व्यवस्थाओं एवं तैयारियों का जिला चिकित्सालय गुना में जाकर निरीक्षण किया। श्री तोमर ने कोरोना की संभावित तीसरी लहर से निपटने सभी तैयारियाँ सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में कोरोना संक्रमण के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए सावधानी बरतना जरूरी है। जिला चिकित्सालय के निरीक्षण के दौरान मंत्री श्री तोमर ने कोविड वार्ड में जाकर ऑक्सीजनयुक्त बेड, ऑक्सीजन कंसन्ट्रेटर की उपब्धता की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि मरीजों को बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के साथ ही योजना का हर लाभ उन्हें दें। श्री तोमर ने बच्चों के वैक्सीनेशन के संबंध में भी जानकारी ली। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. हर्षवर्धन जैन ने बताया कि कोरोना के संभावित खतरे से बचाव की सभी तैयारियाँ कर ली गयी हैं।

महिला मतदाताओं को प्रोत्साहित करने की तैयारी, डिजिटल प्रचार पर दिया गया जोर

अजीम खान

नई दिल्ली। देश के पांच राज्यों में विधानसभा चुनावों का आयोजन होना है और इसी बीच कोरोना वायरस महामारी का संकट एक बार फिर गहराया है।

ऐसे में शनिवार को भारतीय निर्वाचन आयोग की ओर से एक प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया, जिसमें आयोग ने स्पष्ट किया कि पांचों राज्यों में चुनाव तय समय पर ही होंगे। इन राज्यों में उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, गोवा और मणिपुर हैं। इस दौरान मुख्य चुनाव आयुक्त सुशील चंद्रा ने बताया कि कोरोना महामारी और इस वायरस के नए व अधिक संक्रामक वैरिएंट ओमिक्रॉन के तेज प्रसार के बीच आयोग ने किस तरह चुनाव आयोजित करने की तैयारी की है। उन्होंने कहा कि महामारी के बीच

भारत निर्वाचन आयोग
Election Commission of India

चुनाव करवाना चुनौती है लेकिन यह हमारा कर्तव्य भी है। मुख्य निर्वाचन आयुक्त सुशील चंद्रा ने कहा कि कोरोना वायरस महामारी के बीच चुनाव आयोजित करवाना चुनौतीपूर्ण है लेकिन यह हमारा कर्तव्य है। इसके लिए नए नियम बनाए गए हैं और लगातार तैयारियां की जा रही हैं। पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव सात चरणों में होंगे। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव का पहला चरण 10 फरवरी को होगा। वहीं, 10 मार्च को सभी पांचों राज्यों के विधानसभा चुनावों की मतगणना की जाएगी। आयोग के अनुसार इस बार चुनाव तीन उद्देश्यों पर काम किया गया है। ये उद्देश्य कोविड मुक्त चुनाव, मतदाताओं की सुरक्षा व सहूलियत और मतदान में अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करना हैं। इन पांच राज्यों में कुल 18.34 करोड़ मतदाताओं को अपने मताधिकार का उपयोग करने का मौका मिलेगा। आयोग के अनुसार इस बार पांचों राज्यों में 24.9 लाख मतदाताओं को पहली बार वोट डालने का अवसर मिलेगा। आयोग ने बताया कि कुल मतदाताओं में महिलाओं की संख्या 8.55 करोड़ है। इनमें से 11.04 लाख महिलाएं पहली बार अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगी। आयोग के अनुसार महिला मतदाताओं की भागीदारी बढ़ी है। सुरक्षित चुनाव सुनिश्चित करने के लिए मतदान केंद्रों की संख्या बढ़ाई गई है। पांचों राज्यों में कुल दो लाख 15 हजार 368 केंद्र होंगे। हर केंद्र पर अधिकतम 1250 मतदाता ही रहेंगे। कोरोना से बचने के इंतजाम किए जाएंगे। हर विधानसभा क्षेत्र में कम से कम एक ऐसा मतदान केंद्र होगा जिसका संचालन महिला कर्मचारी ही करेंगी। यह फैसला महिला मतदाताओं को चुनावी प्रक्रिया में भाग लेने के प्रति उत्साहित करने के लिए लिया गया है।

भाजपा की जन विरोधी नीतियों से हर वर्ग दुखी: दिलबाग सिंह

आमिर अल्वी

यमुनानगर इंडियन नेशनल लोकदल पूर्व विधायक दिलबाग सिंह हमीदा वार्ड वाइज जॉन की ली मीटिंग में कार्यकर्ताओं को जागरूक किया तथा इनेलो की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने का आहवान किया गया। उन्होंने कार्यकर्ताओं का हालचाल जाना उन्होंने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा के कार्यकाल में हर वर्ग दुखी व परेशान है। भाजपा की जन विरोधी नीतियों से हर वर्ग परेशान में दुखी है। आज उद्योग व्यापार धंधे सभी चौपट हो गए प्लाईवुड फैक्ट्री बंद होने की कगार पर है कुछ बंद हो चुकी है। कर्मचारी वर्ग सड़कों पर सरकार के खिलाफ अपनी आवाज़ बुलंद किए हुए हैं।

उन्होंने कहा कि इनेलो सुप्रीमो ओम प्रकाश चौटाला के मुख्यमंत्री कार्यकाल में सुख भोग चुकी जनता आज इनेलो को फिर से सत्ता में लाने के लिए बेताब है सोच रही है कि कब चुनाव हो और कब भाजपा को दूर भगाने का काम करें। उन्होंने कार्यकर्ताओं से इनेलो की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए जनता के बीच जाने का आह्वान किया।

2 आरोपियों से 6 नकबजनी का करीब साढ़े 3 लाख रुपये का माल किया बरामद

एनसीआर समाचार

ईलाका भ्रमण के दौरान पद्मनाभ नगर पार्क के पास दो व्यक्ति संदिग्ध अवस्था मे खडे दिखाई दिये, जिनकी ओर पूछताछ हेतु आगे बढ़ने पर अपनी ओर पुलिस स्टाफ को आता देख हडवडा कर भागने की कोशिश करने लगे,जिन्हें घेरावंदी कर पकडा, जिसमें एक व्यक्ति के हाथ में प्लास्टिक का सफेद रंग का थैला था, जिन्हे पुलिस अभिरक्षा मे लेकर समक्ष साक्षीगण पूछताछ करने पर पहले व्यक्ति ने अपना नाम अफरोज उर्फ फिरोज उर्फ रईस पिता सलीम खान उम्र-29 साल नि. म.न.E-295 नंदन पुरा थाना छीपरी वाजार झाँसी उ.प्र. हाल नि. दादू अब्बू का मकान गोरियान मस्जिद के पीछे वरखेडी थाना जहाँ. वाद भोपाल एवं अजहर खान पिता लतीफ खान उम्र-19 साल नि. पुलिया न. 09

दादामियाँ मोहल्ला थाना प्रेम नगर झाँसी उ.प्र. हाल नि. दादू अब्बू का मकान गोरियान मस्जिद के पीछे वरखेडी थाना जहाँ. वाद भोपाल बताया। दोनों की जामा तलाशी लेने पर आरोपियों के पास से देशी पिस्टल एवं देशी कट्टा मिलने पर आरोपियों के विरूद्ध क्रमशः अपराध क्रमांक-005/2022, धारा 25/27 आर्म्स एक्ट व अपराध क्रमांक-006/2022, धारा 25/27 आर्म्स एक्ट का पंजीबद्ध किया गया। उपरोक्त आरोपियों से हिकमत अमली से पूछताछ करने पर आरोपियों द्वारा भोपाल के थाना ऐशबाग में 02 नकबजनी, थाना पिपलानी में 02 नकबजनी, कोहेफिजा में 01 नकबजनी एवं बागसेवनिया में 01 नकबजनी में कुल 06 नकबजनी करना कबूल किया । आरोपियों से नकबजनियों में गया मशरूका कीमती 3,50,000/- रूपये का बरामद करने में सफलता प्राप्त की। उपरोक्त अपराधियो की गिरफ्तारी में थाना ऐशबाग के एसएचओ मनीष राज सिंह भदौरिया , सउनि0 बाबूजी माथुर, कार्य प्रआर 38 लोकेन्द्र सिह , कार्य प्रआर 690 सलमान खान, कार्य प्रआर 2790 राजीव रघुवंशी कार्य प्रआर 549 सम्पूर्णानंद दुबे, आर 971 अजय शर्मा, आर 1413 यासिर खान, आर अखिलेश शर्मा, व आर 3593 कमलेश कुशवाहा की सराहनीय भूमिका रही ।

मंत्री तुलसीराम द्वारा कोरोना मरीजों के नि:शुल्क उपचार के लिये कदम उठाये

देवराम ठाकुर

इसके तहत सांवेर और मांगलिया में कोविड केयर सेंटर बनाये गये है। सांवेर के कोविड केयर सेंटर में सौ तथा मांगलिया के कोविड केयर सेंटर में 50 मरीजों को भर्ती करने की व्यवस्था रखी गई है। जल संसाधन मंत्री श्री सिलावट ने आज इन दोनों सेंटरों पर पहुंचकर व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

सिलावट ने बताया कि उक्त सेंटरों में कोरोना पॉजिटिव ऐसे मरीज जिनके घरों में पर्याप्त व्यवस्थाएं नहीं है, उन्हें भर्ती कर उनका निःशुल्क उपचार किया जायेगा। भर्ती मरीजों को वहीं दवाईयां दी जायेंगी। साथ ही उन्हें निःशुल्क चाय,पानी, नाश्ता और भोजन भी उपलब्ध कराया जायेगा। ऐसे मरीज जिनकी स्वास्थ्य अधिक खराब होने लगेगी, उन्हें दूसरे अस्पतालों में एम्बुलेंस के माध्यम से भेजकर भर्ती कराया जायेगा। कोविड केयर सेंटर में प्रशिक्षित डॉक्टर्स और नर्स भी रहेंगी। श्री सिलावट ने कोविड केयर सेंटर की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने इन सेंटरों पर मौजूद डॉक्टर्स और नर्स से चर्चा भी की। उन्होंने इनसे कहा कि सभी जरूरतमंद लोगों का पूरी संवेदनशीलता और मानवीयता के साथ इलाज किया जाये। इस अवसर पर पूर्व जनपद अध्यक्ष श्री भगवान परमार, श्री दिलीप चौधरी, एसडीएम श्री रवीश श्रीवास्तव सहित अन्य अधिकारी और स्थानीय जनप्रतिनिधिगण मौजूद थे।

ऊर्जा मंत्री ने गुना जिले में ओला प्रभावित फसलों का लिया जायजा

एनसीआर समाचार

भोपाल। ऊर्जा मंत्री तथा गुना जिला प्रभारी मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने राघौगढ़ तहसील के ग्राम गोविंदपुरा और नारायणपुर में ओला प्रभावित फसलों का अवलोकन किया। मंत्री श्री तोमर ने किसानों से भी चर्चा की। उन्होंने अधिकारियों को ओला प्रभावित फसलों का सर्वे कर किसानों को हरसंभव सहायता उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। ऊर्जा मंत्री मध्यप्रदेश शासन एवं प्रभारी मंत्री जिला गुना श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने ओलावृष्टि से प्रभावित क्षेत्रों का भ्रमण कर फसल नुकसान का निरीक्षण किया। मंत्री जिला गुना श्री तोमर ने विकास खण्ड राघौगढ़ के ग्राम रामनगर, नारायणपुरा, गोविंदपुरा सहित विभिन्न ग्रामों का दौरा कर ओलावृष्टि से

प्रभावित फसलों में हुए नुकसान का निरीक्षण किया। ओलावृष्टि एवं अतिवृष्टि से प्रभावित हुए ग्रामों का दौरा करते हुए मंत्री श्री तोमर ने सर्वसंबंधितों को निर्देश दिए कि जिन कृषकों की फसल में नुकसान हुआ है, उनका सर्वे शीघ्र-अतिशीघ्र किया जाये।

सारंग की अध्यक्षता में पैरामेडिकल काउंसिल की बैठक संपन्न

एनसीआर समाचार

भोपाल । चिकित्सा शिक्षा मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने कहा है कि प्रदेश में रोल मॉडल के रूप में चिकित्सा शिक्षा विभाग के अधीन पैरामेडिकल इंस्टीट्यूट की स्थापना की जाये। मंत्री श्री सारंग ने पैरामेडिकल शिक्षा प्रदेश में रोजगार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से परिषद द्वारा नये रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम शुरू करने के निर्देश दिये।

इसमें पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन हेल्थ केयर मैनेजमेन्ट, डिप्लोमा से फर्स्ट एड मैनेजमेन्ट एंड इमरजेंसी केयर कोर्स, पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन मेडिकल सेल्स रिप्रेजेंटेटिव और पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा हेल्थ इंश्योरेंस पाठ्यक्रम शामिल हैं। मंत्री श्री सारंग सह-चिकित्सीय परिषद भोपाल की साधारण सभा की 24वीं बैठक को

संबोधित कर रहे थे। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि परिषद द्वारा पहले से संचालित पाठ्यक्रमों एवं नये पाठ्यक्रमों का व्यापक प्रचार-प्रसार करने के लिये एक समिति का गठन किया जाये। समिति द्वारा पैरामेडिकल पाठ्यक्रमों का प्रचार-प्रसार किये जाये। इससे प्रदेश के दूरस्थ अंचलों में निवासरत ग्रामीणों में पैरामेडिकल पाठ्यक्रमों के प्रति जागरुकता आयेगी। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि वर्तमान बदलते परिदृश्य अनुसार यह आवश्यक है कि परिषद में संचालित कार्यों में आईटी का अधिकाधिक उपयोग हो। उन्होंने विभिन्न नवाचार करने के निर्देश दिये। इसके लिए परिषद में पीएमयू/नवाचार सेल की स्थापना की जाये। उन्होंने इसके लिये परिषद के आगामी बजट में प्रावधान करते हुए विभिन्न नवाचार गतिविधियों जैसे पेपरलेस कार्य, ई-गवर्नेंस का क्रियान्वयन, पारदर्शी कार्यालयीन व्यवस्था, पैरामेडिकल के क्षेत्र में नए कोर्स को शुरू करना, पैरामेडिकल में रोजगार के अवसर प्रदान करना एवं पैरामेडिकल से जुड़े नवीन विषयों पर समय-समय पर कॉन्फ्रेंस करने के निर्देश दिये। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि परिषद द्वारा लोक सेवा गारंटी अधिनियम में अधिसूचित सभी सेवाओं का समय-सीमा में प्रदाय किया जाये। मंत्री श्री सारंग ने छात्रों का पंजीयन उनके द्वारा उपलब्ध दस्तावेजों का प्रथमतः सत्यापन के ही किये जाने के निर्देश दिये। मंत्री श्री सारंग ने परिषद कार्यालय के उपयोगार्थ गृह निर्माण एवं अधो-संरचना विकास मण्डल संभाग क्रमांक-3, बागमुगालिया भोपाल में स्थित भूखण्ड पर विभाग के अधीन संचालित तीनों कौंसिलों के भव्य भवन निर्माण संबंधी कार्यवाही को अतिशीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिये।

ओमप्रकाश राजभर से नहीं हो रहा भाजपा का मोह भंग

एजेंसी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में चुनावी तारीखों का ऐलान हो चुका है। इसके साथ ही मान-मनौव्वल का भी दौर शुरू हो गया है। सभी दल अपने गठबंधन को भी मजबूत करने की कोशिश में है। इसी कड़ी में भाजपा एक बार फिर से ओमप्रकाश राजभर को अपने पाले में करने की कोशिश लगातार कर रही है। बताया जा रहा है कि उत्तर प्रदेश भाजपा के दिग्गज नेता दयाशंकर सिंह और ओमप्रकाश राजभर के बीच काफी बातचीत चल रही है। हाल में ही शनिवार को भी दोनों नेताओं के बीच लंबी बातचीत हुई है। माना जा रहा है कि भाजपा हर हाल में ओमप्रकाश राजभर को अपने खेमे में वापस लाना चाहती है। यही कारण है कि दयाशंकर सिंह बार-बार ओमप्रकाश राजभर से मुलाकात कर रहे हैं। सूत्रों के मुताबिक के पिछले 1

माना जा रहा है कि भाजपा हर हाल में ओमप्रकाश राजभर को अपने खेमे में वापस लाना चाहती है। यही कारण है कि दयाशंकर सिंह बार-बार ओमप्रकाश राजभर से मुलाकात कर रहे हैं। सूत्रों के मुताबिक के पिछले 1 महीने में दोनों नेताओं के तीन बार मुलाकात हो चुकी है।

महीने में दोनों नेताओं के तीन बार मुलाकात हो चुकी है। ओमप्रकाश राजभर की ओर से लगातार भाजपा में लौटने की खबरों को खारिज की जा रही है। दयाशंकर सिंह से मुलाकात को लेकर ओमप्रकाश राजभर के बेटे अरुण राजभर ने दावा किया कि वह अपने लिए गठबंधन में सीट पक्की करने आए थे। इसके साथ ही राजभर के बेटे ने यह भी कहा कि दयाशंकर सिंह सुभासपा यानी कि राजभर की पार्टी से चुनाव लड़ना चाहते है। दूसरी ओर सूत्र यह बता रहे हैं कि भले ही ओमप्रकाश राजभर की ओर से कुछ भी कहा जाए लेकिन यह बात सच है कि भाजपा अब भी उन्हें मनाने की कोशिश कर रही है। हालांकि ऐसा लग रहा है कि पेंच अब सीटों को लेकर ज्यादा फंस सकता है। ओमप्रकाश राजभर लगातार भाजपा को इस बात का एहसास दिला रहे हैं कि अखिलेश यादव उन्हें 2 दर्जन से भी ज्यादा सीटें दे रहे हैं। आपको बता दें कि 2017 के विधानसभा चुनाव में ओमप्रकाश राजभर भाजपा के साथ चुनावी मैदान में उतरे थे। पूर्वांचल में राजभर की अच्छी पकड़ है। ओमप्रकाश राजभर को योगी सरकार में मंत्री भी बनाया गया था। माना जा रहा है कि ओमप्रकाश राजभर की नाराजगी की वजह से पूर्वांचल में भाजपा को बहुत बड़ा नुकसान भी हो सकता है।

समाजवादी संदेश यात्रा का आयोजन

सर्जन कश्यप

मोहम्मदाबाद। समाजवादी पार्टी के निर्देश पर एक समाजवादी संदेश साइकिल यात्रा का आयोजन किया गया । साइकिल यात्रा जनपद फर्रुखाबाद की सीमा काली नदी बेवर रोड पुल से प्रारंभ होकर मोहम्मदाबाद तक आयोजित की गई। कार्यक्रम में समाजवादी पार्टी के कर्मठ,उत्साही कार्यकर्ताओं ने साइकिल एवं मोटरसाइकिल यात्रा के माध्यम से जन जन तक पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव जी के संदेश को पहुंचाने का काम किया। हजारों कार्यकर्ताओं की लंबी साइकिल- मोटर साइकिल यात्रा के मुख्य अतिथि डॉक्टर सुबोध यादव पूर्व ब्लाक प्रमुख राजेपुर रहे। यात्रा का आयोजन जिला पंचायत सदस्य आलोक यादव,नगर पंचायत अध्यक्ष हरीश यादव, पूर्व प्रत्याशी अरशद जमाल सिद्दीकी, जिला पंचायत सदस्य कुलदीप पाल, जितेंद्र कटियार उर्फ रिंकू, बंटू नगर विधानसभा अध्यक्ष भोजपुर ,अमित यादव, अमृतपुर विधानसभा अध्यक्ष भोला यादव, नगर अध्यक्ष मोहम्मदाबाद मनोज यादव, पूर्व जिला पंचायत सदस्य उमेश यादव, समाजवादी अनुसूचित समाजवादी अनुसूचित जनजाति प्रकोष्ठ आनंद गीहार समाजवादी छात्र सभा के जिला अध्यक्ष अनिल पाल के नेतृत्व में संपन्न हुआ।

संक्षिप्त समाचार

मनचले ने एक इंटर कॉलेज की छात्रा को छेड़ा, छात्र ने की शिकायत तो दबंगो ने बनाया दबाब

एनसीआर समाचार

सहसवान कोतवाली क्षेत्र के एक ग्राम के युवक ने एक इंटर कॉलेज की छात्रा को सरे रहा की छेड़खानी। कोतवाली पुलिस को पीड़ित छात्रा ने दी तहरीर, बताते चलें छात्रा ने तहरीर में बताया है कि उसके घर के सामने रहने वाले युवक ने छात्रा को एक महीने से छेड़खानी एवं अश्लीलता बातें कर उसका अश्लील फोटो बनाकर उसे बदनाम करने के लिए दबाव बनाया कि तुम मुझसे मिल अन्यथा तेरी पढ़ाई छूट जाएगी। छात्रा काफी डरी सहमी थी इसकी जानकारी उसने अपने परिवार वालों को नहीं दी लेकिन पीड़ित छात्रा ने कल कोतवाली पुलिस को तहरीर दे दी जिसकी जांच सब इंस्पेक्टर सरिता रानी द्वारा की जा रही थी, लेकिन बीती रात्रि 10:30 बजे के करीब दबंग युवक के परिवार जन पीड़िता के घर आ धमके और फैसले का दबाव बनाने लगे जब इसकी जानकारी उसके परिवार जन को हुई तो उन्होंने आज फिर कोतवाली पुलिस का दरवाजा खटखटाया।

सरकार बिना किसी भेदभाव के हर योजनाओ को धरातल पर उतार रही है

रंजीत कुमार चौरसिया

विधानसभा टाण्डा में सबसे व्यस्त अंत्येष्टि स्थल महादेव घाट जिसपर विगत वर्ष बाढ़ के दौरान कटान को रोकने के लिये ठोकर और लोगो के आवागमन की सुविधा हेतु सीढियां बनवाने का काम टाण्डा विधायक संजूदेवी के द्वारा सरकार के संज्ञान में लाकर हुआ था। वहीं इस वर्ष टाण्डा हंसवर मार्ग से घाट की तरफ से जाने वाले मार्ग पर देश के लिए सीआरपीएफ के जवान के रूप में सेवा देते टाण्डा विधानसभा के चंदौली निवासी रक्षाराम पाठक 2005 में कश्मीर के कुमावल में आतंकियों द्वारा आरडीएक्स हमले में शहीद हुए थे उनके सम्मान में रक्षा राम पाठक द्वारा का 110000 रुपये की लागत से चल रहे निर्माण कार्य का आज टाण्डा विधायक प्रतिनिधि श्याम बाबू के द्वारा उपयोग में आने वाले सामग्री की गुणवत्ता परखी देखी व काम मे शीघ्रता लाने का निर्देश दिया गया। उन्होंने कहा कि भाजपा सदैव देश हित मे काम कर शहीदों का सम्मान करती है। और यही कारण है कि सर्व समाज का भाजपा के प्रति विश्वास बढ़ा है। और वहीं हर व्यक्ति को लग रहा है कि देश व प्रदेश का उत्थान भाजपा के ही सकारात्मक नीतियों से हो सकता है! वहीं श्याम बाबू के साथ भाजपा टाण्डा नगर महामंत्री राकेश गौड़, विश्व हिंदू परिषद के नगर अध्यक्ष दीपक उपाध्याय, निशु अग्रहरि उपस्थित रहे।

सुजालपुर तहसील के कृषि मंडी में किसानों से अभद्र टिप्पणी की गई

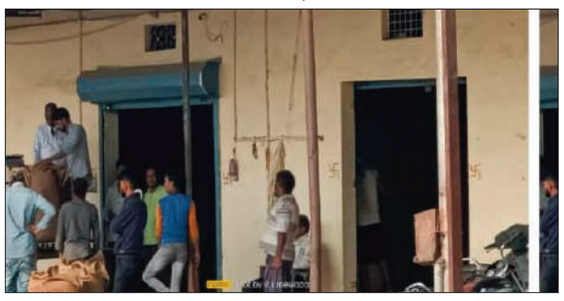

राजेश मेवाड़ा

एमपी के शाजापुर जिले की सुजालपुर तहसील कृषि उपज मंडी में किसानों से अभद्र व्यवहार करते हुए रुचि सोया नाम से लाइसेंस है इस लाइसेंस को निरस्त किया जाए और यहां माननीय श्री इंदर सिंह जी परमार जी से निवेदन करते हैं कि किसानों के बारे में सोचें। यहां के अध्यक्ष महोदय से भी निवेदन करते हैं कि थोड़ा सा मंडी कमेटी इस पर ध्यान दें।

सबके लिए आवास मुहैया कराने को राज्य सरकार संकल्पित: लोक निर्माण मंत्री

एनसीआर समाचार

सबके लिए आवास योजना से वर्ष 2022 तक प्रत्येक जरूरतमंद को पक्का आवास मुहैया कराने के लिये राज्य सरकार कृत-संकल्पित है। यह बात लोक निर्माण, कुटीर एवं ग्रामोद्योग मंत्री श्री गोपाल भार्गव ने सागर जिले के रेहली में नगर पंचायत क्षेत्र में आवास योजना के हितग्राहियों को प्रथम किश्त वितरण कार्यक्रम में कही। कार्यक्रम में 1285 हितग्राहियों, प्रत्येक को एक लाख रुपये के मान से 12 करोड़ 85 लाख रुपये के चेक वितरित किये गये। लोक निर्माण मंत्री श्री भार्गव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2022 के अंत तक देश के प्रत्येक आवास-विहीन परिवार को स्वयं का आवास मुहैया कराने का लक्ष्य निर्धारित किया है। मध्यप्रदेश सरकार लक्ष्य की प्राप्ति के लिये प्रयासरत है। उन्होंने जिन हितग्राहियों को आवास राशि के चेक वितरित किये हैं, उन्हें बधाई दी और कहा कि समय-सीमा में आवास का काम पूरा करें, इससे द्वितीय किश्त की राशि भी प्रदान की जा सके।

होम्योपैथी छात्रों को रोजगार के पर्याप्त अवसर मिले, इसके लिये काउंसलिंग की व्यवस्था हो

एनसीआर समाचार

आयुष राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री रामकिशोर (नानो) कावरे ने अधिकारियों को निर्देश दिये हैं कि प्रदेश में पढ़ने वाले होम्योपैथी छात्रों को रोजगार के पर्याप्त अवसर मिलें। इसके लिये उनकी काउंसलिंग की पर्याप्त व्यवस्था की जाए। उन्होंने यह भी कहा कि छात्रों को जिन जगहों पर रोजगार मिला है, उनका डाटा भी तैयार किया जाये। राज्य मंत्री श्री कावरे भोपाल में शासकीय स्वशासी होम्योपैथी चिकित्सा महाविद्यालय एवं चिकित्सालय की सामान्य सभा की बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में प्रमुख सचिव श्रीमती करलिन खोंगवार देशमुख भी मौजूद थीं।

राज्य मंत्री श्री कावरे ने कहा कि होम्योपैथी के क्षेत्र में नवाचार को प्रोत्साहित किया जाये। उन्होंने अधिकारियों को भोपाल आयुष परिसर में रजिस्ट्रार कार्यालय भवन के लिये 3 हजार वर्ग फीट भूमि आवंटित किये जाने के भी निर्देश दिये। राज्य मंत्री श्री कावरे ने होम्योपैथी महाविद्यालय में संचालित केंटीन की जाँच करने के भी निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि प्रदेश में होम्योपैथी अस्पतालों में काम करने वाले संविदा कर्मचारियों को समय पर वेतन मिले, यह सुनिश्चित किया जाए। साथ ही श्री कावरे ने कहा कि शैक्षणिक स्टॉफ समय पर महाविद्यालय पहुँचे, इसकी सतत निगरानी की जाये। राज्य मंत्री श्री कावरे ने होम्योपैथी महाविद्यालय में जल्द ही म्यूजिक थैरेपी शुरू किये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि कोरोना काल में हॉस्टल बंद रहने के कारण छात्रों की फीस माफ करने का प्रस्ताव शासन को यथाशीघ्र भेजा जाये। बैठक में बताया गया कि होम्योपैथी महाविद्यालय भोपाल में 7 विषयों में पीएचडी की शुरूआत की जायेगी। छात्र पीएचडी आयुर्विज्ञान जबलपुर के मार्गदर्शन में करेंगे। राज्य मंत्री श्री कावरे ने अधिकारियों को होम्योपैथी चिकित्सालय में दवाइयों की नियमित व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिये नवाचार के तौर पर फॉर्मेसी मेन्युफेक्चरिंग यूनिट लगाये जाने का प्रस्ताव तैयार किये जाने के लिये कहा। बैठक में बताया गया कि भोपाल के शासकीय होम्योपैथी महाविद्यालय में बीएचएमएस की 125 सीट, एमडी की 69, फैलोशिप की 90 और होम्योपैथी डिप्लोमा की 130 सीट हैं।

महाविद्यालय में नव-निर्मित सभाकक्ष का लोकार्पण

राज्य मंत्री श्री कावरे ने आज होम्योपैथी स्वशासी महाविद्यालय परिसर में 50 लाख रुपये की लागत से तैयार आधुनिक सभाकक्ष का लोकार्पण किया। इस सभाकक्ष में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की व्यवस्था भी रहेगी।

डायल 100 गाड़ियों की संख्या 1 हजार तक बढ़ाने की तैयारी

एनसीआर समाचार

इसके अलावा इन्हें पहले की अपेक्षा और हाइटेक बनाया जा रहा है दरअसल राज्य सरकार द्वारा 'डायल 100 कंट्रोल' को मंजूरी दिए जाने के बाद अब इसके टेंडर की तैयारियां की जा रही है. डायल 100 के दूसरे फेज में प्रदेश में एफआरवी वाहनों की संख्या 2000 हजार तक की जाएगी. फिलहाल प्रदेश में 1 हजार एफआरवी गाड़ियां चल रही है. पुलिस अधिकारियों के मुताबिक, डायल 100 वाहनों में डैश बोर्ड और बॉडी वॉर्न कैमरे भी लगाए जाएंगे इसकी मदद से कंट्रोल रूम में बैठे-बैठे निगरानी होगी.

भोपाल के डायल 100 गाड़ियों को पहले के मुकाबले ज्यादा हाईटेक किया जा रहा है. इसके अलावा यहां कॉल करने वालों की पहचान को गोपनीय बनाए रखने के लिए इसमें कॉल मास्किंग शुरू की जा रही है. इसमें कॉल कर घटना की सूचना देने वाले की पहचान को गोपनीय बनाए रखने के लिए एफआरवी स्टॉफ के पास कॉलर के नंबर के स्थान पर वर्चुअल नंबर ही पहुंचेगा. वहीं एफआरवी वाहन में तैनात रहने वाले पुलिसकर्मियों के कंधे पर बॉडी वार्न कैमरा भी लगाया जाएगा, ऐसे में कार्रवाई के दौरान पूरी रिकॉर्डिंग होगी और इससे पारदर्शिता आएगी और पुलिसकर्मियों को भ्रष्टाचार के झूठे आरोपों से भी बचाया जा सकेगा। डायल 100 के दूसरे चरण के तहत एफआरवी यानी फर्स्ट रिस्पांस व्हीकल वाहनों की संख्या को 2 हजार तक किया जा जाएगा. प्रदेश में अभी ऐसे वाहनों की संख्या 1 हजार है. गृह विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा के मुताबिक, प्रदेश में कंडम हो चुके वाहनों को भी रिप्लेस किया जाएगा. इससे रिस्पांस टाइम कम होगा।

एआर रहमान ने मुफलिसी में काटा था बचपन इस घटना के बाद बन गए थे मुसलमान

एजेंसी

एआर रहमान का जन्म 6 जनवरी 1966 को तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में हुआ था। उनका पूरा नाम अल्लाह रक्खा रहमान है। हालांकि उनका असली नाम 'दिलीप कुमार' था जो कि उन्हें पसंद नहीं था। एआर रहमान (AR Rahman) आज अपना 55वां बर्थडे मना रहे हैं। अपने संगीत से लोगों के दिलों में बस जाने वाले रहमान को संगीत अपने पिता से विरासत में मिला है।

उनके पिता भी संगीतकार थे। अपनी रचनाओं से रहमान ने ना सिर्फ देश में बल्कि दुनिया में भी नाम कमाया और तिरंगे का मान बढ़ाया है। ऑस्कर विनर संगीतकार के बर्थडे के मौके पर हम आपको उनसे जुड़ी कुछ दिलचस्प जानकारियां देने जा रहे हैं, जिनके बारे में कम ही लोग जानते हैं। रहमान जब 9 साल के थे तभी उनके पिता का निधन हो गया था। उस समय स्कूल में पढ़ रहे रहमान को परिवार की मदद करने के लिए काम करना पड़ा, जिसकी वजह से वो एग्जाम में भी फेल होने लगे। गरीबी कुछ ऐसी कि पैसों के लिए घरवालों को वाद्ययंत्र तक बेचने पड़े थे।15 वर्ष की उम्र में रहमान को कम उपस्थिति के कारण स्कूल छोड़ना पड़ा था। अपने हुनर को उन्होंने अपना हथियार बनाया और आज दुनिया के तमाम बड़े संगीत स्कूलों में रहमान को पढ़ाया जाता है।

देश में ओमीक्रोन के एक दिन में सर्वाधिक 495 नए मामले

एनसीआर समाचार

भारत में बृहस्पतिवार को कोरोना वायरस के नए स्वरूप 'ओमीक्रोन' के एक दिन में सर्वाधिक 495 नए मामले सामने आए, जिससे इस स्वरूप से संक्रमण के मामलों की संख्या बढ़कर 2,630 हो गयी है। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकडों में यह जानकारी दी गयी। ओमीक्रोन स्वरूप के कुल मामलों में से महाराष्ट्र में सबसे अधिक 797 मामले सामने आए, इसके बाद दिल्ली में 465, राजस्थान में 236, केरल में 234, कर्नाटक में 226, गुजरात में 204 और तमिलनाडु में 121 मामले सामने आए। मंत्रालय की ओर से सुबह आठ बजे जारी किए गए अद्यतन आंकड़ों के अनुसार भारत में एक दिन में कोविड-19 के 90,928 नए मामले सामने आने के बाद देश में संक्रमितों की संख्या बढ़कर 3,51,09,286 हो गई है। करीब दो सौ दिन बाद सामने आए ये सर्वाधिक मामले हैं। इससे पहले, पिछले वर्ष 10 जून को संक्रमण के 91,702 मामले सामने आए थे। मंत्रालय ने बताया कि देश में 325 और संक्रमितों की मौत के बाद मृतक संख्या बढ़कर 4,82,876 हो गई है। वहीं, उपचाराधीन मरीजों की संख्या 2,85,401 हो गयी है,जो संक्रमण के कुल मामलों का 0.81 प्रतिशत है। उपचाराधीन मरीजों की संख्या में एक दिन में 71,397 की वृद्धि हुई है। मंत्रालय ने कहा कि कोविड-19 से ठीक होने की राष्ट्रीय दर घटकर 97.81 प्रतिशत हो गयी है। दैनिक संक्रमण दर 6.43 प्रतिशत वहीं साप्ताहिक संक्रमण दर 3.47 प्रतिशत है। संक्रमणमुक्त हुए लोगों की संख्या बढ़कर 3,43,41,009 हो गयी है। देश में अभी तक संक्रमण रोधी टीके की 148.67 करोड़ से अधिक खुराकें दी जा चुकी हैं। देश में पिछले साल सात अगस्त को संक्रमितों की संख्या 20 लाख, 23 अगस्त को 30 लाख और पांच सितंबर को 40 लाख से अधिक हो गई थी। वहीं, संक्रमण के कुल मामले 16 सितंबर को 50 लाख, 28 सितंबर को 60 लाख, 11 अक्टूबर को 70 लाख, 29 अक्टूबर को 80 लाख और 20 नवंबर को 90 लाख के पार चले गए थे। देश में 19 दिसंबर को ये मामले एक करोड़ के पार, इस साल चार मई को दो करोड़ के पार और 23 जून को तीन करोड़ के पार चले गए थे। मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, देश में पिछले 24 घंटे में संक्रमण से मौत के जो 325 नए मामले सामने आए हैं, उनमें से 258 मामले केरल से और 17 मामले पश्चिम बंगाल से हैं। मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, देश में संक्रमण से अभी तक कुल 4,82,876 लोगों की मौत हुई है, जिनमें से महाराष्ट्र के 1,41,581 लोग ,केरल के 48,895 लोग, कर्नाटक के 38,357 लोग, तमिलनाडु के 36,814 लोग , दिल्ली के 25,121 लोग , उत्तर प्रदेश के 22,916 लोग और पश्चिम बंगाल के 19,827 लोग थे। स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि अभी तक जिन लोगों की कोरोना वायरस संक्रमण से मौत हुई है।

जरूरतमंद की सहायता परम धरमः राज्यपाल पटेल

एनसीआर समाचार

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि जरूरतमंद की समय पर सहायता परम-धरम है। उन्होंने कहा कि कर्त्तव्य की जानकारी अधिकांश को होती है, जरूरी है कि आचरण में कर्त्तव्य का पालन हो। उन्होंने कहा कि मातृ-भूमि की सेवा में मृत्यु और सारे जीवन के संघर्ष को सहर्ष स्वीकार करने वाले शहीदों, वीरों और उनके आश्रितों की सेवा और संरक्षण समाज की जिम्मेदारी है। राज्यपाल श्री पटेल राजभवन में समामेलित विशेष निधि की 21वीं वार्षिक बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में सर्वसम्मति से भूतपूर्व सैनिकों और सैनिक आश्रितों को मिलने वाली आर्थिक सहायता एवं छात्रवृत्ति की विभिन्न योजनाओं की अधिकतम राशि में इस वित्तीय वर्ष से वृद्धि का निर्णय लिया गया। वृद्धि सैनिक कल्याण बोर्ड द्वारा गठित समिति की अनुशंसा के आधार पर की जाएगी। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि शहीदों, वीर सैनिकों और उनके आश्रितों की जरूरतों के समय सहयोग करना सैनिक कल्याण बोर्ड का मूल दायित्व है। बोर्ड द्वारा संचालित योजनाओं से भूतपूर्व सैनिकों और शहीदों के आश्रितों को लाभान्वित करने के प्रयासों पर विशेष ध्यान दिया जाए। उन्होंने कहा कि प्रकृति द्वारा निर्मित सभी जीव-जंतुओं में केवल मानव ही है जो पिछड़े, वंचितों की मदद कर सकता है। उन्होंने कहा कि कार्य करने के परिणाम कार्य की भावना पर निर्भर करते हैं। संवेदनशीलता के साथ किया गया कार्य ही आत्म-संतोष देता है। उन्होंने आशा व्यक्त की है कि बोर्ड द्वारा निरंतर सैनिक कल्याण कार्यों को और अधिक बेहतर बनाते हुए उनका मॉडल प्रस्तुत करेगा। अपर मुख्य सचिव सामान्य प्रशासन श्री विनोद कुमार, अपर मुख्य सचिव गृह डॉ. राजेश राजोरा, सेना के मध्य भारत एरिया के जनरल ऑफिसर कमांडिंग लेफ्टिनेंट जनरल श्री एस. मोहन, सचिव वित्त श्री अजीत कुमार, भूतपूर्व सैन्य अधिकारी केंद्रीय सैनिक बोर्ड द्वारा नामित मेजर जनरल सेवा निवृत्त पी.एन. त्रिपाठी, सेवा निवृत्त कैप्टन भारतीय नोसेना सतीश यादव, संचालक सैनिक कल्याण बोर्ड सेवा निवृत्त ब्रिगेडियर अरुण सहगल सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे। राज्यपाल श्री पटेल ने 1 लाख रुपये से अधिक के दानदाताओं क्षेत्रीय प्रबंधक सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया सागर श्री एस.के. सिन्हा, वीर माता श्रीमती निर्मला शर्मा, श्रीमती रीता मित्रा, प्रोडक्ट मैनेजर टोलवेज प्रायवेट लिमिटेड नरसिंहपुर श्री हरप्रीत सिंह, बद्रिका मोटर्स श्री सुनील सिंह, सेवा निवृत्त कर्नल जनरल मैनेजर जे.पी. थर्मल पॉवर प्लांट बीना सी.एल. फोतेदार, सेवा निवृत्त प्रबंधक भारत ओमान रिफाइनरी बीना मेजर प्रशांत रघुवंशी, अध्यक्ष मध्यप्रदेश भूतपूर्व सैनिक कल्याण समिति को प्रशस्ति-पत्र, स्मृति प्रतीक से सम्मानित किया।

मंत्री सारंग ने डेडीकेटेड काटजू हॉस्पिटल का निरीक्षण किया

एनसीआर समाचार

चिकित्सा शिक्षा मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने भोपाल में डेडीकेटेड कोविड हॉस्पिटल काटजू का निरीक्षण किया। उन्होंने निरीक्षण के दौरान स्वास्थ्य अधिकारी, डॉक्टर्स और अन्य स्टाफ से चर्चा की और आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। मंत्री श्री सारंग ने बताया कि प्रदेश में कोविड-19 के मद्देनजर आवश्यक तैयारियाँ की गई हैं। लगभग 32 हजार बिस्तर गवर्मेंट सेक्टर में और 25 हजार बिस्तर प्राइवेट सेक्टर में कोविड मरीजों के लिये रिजर्व किये गये हैं। लगभग 60 से 65 हजार बिस्तरों की तैयारी है। श्री सारंग ने कहा कि चिंता का विषय है कि कोविड के केसेज लगातार बढ़ रहे हैं, लेकिन इसमें हॉस्पिटलाइजेशन कम है। राज्य सरकार ने कोविड के उपचार के लिये हर संभव प्रयास किये हैं। लोगों को कोरोना प्रोटोकॉल का ध्यान रखकर कार्य करना होगा। मास्क लगाकर अपने आप को सुरक्षित करें, वैक्सीन जरूर लगवाएँ। प्रदेश में 15 से 18 साल के बच्चों के वैक्सीनेशन में लगातार वृद्धि हो रही है। साथ ही 60 वर्ष की उम्र के ऊपर वालों के लिये 10 जनवरी से प्रिकॉशन डोज लगाने की तैयारी भी पूर्ण कर ली गई है। काटजू अस्पताल में 200 बिस्तरों की व्यवस्था रखी गई है। अभी केवल 5 मरीज भर्ती हैं। उनकी तबियत ठीक है, केवल प्रिकॉशन के तौर पर उन्हें भर्ती कराया गया है।

आयुष्मान कार्डधारकों के निःशुल्क इलाज के लिए 56 निजी चिकित्सालयों को जोड़ा गया

एनसीआर समाचार

आयुष्मान से जुड़े अस्पताल संचालकों को निर्देश दिये गये है कि वे कार्डधारियों का पूरी तरह से निशुल्क इलाक करें। उनसे किसी तरह की राशि नहीं लें। शुरूआत में इन अस्पतालों के 30 प्रतिशत बिस्तरों को कार्डधारियों के लिये आरक्षित किया गया है। आवश्यकता के अनुसार इसे और भी बढ़ाया जायेगा। इसके साथ ही 13 शासकीय अस्पतालों में भी आयुष्मान कार्डधारियों का निशुल्क इलाज होगा। यह जानकारी आज यहां आयुष्मान योजना से जुड़े अस्पतालों में नियुक्त प्रभारियों एवं आयुष्मान मित्रों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में दी गई। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में अपर कलेक्टर श्री अजयदेव शर्मा तथा श्री अभय बेडेकर विशेष रूप से मौजूद थे। आयुष्मान भारत निरामयम अंतर्गत मुख्यमंत्री कोविड 19 उपचार की प्रक्रिया की जानकारी दी गई। मुख्यमंत्री कोविड उपचार योजना के तहत आर्थिक रूप से कमजोर मरीजों का कोरोना का पूर्णतः निःशुल्क उपचार कराना राज्य शासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इस योजना का संवेदनशीलता तथा प्रभावी क्रियान्वयन के लिये कलेक्टर श्री मनीष सिंह के निर्देशन में इंदौर जिले में विशेष प्रयास किये जा रहे हैं। इसी के तहत आर्थिक रूप से कमजोर ऐसे मरीज जिनके पास आयुष्मान के कार्ड हैं, उनके निःशुल्क इलाज के लिये जिले के 56 अशासकीय अस्पतालों को आयुष्मान योजना से जोड़ा गया है। इन अस्पतालों में मरीजों का कोरोना संबंधी पूरी तरह निःशुल्क उपचार सुनिश्चित किया जायेगा। आयुष्मान योजना के क्रियान्वयन के संबंध में विस्तार से जानकारी दी गई। निर्देश दिये गये कि कोई भी अस्पताल आयुष्मान योजना के कार्डधारियों से किसी भी तरह की राशि नहीं लें। उनका पूरी तरह निःशुल्क उपचार करें। कोरोना मरीज आते ही उन्हें तत्काल एडमिट करें। अस्पताल में भर्ती करने से उन्हें मना नहीं किया जाये। संदिग्ध मरीज जिनकी रिपोर्ट पॉजीटिव नहीं आयी है और उन्हें गंभीर रूप से लक्षण दिखाई दे रहे हैं तो भी आवश्यकतानुसार उनका इलाज भर्ती कर तुरंत शुरू किया जाये। सभी अस्पताल कोरोना के इलाज के लिये सुविधा तथा संसाधनयुक्त है। सभी अस्पताल कोरोना की तीसरी लहर की हर परिस्थिति से निपटने के लिये तैयार रहें। वे यह सुनिश्चित करें कि ऑक्सीजन प्लांट पूरी तरह कार्य कर रहा है। अगर किसी कारणवश उसमें खराबी आती है तो उसकी हर समय मरम्मत की व्यवस्था तैयार रखी जाये।

संक्षिप्त समाचार

महा वैक्सीनेशन अभियान का आयोजन 15 से 18 वर्ष के बच्चों को लगाया टीका

अंसार खान

आज जहां देश में कोराना महामारी से निपटने के लिए शासन के द्वारा वैक्सीनेशन महाअभियान के तहत 15 वर्ष से 18 वर्ष के छात्र-छात्राओं को शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय पोलाय कला में टीकाकरण किया गया। सर्वप्रथम बालिकाओं का टीकाकरण किया गया उपस्थित बीएमओ अजय साल्वे ने बताया कि प्रधानमंत्री मंत्री नरेंद्र मोदी की मंशा अनुसार कोराना महामारी से निपटने के लिए महा वैक्सीनेशन अभियान चलाया जा रहा है, जो आज उत्कृष्ट विद्यालय से प्रारंभ किया गया है। सभी शासकीय स्कूलों के बच्चों को पहले टीकाकरण किया जाएगा इसके पश्चात प्राइवेट विद्यालय छात्र-छात्राओं को टीका लगाया जाएगा आज फिर देश में ओमीक्रॉन खतरा बनता जा रहा और ज्यादा मरीज समाने आ रहे हैं हमे सवाधानी बरतने की जरूरत है अगर सवाधानी नहीं बरती तो बहुत नुक्सान उठाना पड़ सकता है।

बच्चों के टीकाकरण से बनेगा सकारात्मक माहौल : लोक निर्माण मंत्री श्री भार्गव

एनसीआर समाचार

लोक निर्माण मंत्री तथा जबलपुर जिले के प्रभारी मंत्री श्री गोपाल भार्गव ने जबलपुर में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र मनमोहन नगर में 15 से 18 वर्ष की उम्र के बालक बालिकाओं के निशुल्क टीकाकरण कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि बच्चो को वेक्सिनेशन से समाज में सकारात्मक माहौल बनेगा । उन्होंने कहा कि राज्य सरकार कोविड़ का सामना करने के लिए पूरी तरह से तैयार है। कार्यक्रम में जबलपुर सांसद श्री राकेश सिंह, विधायकद्वय श्री अशोक रोहाणी, श्री सुशील तिवारी, जबलपुर शहर भाजपा अध्यक्ष श्री जी एस ठाकुर एवं कलेक्टर जबलपुर व पुलिस अधीक्षक सहित स्वस्थ्य विभाग के आला अधिकारी मौजूद थे।

पहला टीका लगाने वाले अंबाराम भिलाला का सम्मान: कलेक्टर दिनेश जैन एवं जिला अध्यक्ष अंबाराम कराडा ने किया सम्मान

ब्रज कुमार राठौर

शासकीय. उत्कृष्ट उमावि विद्यालय शाजापुर में पहला टीका लगवाने वाले कक्षा 12वीं के विद्यार्थी अंबाराम भिलाला का आज कलेक्टर श्री दिनेश जैन एवं अंबाराम कराडा ने फूल माला पहनाकर सम्मान किया। इस मौके पर अंबाराम भिलाला ने सभी छात्रों से कहा कि मैंने टिका लगवाया है आप भी लगवाए, टीका लगवाने के बाद मुझे कोई दुष्ट प्रभाव नहीं हुआ है टीका सुरक्षित है उल्लेखनीय है कि कोराना से बचाव के लिए जिला मुख्यालय स्थित शासकीय उत्कृष्ट.उमावि. में 15 से 18 वर्ष के विद्यार्थियों का टीकाकरण कार्य का शुभारंभ हुआ। शुभारंभ पहला टीका कक्षा 12वीं के विद्यार्थी अंबाराम भिलाला को लगाया गया, समय के पूर्व टीकाकरण अवश्य कराएं मास्क पहने सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें।

प्राध्यापक को भावभूर्ण दी विदाई

प्रमोद कुमार

सिलदर - कस्बे के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सिलदर में कार्यरत व्याख्याता मुकेश भुरान के स्थानांतरण अलवर होने पर विद्यालय भवन के सभागार में विदाई समारोह का आयोजन किया गया। प्रधानाचार्य हरिराम परिहार ने बताया कि भूरान का 3 साल में विद्यालय के प्रति पूर्ण निष्ठा व ईमानदारी से कार्य किया वहीँ उन्होंने विद्यालय में ग्रीन वाटिका और वृक्षरोपण सहित अनेक कार्य को अपनी बखूभी से जिम्मेदारी निभाते हुए पूर्ण करवाया।

कोषागार के करोड़ों रुपए घोटाला करने वाले अभियुक्तों को टिहरी पुलिस ने 24 घंटे से भी कम समय में किया गिरफ्तार

साकिर खान

वरिष्ठ कोषाधिकारी टिहरी द्वारा थाना नरेंद्रनगर पर अभियोग पंजीकृत कराया गया कि कोषागार नरेंद्रनगर में कार्यरत कुछ व्यक्तियों द्वारा कोषागार के डाटा में छेड़छाड़ कर सरकारी धन का गबन किया गया है। तहरीर पर प्रथम दृष्टया ₹ 2,48,46,829/- का गबन पाया गया। जिस पर त्वरित कार्यवाही करते हुए टिहरी पुलिस टीम ने अभियुक्तगणों को 24 घंटे से भी कम समय में गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की। पूछताछ में अभियुक्तगणों द्वारा कोषागार में फर्जीवाड़ा कर स्वयं के लिए अनैतिक लाभ अर्जित करने का जुर्म स्वीकार किया गया। SSP टिहरी गढ़वाल द्वारा पुलिस टीम को नगद 2500/-रुपये* की धनराशि से पुरस्कृत किया गया।

दिल्ली में निर्माण कार्य पहले की तरह ही जारी रहेंगे

मजदूरों को घबराने की जरूरत नहीं : सत्येंद्र

एनसीआर समाचार

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन ने शुक्रवार को प्रेस को संबोधित करते हुए कोरोना वायरस को लेकर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि दिल्ली में कल कोविड के कुल 15,097 नए मामले सामने आये है। पॉजिटिविटी दर 15.34 फीसदी रही है।

कोरोना का ओमिक्रोन वेरिएंट बहुत तेजी से फ़ैल रहा है। दिल्ली में एक्टिव केस की सख्या 31,498 हो गई है। ऑमिक्रॉन वेरिएंट से घबराने की कोई जरूरत नहीं है। विशेषज्ञों ने भी स्पष्ट किया है की कोरोना का ओमिक्रोन वेरिएंट माइल्ड और कम घातक है। उन्होंने निर्माण मजदूरों को आश्वस्त करते हुए बताया कि दिल्ली में साप्ताहिक कर्फ्यू लगा है, लॉक डाउन नहीं। इसलिए मजदूरों एवं प्रवासी कामगारों को चिंता करने की जरूरत नहीं है दिल्ली में केवल साप्ताहिक प्रतिबंध लागू है। कोरोना की रोकथाम के लिए मास्क लगाना और सोशल डिस्टन्सिंग का पालन करना ही बचाव के सबसे बेहतरीन उपाए है। गंभीर लक्षण होने पर ही अस्पतालों का रुख करें। होम आइसोलेशन में इलाज संभव है। होम आइसोलेशन की अवधि घटा कर 7 दिन कर दी है। 7 दिन के होम आइसोलेशन ख़त्म होने के अगर 3 दिन तक बुखार नहीं आता तो टेस्ट करने की कोई आवश्कता नहीं है, आप अपने काम पर वापस लौट सकते हैं। स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन ने बताया कि दिल्ली सरकार ने कोरोना की रोक-थाम के लिए कड़े नियम लागू किए हैं। जिम, स्कूल कॉलेज और अनावश्क स्थलों को बंद कर रखा गया है। दिल्ली में लॉकडाउन नहीं लगा है। निर्माण कार्य पहले की तरह सामान्य रूप से चलता रहेगा। मजदूरों एवं प्रवासी कामगारों को घबराने की कोई जरूरत नहीं है।

- कोरोना की पिछली लहर की तुलना में इस लहर में अस्पतालों में भर्ती होने वाले मरीजों की संख्या 6 गुना तक कम है
- कोविड के गंभीर लक्षण होने पर ही अस्पताल जाएं, होम आइसोलेशं में इलाज संभव है
- होम आइसोलेशन की अवधि 14 दिन से घटा कर 7 दिन कर दी गयी है, लक्षण गंभीर हों तो ही अस्पताल का रुख करें

उन्होंने कहा कि दिल्ली के अस्पतालों में कुल 1091 मरीज भर्ती हैं, जिसमें से 869 दिल्ली के मरीज है। कोरोना की पहली लहर से तुलना करें तो इस बार अस्पताल में भर्ती होने वाले मरीजों की संख्या 6 गुना तक कम हुई है। दिल्ली में कोविड की यह पांचवी लहर है और इसका पीक कुछ ही हफ्तों या दिनों में आ सकता है। दिल्ली में कुछ स्वास्थ कर्मियों, डॉक्टर और अन्य मेडिकल स्टाफ के पॉजिटिव होने के मामले भी सामने आये हैं। हालांकि यह संख्या बहुत कम है। उन सभी का इलाज़ चल रहा है और उम्मीद है कि वे जल्द ही स्वस्थ हो कर वापस लौटेंगे।

भोपाल में वैक्सीनेशन की नई उपलब्धि कलेक्टर ने जनता को दी बधाई

एनसीआर समाचार

भोपाल जिले में सबके सहयोग से लगातार कोविड-19 को हराने के लिए वैक्सीनेशन का कार्य लगातार जारी है। सोमवार शाम तक भोपाल जिले में 40 लाख से अधिक डोज लगाये जा चुके है। जिले में कोरोना वैक्सीनेशन में नागरिको ने वैक्सीनेशन के प्रति उत्साह निरंतर रहा है। प्रथम डोज के छूटे हुए लोगो को ढूंढकर और इसके साथ ही पहला डोज लगवा चुके लोगो को समय पर दूसरे डोज को लगवाया जा रहा है। जिले में अब तक 40 लाख 8 हजार डोज लगवाए जा चुके है। जिससे प्रथम डोज 21 लाख 4 हजार और दूसरे डोज 19 लाख 3 हजार से अधिक लगाये जा चुके है। कलेक्टर श्री अविनाश लवानिया ने भोपाल की शानदार जनता और स्वास्थ अमले को इस उपलब्धि के लिये बधाई और धन्यवाद दिया है। कलेक्टर श्री लवानिया ने कहा कि कोरोना से लड़ाई में वैक्सीन महत्वपूर्ण हथियार है। इसके साथ मास्क लगाये और अपने साथ सबकी सुरक्षा सुनिश्चित करें। कलेक्टर श्री लवानिया ने कहा कि वैक्सीनेशन के कार्य में जिले के नागरिकों, धर्मगुरुओं, वैक्सीनेशन प्रेरकों, समाज सेवियों, जनप्रतिनिधियों, स्वास्थ्य विभाग के कार्यकर्ताओं और सामाजिक संगठनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है।

युवक कांग्रेस अध्यक्ष द्वारा की गई पदों पर नियुक्ति

नूर मोहम्मद शेख

मध्य प्रदेश युवा कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष डॉ विक्रांत भूरिया एवं पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा जिला कांग्रेस अध्यक्ष अशोक कप्तान की अनुशंसा पर जिला युवक कांग्रेस अध्यक्ष जितेंद्र सिंह गौड़ द्वारा जिला महामंत्री पद पर शिवराज सिंह शेखावत एवं जिला सचिव पद पर शिवम अग्रवाल को मनोनीत किया है। उक्त मनोनयन पर पूर्व विधायक श्री कैलाश कुंडल पूर्व मंडी अध्यक्ष लक्ष्मी नारायण बंडा वाला कन्नौद जनपद अध्यक्ष डॉक्टर ओम पटेल पीसीसी सदस्य सुनील यादव बंटू गुर्जर मनोज होलानी प्रदेश कांग्रेस सचिव रफीक मोहम्मद शेख ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष खातेगांव मोहन बिलोदा ब्लॉक कांग्रेस पूर्व ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष अजय गुर्जर

अध्यक्ष अजनास राजेश विश्नोई नरेंद्र सिंह जी राजावत विनोद चावड़ा किसान कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष चिमना माता युवक कांग्रेस विधानसभा अध्यक्ष राजवीर कुड़िया युवक कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष दीपक मीणा पिछड़ा वर्ग ब्लॉक अध्यक्ष मुकेश पटेल इरशाद पटेल संतोष पटेल बटासा अशोक मुगलिया मगन मंदसौर पिछड़ा वर्ग ब्लॉक अध्यक्ष अजनास प्रमोद गुर्जर युवा नेता सादिक रोमियो असलम भाई आदि द्वारा बधाइयां प्रेषित की गई।

जाट महासभा के राष्ट्रीय सचिव रविंद्र बालियान आप में शामिल

एनसीआर समाचार

नई दिल्ली। केजरीवाल सरकार द्वारा स्कूल, अस्पताल, बिजली, पानी, सड़क और वाईफाई समेत तमाम क्षेत्रों में किए जा रहे ऐतिहासिक कार्यों से प्रभावित होकर लगातार लोग आम आदमी पार्टी में शामिल हो रहे हैं। इसी क्रम में आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव पंकज गुप्ता ने आज अखिल भारतीय जाट महासभा के राष्ट्रीय सचिव रविंद्र सिंह बालियान का आम आदमी पार्टी में स्वागत किया। 'आप' विधायक दिलीप पांडेय और संजीव झा ने टोपी और पटका पहनाकर सभी को पार्टी में शामिल किया। इस दौरान आम आदमी पार्टी से आजादपुर मंडी के चेयरमैन आदिल खान भी मौजूद थे। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव पंकज गुप्ता ने कहा कि अरविंद केजरीवाल जी की आम आदमी पार्टी को दिल्ली से बाहर भी लोगों ने पसंद करना शुरू कर दिया है। केजरीवाल सरकार की नीतियों और दिल्ली विकास मॉडल से प्रभावित होकर देश के अलग-अलग क्षेत्रों से भारी संख्या में लोग 'आप' परिवार में शामिल हो रहे हैं। उसी श्रृंखला में आज रविंद्र सिंह बालियान जी आम आदमी पार्टी में शामिल हो रहे हैं। वह वर्तमान में अखिल भारतीय जाट महासभा के राष्ट्रीय सचिव हैं। उससे पहले 2006-2012 तक वह जनता दल (एस) के दिल्ली प्रदेश युवा अध्यक्ष रह चुके हैं।

इसके अलावा वह साल 2000-2005 तक ग्राम हड़ोली मुज्जफरनगर, उत्तर प्रदेश के प्रधान रहे हैं। कोरोना के दौरान उन्होंने मजदूरों और गरीबों को भोजन व राशन बांटने का काम किया। किसान आंदोलन में भी उन्होंने सक्रिय रूप से सहयोग किया। मैं रविंद्र जी का आम आदमी पार्टी में हार्दिक स्वागत करता हूं। आम आदमी पार्टी के प्रवक्ता, विधायक और विधानसभा में चीफ व्हिप दिलीप पांडेय ने कहा कि बहुत ही हर्ष की बात है कि रविंद्र सिंह बालियान जी आज इस परिवार का हिस्सा बन रहे हैं। जाट समाज का जो सबसे बड़ा संगठन है, रविंद्र जी ने तीनों बॉर्डर पर किसान आंदोलन का मोर्चा संभाला। मैं अगर 8-10 साल पहले की बात करूं तो वह भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन का भी हिस्सा रहे। अलग-अलग समय पर अलग-अलग आंदोलन में अपनी भूमिका निभाते रहे। मुझे विश्वास है कि इनके जुड़ने से न सिर्फ हमारा परिवार बड़ा होगा बल्कि मजबूत भी होगा। उनके साथ कई अन्य साथी भी आम आदमी पार्टी में शामिल हुए। इसमें वैभव जैन, संदीप दहिया, मनु शर्मा, ओमेंद्र चौधरी, अमित उज्जवल, दीपक तोमर, जितेंद्र मलिक, धमेंद्र, हरिंदर मलिक, राजेंद्र चौधरी, रवीश चौधरी, सतीश चौधरी और सर्वेश त्यागी शामिल हैं। मैं सभी का आम आदमी पार्टी में हार्दिक स्वागत करता हूं।

स्वच्छता अभियान की खुली पोल: रोड पर भरा गंदा पानी, ग्रामीण परेशान

दयावान

रेवाड़ी। क्षेत्र के निकटवर्ती गाँव गुडियानी में स्वच्छता अभियान की पोल खुल रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्रामीणों ने बताया कि जखाला रोड पर गंदा पानी तथा कीचड़ भरा है, जिस कारण लोगो का जीना दूभर हो रहा है। उन्होंने कहा कि यह गंदा पानी प्रजापति कालोनी तथा यादव कालोनी की नालियों का सडक पर आता है, जिससे राहगीरों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। ग्रामीणों ने कहा कि स्कूली बच्चे भी काफी बार इस गंदे पानी में फिसलकर गिर चुके। पिछले तीन माह से यह समस्या बनी हुई है लेकिन समाधान आज तक नहीं हुआ है। गंदे पानी का नाला सफेद हाथी साबितः ग्रामीणों ने बताया कि सडक के दोनों तरफ गंदे पानी का नाला तो बना हुआ है लेकिन यह बंद पडा है। इस नाले में मिटटी भरी है तथा इसकी सफाई भी नहीं हुई है। उन्होंने कहा कि लोकनिर्माण विभाग ने नाला तो बना दिया लेकिन इसमें गंदे पानी की सप्लाई नहीं होती। इस प्रकार यह नाला सफ़ेद हाथी साबित हो रहा है तथा लोकनिर्माण विभाग आँखे मूंदे बैठा है। प्रशासन सोया गहरी नींदः गाँव गुडियानी के बस स्टैंड से जखाला रोड पर गंदा पानी तथा कीचड़ भरने से ग्रामीण बेहद परेशान हो रहे हैं। लोगो ने बताया कि इस सडक पर फैले कीचड़ के कारण डेंगू एवं मलेरिया जैसी भयंकर बीमारिया फ़ैल सकती है, लेकिन बार-बार शिकायत करने के बावजूद प्रशासन ने इस समस्या का समाधान नहीं किया। इस प्रकार प्रशासन गहरी नींद सो रहा है तथा प्रधानमंत्री के स्वच्छता अभियान की पोल खुल रही है। बी.डी.पी.ओ. का कहनाः जब इस समस्या के बारे में खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी करतार सिंह से पूछा गया तो उन्होंने बताया कि इस समस्या के समाधान के लिए प्रयास जारी है तथा एस.डी.एम. से काम करने की स्वीकृति लेनी पडती है। बी.डी.पी.ओ. ने बताया कि जे.ई. द्वारा अनुमानित लागत बनाई गई है तथा शीघ्र ही गंदे पानी तथा कीचड़ का समाधान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि मेरे पास तीन ब्लाक है, इसलिए मौका देखने मै नहीं पहुँच सका। जे.ई., एस.सी.पी.ओ. एवं सचिव को मौके पर भेजा गया था।

श्रमिकों के खाते में भेजी गई एक हजार रुपए की पहली किस्त

एनसीआर समाचार

बदायूँ। मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश द्वारा ई श्रम पोर्टल पर पंजीकृत असंगठित क्षेत्र के कर्मकारों को भरण पोषण भत्ता रूपये एक हजार की प्रथम किश्त दिए जाने का शुभारंभ किया गया। इसके साथ ही पंजीकृत निर्माण श्रमिकों को भी एक हजार रुपए आपदा राहत योजना के अन्तर्गत उनके बैंक खातों में सीधे स्थानांतरित किए जाने का शुभारंभ किया गया है। इसी क्रम में विकास भवन सभागार में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य विकास अधिकारी ऋषिराज, चेयरमैन नगरपालिका दीपमाला गोयल, पीडी डीआरडीए अनिल कुमार, सहायक श्रमायुक्त, बीएमएस के जिला मंत्री मनोज जौहरी, श्रम प्रवर्तन अधिकारी, श्रम विभाग के कर्मचारी विचित्र, मनीष, रुबेश, सत्येंद्र, मुकेश, सुमित वा आमिर आदि उपास्थित रहे। इसके साथ ही कार्यक्रम में असंगठित क्षेत्र के कर्मकार व निर्माण श्रमिक भी उपस्थिति रहे।

बरेली में अवैध पार्किंग वसूली का भंडाफोड़, एफआईआर दर्ज

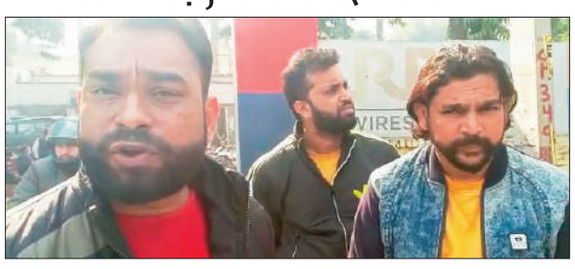

अकरम पठान

उत्तर प्रदेश में वैसे तो योगी सरकार बड़े-बड़े दावे करती आ रही है, मगर सभी वादे जमीनी स्तर पर फेल होते दिख रहे हैं। ताजा मामला यूपी के बरेली का है नई साल पर बरेली में स्थित फीनिक्स मॉल घूमने गए फरहान की बाइक सुनीता स्टैंड से चोरी। फरहान ने बताया की बाइक फीनिक्स मॉल के सामने बाइक पार्किंग के लिए दी थी, पार्किंग की पर्ची मांगने पर फरहान को 10 मिनट बाद पर्ची देने को कहा गया। फरहान ने जब 10 मिनट बाद देखा तो बाइक अपनी जगह पर नहीं थी, फरहान ने इसकी शिकायत पार्किंग इंचार्ज से की तो कर्मचारी बात को घुमाने लगे, अपना पल्ला झाड़ने लगे। फरहान ने मामले की इज़्ज़तनगर थाने में शिकायत दर्ज करवाई। भ्रमपुरा के रहने वाले फरहान नई साल के मौके पर फीनिक्स मॉल घूमने गए थे, जहाँ से उनकी बाइक चोरी हो गई बाइक नंबर यूपी25सी.सी6488 हैं, फरहान ने बाइक स्टैंड कर्मचारी विनोद के खिलाफ इज़्ज़तनगर थाने में चोरी की रिपोर्ट दर्ज करवाई।

कानूनों के बाबजूद बढ़ी दलितों के खिलाफ हिंसा

सुशील कुमार

आज आज़ादी के 75 साल तक भी अनुसूचित जातियां अपनी समानता पाने के लिए संघर्ष कर रहे है। अनुसूचित जातियों के खिलाफ हिंसा सदियों से होती आ रही है। आखिर कब खत्म होगा देश में जातिवादी, भेदभाव! दलितों के खिलाफ हिंसा में रोहित बेमुला 2016, भीमा कोरेगांव 2019, व डाक्टर पायल तंडकी की हत्या मामला, हाथरस मामला, जींद का छापर व खापड़ सामाजिक बहिष्कार मामला, मिरका हत्याकांड मामला, 2021 मिर्चपुर हत्या कांड और बेघर मामला, इन मामलों की पूरे देश में चर्चा है लेकिन सिलसिला जातिवाद के खिलाफ रुकने का नाम नही ले रहा है। राष्ट्रीय अपराध ब्यौरा एन सी बी सी के आंकड़े बताते है कि भारत में अनुसूचित जातियों पर अपराध 2020 में 8.2% वृद्धि हुई है। जबकि 2019 में 7.3% अपराधिक मामले थे। सामान्य मारपीट के लगभग 14000 मामले और अनुसूचित जातियों के रेप से संबंधित 4200 के करीब मामले दर्ज हुए है। इन दस पंद्रह सालों में जैसे जैसे दलितों द्वारा तरक्की की जा रही है, वैसे वैसे हमले और हिंसा भी बढ़ रहे है। यह कानून की नही समाज की समस्या है। देश में दलितों के अत्याचार के सबसे ज्यादा मामले उत्तर प्रदेश में है। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की रिपोर्ट के मुताबिक उत्तरप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, बिहार, हरियाणा, दलितों के शोषण का केंद्र बने जा रहे है। पिछले दो सालो में एक हजार के करीब मानवाधिकार आयोग में दर्ज हुए है जिसमे हरियाणा के 94, राजस्थान में 120, दिल्ली 60, उत्तर प्रदेश में 692 के करीब मामले दर्ज हुए है। महिलाओ की स्थिति पर बात करे तो हिंसा और उत्पीड़न की शिकार भी सबसे ज्यादा आज अनुसूचित महिलाए हो रही है।एससी एसटी आयोग के गठन की बात करें तो देश में लगभग अनुसूचित जाति आयोग में अभी भी काफ़ी पद खाली पड़े है और हरियाणा जैसे प्रदेश में तो एससी एसटी आयोग तक गठित नही हुआ है। क्योंकि यही संस्थाएं अनुसूचित जातियों पर हो रहे अत्याचारों पर नजर रखती है और उन्होने लंबे समय से आंकड़े भी पेश नही किए है। राजस्थान के कोटढूं के अंबाल गाव के बुजुर्गों और बच्चों ने कभी कापी किताब और स्कूल तक नहीं देखा कि होता क्या है ,क्या यही आजाद भारत की स्थिति है, भारतीय संविधान ने सबको बराबर के हक और अधिकार दिए और फिर भी मेरे देश की निम्न जातियां आज भी ज्यों की त्यों उसी स्थिति मे है। क्या इनके सपने नहीं है क्या इनको मूलभूत सुविधाएं की आवश्यता नहीं है आखिर कब मेरा भारत कानूनो के बाबजूद निम्न जातीय को आजाद करेगा। पुलिस स्टेशन हो या कोई अन्य जगह जहां हर गरीब अपना न्याय पाने के लिए जाता है तो प्रताड़ना, हिंसा, क्रूरतापूर्ण मामले मे पुलिस भी कम नहीं है। लेकिन दलितों का यह बड़ा वर्ग आर्थिक रूप से कमजोर भी है। इसलिए देश गावों में जमीनों और संपति का आपस में बंटवारा होना चाहिए। ताकि अनुसूचित जाति, जनजाति के लोग भी आर्थिक रूप से मजबूत हो सके और अंतरजातीय विवाह को भी बढ़ावा देना भी जरूरी है जिससे देश में जातियों की बेड़ियों को तोड़ा जा सके। प्रति लाख दलित आबादी पर सबसे ज्यादा अपराध राजस्थान में दलितों पर सबसे ज्यादा अत्याचार (दलितों की प्रति लाख आबादी के अनुसार अपराध की संख्या) राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश, बिहार और गुजरात में होता है।

संक्षिप्त समाचार

महिला अपराधों की रोकथाम एवं जागरूकता हेतु भोपाल पुलिस ने छात्राओं व स्कूल स्टॉफ से किया जन संवाद

एनसीआर समाचार

महिला अपराधों की रोकथाम हेतु वरिष्ठ अधिकारियों के दिशा निर्देशन में भोपाल पुलिस द्वारा शहर के विभिन्न स्कूलों व कॉलेजों में जन संवाद कर छात्राओं को गुड टच, बेड टच के बारे में बताया एवं छात्राओं तथा टीचर्स को साइबर व बैंकिंग फ्रॉड सम्बंधी अपराधों से बचाव एवं रोकथाम के उपाय बताकर जागरूक किया गया। इस क्रम में आज थाना हनुमानगंज पुलिस द्वारा न्यू सेंट जोसेफ हायर सेकेंडरी स्कूल सिंधी कॉलोनी, थाना कोतवाली पुलिस द्वारा कैनियन स्कूल में संवाद कर छात्राओं को जागरूक किया गया।

यूपी के मथुरा जिले के हालात बेहाल, सरकार होती दिख रही फेल

साकिर खान

गांव देवसेरस में मेन परिक्रमा मार्ग मे रस्ता ये रास्ता जामा मस्जिद के लिए जाता है और आने जाने में बहुत ज्यादा समस्या होती है और गड्ढे बहुत ज्यादा गहरे हैं। प्रशासन इस रास्ते पर ध्यान नहीं दे रहा है और यहां पर रहने वाले आसपास लोगों को बहुत ज्यादा समस्या हो रही है और आसपास रहने वाले घरों में बीमारी की समस्याएं पढ़ रही है। इस तरीके से गांव में जो विकास हो रहा है वह आपके सामने है और गांव में इस तरीके से कॉफी सड़के खराब है यह गांव मथुरा जिला में आता है।

फिर कोरोना पंहुचा अमिताभ बच्चन की घर, स्टाफ संक्रमित

अमिताभ के घर पहुंचा कोरोना, एक स्टाफ संक्रमित, बॉलीवुड महानायक अमिताभ बच्चन के घर एक बार फिर से कोरोना ने दस्तक दे दी है। समाचार एजेंसी एएनआई के अनुसार अमिताभ का एक स्टाफ कोरोना संक्रमित हो गया है। घर पर काम करने वाले कुल 31 स्टाफ का रविवार को कोरोना टेस्ट कराया गया था। वहीं महाराष्ट्र में कोरोना की मौजूदा स्थिति पर उपमुख्यमंत्री अजीत पवार ने आज अधिकारियों के साथ बैठक की और ताजा हालात की जानकारी ली। इस दौरान राज्य में लॉकडाउन को लेकर कोई फैसला नहीं लिया गया।

शाहजहांपुर स्टार जिम प्रबंधक राफे ख़ान ने कराई बॉडी बिल्डिंग प्रतियोगिता

शाहवाज़ हुसैन ख़ान

शाहजहांपुर अंटा चौराहा स्थित एक लान में बॉडी बिल्डिंग प्रतियोगिता का आयोजन स्टार जिम प्रबंधक राफे ख़ान द्वारा किया गया जिसके मुख्य अतिथि मिस्टर एशिया देवेन्द्र पाल रहे। इस ख़ास मौके पर समाजवादी पार्टी जिलाध्यक्ष तनवीर ख़ान और जज के रूप में बरेली से आए नेशनल कोच फ़हीम रज़ा व सलीम अख्तर मौजूद रहे! बॉडी बिल्डिंग प्रतिभागियों को पछाड़ते हुए रिज़वान ने मिस्टर शाहजहांपुर का ख़िताब जीता, बॉडी बिल्डिंग एसोसियेशन के अध्यक्ष जनाब अशफ़ाक उल्ला खां ने सभी विजेताओं को ट्रॉफी और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया, स्टार जिम प्रबंधक राफे ख़ान इस समारोह को सफल बनाने के लिए आए हुए सभी लोग का आभार जताकर शुक्रिया अदा किया।

परिवहन विभाग द्वारा 62 की चेकिंग: वाहनों की चेकिंग की कार्रवाई आगामी दिनों में निरंतर जारी रहेगी: आरटीओ

ब्रज कुमार राठौर

उच्च न्यायालय जबलपुर में प्रचलित रीट पीटीशन. में दिए गए आदेश के पालन में प्रदेशभर में बिना परमिट नियम विरुद्ध चलने वाले ऑटो रिक्शा पर तत्काल वैधानिक एवं नियमानुसार कार्यवाही की जा रही है। जिला परिवहन अधिकारी श्री ए. पी. श्रीवास्तव ने बताया कि परिवहन विभाग द्वारा आज 62 वाहनों की चेकिंग की गई चेकिंग के दौरान दो ऑटो रिक्शा बिना परमिट जप्त किया गया। थाना लालघाटी की अभिरक्षा में रखा गया वाहनों की चेकिंग की कार्यवाही आगामी दिनों में निरंतर जारी रहेगी।

विराटनगर क्षेत्र में चोरों के हौसले बुलंद: चोरी हुई पिक अप का नहीं लगा सुराग

हेमराज सैनी

विराटनगर कस्बा स्थित वार्ड नंबर 19 कुशल सती से गत 1 जनवरी मध्यरात्रि पश्चात किन्ही अज्ञत चोरों के द्वारा चोरी से उठाई गई पिकअप का अभी तक पुलिस को कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई है। गाड़ी मालिक: काकराना निवासी चंदा राम खटाना ने बताया कि उन्होंने अपनी गाड़ी नंबर RJ32GA9066 पिक अप जिसे वार्ड नंबर 19 कुशल शक्ति (किले के पास) स्थित तूड़े की स्टाल पर तूड़ा भराई हेतु लगा रखा था, गत 1 जनवरी की रात्रि को किन्हीं अज्ञत चोरों ने पिकअप चुरा ले गए। पास में स्थित सीसी कैमरे फुटेज के अनुसार रात्रि करीब 1.45 बजे बोलेरो से आए 4-5 युवकों ने इस घटना को अंजाम दिया।

उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया का बयान

भाजपा का शराब माफिया से गहरा नाता कर रहे थे 3500 करोड़ रुपए की चोरी

एनसीआर समाचार

नई दिल्ली। 2015 में दिल्ली में थी 850 शराब की दुकानें। पिछले 6 सालों में नहीं खुलने दी शराब की एक भी दुकान और नई आबकारी नीति में अब तक खुली है केवल 501 दुकानें। चोरी बंद करने से बौखलाई भाजपा ने दिल्ली की सड़कों पर जमकर की गुंडागर्दी, सरकारी संपत्ति को पहुंचाया नुकसान। इसके लिए जनता भाजपा को कभी माफ नहीं करेगी। दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि दिल्ली में भाजपा का शराब माफिया से गहरा नाता रहा है। भाजपा ने ऐसी व्यवस्था बना रखी थी कि जहां पर भी शराब की लीगल दुकानें नहीं थी, वहां वे अवैध दुकानें खोलकर माफिया के साथ चलाते थे। केजरीवाल सरकार की नई आबकारी नीति से 3500 करोड़ की राजस्व चोरी रुक गई। भाजपा और शराब माफिया दोनों 3500 करोड़ रुपए की इस चोरी में हिस्सेदारी कर रहे थे। इस चोरी के रुक जाने से भाजपा को दर्द तो होगा ही। केजरीवाल सरकार ने राजस्व चोरी का यह पैसा अब जनहित के काम में लगा रही है। नई आबकारी नीति से भाजपा पूरी तरह बौखला गई है, क्योंकि अब भाजपा नेता अवैध तरीके से अपनी जेब नहीं भर पाएंगे। 2015 में दिल्ली में 850 शराब की दुकानें थी। केजरीवाल सरकार ने दिल्ली में एक भी शराब की दुकान नहीं खुलने दी। नई आबकारी नीति के तहत दिल्ली में अभी 501 शराब की दुकानें ही खुली हैं। दिल्ली में 2016 के बाद केजरीवाल सरकार की नीति के कारण कोई नई शराब की दुकान नहीं खोली गई। पहले जो दुकान चली आ रहीं थी, उनका आवंटन गलत था। कई वार्डों में 15 से 25 दुकान थीं और कई वार्डों में बिल्कुल दुकान नहीं थी। जहां पर शराब की दुकान नहीं थी, वहां भाजपा और माफिया मिलकर अवैध शराब की दुकानें चल रहीं थी। जिसे बंद करा दिया गया है। पहले करीब 2 हजार अवैध शराब की दुकानें थीं।

केजरीवाल सरकार ने इसको लेकर काफी सख्ती की थी। दिल्ली में अवैध शराब पर कार्रवाई करते हुए लगभग 7 लाख अवैध शराब की बोतल पकड़ी थीं। इसके अलावा 1864 एफआईआर और 1 हजार वाहन जब्त किए थे। और नई आबकारी नीति के आने के बाद यह सारी अवैध शराब की दुकानें बंद हो गई है जिससे भाजपा बौखला गई है। भाजपा चोरी पर रोक से इतना बौखला गई है कि जनता को परेशान कर रही है।

पुलिस ने डंडे बरसाए, लेकिन यूपी-बिहार के मजदूर रातभर स्टेशन पर डटे रहे

एनसीआर समाचार

कोरोना की पहली लहर में अचानक लॉकडाउन के बाद बड़े शहरों से घर लौटने वाले प्रवासियों की दिल दहला देने वाली तस्वीरें हम सबने देखी हैं। महामारी की तीसरी लहर में एक बार फिर ऐसा ही नजारा दिख रहा है। मुंबई के लोकमान्य तिलक टर्मिनस पर उत्तर प्रदेश और बिहार के प्रवासी मजदूर डेरा जमाए हैं।

यहीं से उत्तर प्रदेश और बिहार जाने वाली ज्यादातर ट्रेनें रवाना होती हैं। मुंबई के प्रवासियों में बड़ी संख्या इन्हीं इलाके के लोगों की है। रेलवे स्टेशन पर प्रवासियों को पुलिस के डंडे खाने पड़े, ट्रेन का टिकट भी नहीं मिला। इसके बावजूद वे वहां से नहीं हिले। वजह साफ थी.. अगर मुंबई में लॉकडाउन लग गया, तो वे भूखे मर जाएंगे। ऐसे में सबकी कोशिश है कि कैसे भी लॉकडाउन से पहले अपने गांव-अपने घर पहुंच जाएं। मुंबई में पिछले 24 घंटे में कोरोना के 20 हजार से ज्यादा केस मिले हैं। ऐसे में लॉकडाउन की आशंका से प्रवासी और खासतौर पर मजदूर बेहद डरे हुए हैं।

पंजाब में नाईट कर्फ्यू, बंद रहेंगे सभी शिक्षण संस्थान

एनसीआर समाचार

चंडीगढ़। कोविड-19 के बढ़ते मामलों के मद्देनजर पंजाब सरकार ने रात्रिकालीन कर्फ्यू लगाने, शैक्षणिक संस्थानों को बंद करने और सिनेमाघरों को 50 प्रतिशत क्षमता के साथ संचालित करने का मंगलवार को फैसला किया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।गृह एवं विधि विभाग की ओर से मंगलवार को जारी एक आदेश के अनुसार, पंजाब के सभी शहरों और कस्बों की नगरपालिका सीमा के भीतर रात 10 बजे से सुबह पांच बजे तक सभी गैर-जरूरी गतिविधियों के लिए लोगों की आवाजाही प्रतिबंधित रहेगी। पाबंदी 15 जनवरी तक होगी : आदेश में कहा गया कि जिला अधिकारियों को पाबंदियों का पालन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया है।आदेशानुसार, ''हालांकि, विभिन्न पालियों में काम करने वाले उद्योग, कार्यालयों, राष्ट्रीय एवं राज्य राजमार्गों पर लोगों तथा सामानों की आवाजाही, बस, ट्रेन और विमान से उतरने के बाद लोगों का उनके गंतव्य तक जाना सहित सभी आवश्यक गतिविधियों पर कोई प्रतिबंध नहीं है। ''ये सभी पाबंदियों पंजाब में 15 जनवरी तक जारी रहेंगी।

पंजाब नाइट कर्फ्यू और गाइडलाइंस

सभी स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय और 'कोचिंग सेंटर' बंद रहेंगे। सभी कक्षाएं अब ऑनलाइन ली जाएंगी। मेडिकल तथा नर्सिंग कॉलेज सामान्य रूप से कार्य करना जारी रख सकते हैं। बार, सिनेमाघर, मल्टीप्लेक्स, मॉल, रेस्तरां, स्पा, संग्रहालय तथा चिड़ियाघर 50 प्रतिशत क्षमता के साथ संचालित किए जाएंगे और उनके सभी कर्मचारियों का पूर्ण टीकाकरण अनिवार्य है। आदेश में कहा गया कि स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, स्टेडियम, स्वीमिंग पूल और जिम (राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय आयोजनों में भाग लेने के लिए खिलाड़ियों के प्रशिक्षण के लिए इस्तेमाल किए जा रहे जिम को छोड़कर) बंद रहेंगे।

रोको टोको अभियान शुरू: प्रशासन सतर्क

नूर मोहम्मद

बागली कोरोना संक्रमण से नागरिकों की सुरक्षा और बचाव को मध्य नजर रखते हुए बागली एसडीएम शोभाराम सोलंकी के निर्देशन में तहसीलदार राधा महंत नायब तहसीलदार अनिता बरेठा, बागली थाना प्रभारी दीपक यादव नगर परिषद के स्वास्थ्य अधिकारी प्रमोद शर्मा मुरली राठौर सीएमओ महेश शर्मा, ने अपने-अपने विभाग के कर्मचारियों को लेकर तहसील परिसर के सामने मेन रोड से गुजरने वाले वाहनों और नागरिकों को मास्क लगाने के निर्देश देते हुए कहा कि मास्क लगाने का कड़ाई से पालन करें, बगैर मास्क के पाए गए दो पहिया वाहन चालकों को मास्क भी वितरित किए और समझाइश दि अब कभी बगैर मास्क के पाए गए तो चालानी कार्रवाई भी की जाएगी !

प्रशासनिक अधिकारियों से चर्चा करने पर उन्होंने कहा

कोरोना संक्रमण एक बार फिर अपने नए वेरिएंट ओमीक्रोन के साथ लगभग प्रवेश कर चुका है यह हमारे लिए घातक साबित ना हो इसलिए कोई ढिलाई या लापरवाही बिल्कुल नहीं बरती जानी चाहिए! हमें अपने परिवार जनों को सैनिटाइजर और मास्क के उपयोग के प्रति जागरूक कर उन्हें संक्रमण से संक्रमित होने से बचाया जा सकता है, रोको टोको अभियान में पुलिस विभाग के अजय शर्मा, सऊद खान, नगर परिषद के कर्मचारी वीरेंद्र गुर्जर, राजा अजमेरा, लायक अली, आदि का विशेष योगदान रहा।

एक ही परिवार के चार सदस्यों की निर्मम हत्याकांड का खुलासा

साकिर खान

देवा नदी के किनारे ग्राम सिद्धानवदिया के पास 02 शव पड़े हैं इस सूचना पर नानकमत्ता पुलिस मौके पर पहुंची तो देखा कि 2 व्यक्तियों के गले धारदार हथियार से रेत कर व घोप कर निर्मम हत्या कर दी गयी थी। उक्त शवों की पहचान करने पर शव अंकित रस्तोगी उर्फ अजय पुत्र शिवशंकर रस्तोगी निवासी नानकमत्ता उम्र करीब 28 वर्ष व उदित रस्तोगी पुत्र अनिल रस्तोगी निवासी कस्बा शाही जिला बोली उम्र 21 वर्ष के रूप में हुयी। मौके पर जानकारी प्राप्त हुयी कि मृतक अंकित के घर में स्थिति संदिग्ध है जिस पर नानकमत्ता पुलिस मृतक के घर पहुंची तो घर के अन्दर अंकित रस्तोगी की माता आशा देवी पत्नी शिवशंकर रस्तोगी उम्र 55 वर्ष व नानी सन्नो देवी पत्नी स्व0 हजारा सिंह निवासी शाही जिला बरेली उम्र 75 वर्ष के शव बरामद हुये जिनके गले भी धारदार हथियार से रेत कर निर्मम हत्या की गयी थी। उपरोक्त 04 लोगों की निर्मम हत्या की घटना से नानकमत्ता क्षेत्र में दहशत व असुरक्षा का माहौल उत्पन्न हो गया। बादी श्री आदेश कुमार की तहरीर के आधार पर थाना नानकमत्ता मुकदमा FIR NO. 351/2021 U/S. 302/201 IPC बनाम अज्ञात पंजीकृत किया गया। उच्च अधिकारी गण सूचना पाकर तुरन्त मौके पर पहुंचे व डॉग स्क्वॉड टीम व फोरेन्सिक टीम व एस०ओ०जी०/ सर्विलांस टीम व जनपद ऊधम सिंह नगर के समस्त थानों से कुशल अधिकारी गण व कर्मचारी गण को एकत्रित किया गया व श्रीमान् उप महा निरीक्षक महोदय कुमाऊं परिक्षेत्र, नैनीताल के आदेश के क्रम में श्रीमान् वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक महोदव जनपद ऊधम सिंह नगर के दिशा निर्देशन में श्रीमान् पुलिस अधीक्षक नगर महोदय व श्रीमान् पुलिस अधीक्षक क्राईम के नेतृत्व में सीसीटीवी फुटेज अवलोकन करने, सुरागरसी पतारसी, पूछताछ करने व सर्विलांस हेतु 20 टीमों का गठन किया गया। मृतक अंकित रस्तोगी के सगे सम्बन्धी व मित्रमण्डली व संदिग्ध व्यक्तियों से गहनता से पूछताछ करते हुए घटनास्थल के आसपास सीसीटीवी फुटेज का अवलोकन व सुरागरसी पतारसी करते हुए कड़ी से कड़ी जोड़ कर दिनांक 03/01/2022 पुलिस टीम द्वारा अभियुक्त रानू रस्तोगी, विवेक वर्मा, मुकेश वर्मा उर्फ राहुल को गिरफ्तार कर घटना में प्रयुक्त कार बैगनार न०-UA06 E 6212 व लूटे गये 35,000/- रुपये बरामद किये गये उच्चाधिकारीगण द्वारा पुलिस टीम के उत्तसाह वर्धन वव सफल अनावरण के लिए पुलिस टीम को नगद ईनाम की घोषणा की गयी।

सावित्रीबाई फुले की मनाई गई जयंती

एनसीआर समाचार

भारतीय महिलाओं के बीच शिक्षा का अलख जगा कर तत्कालिन विभिन्न समाजिक कुरितियों को समाप्त करने हेतु कड़ा संघर्ष करने वाली आधुनिक भारत की प्रथम शिक्षिका और विख्यात मराठी कवयित्री माता सावित्री बाई फुले जी की 191 वी जयन्ती बागली नगर के शिवाजी चौराहे पर मनाई गई। नगर के सभी वरिष्ठजन एवं युवा वर्ग शंकर लाल हर्निया, राजा अजमेरा, साहेबराव मराठा, बंटी प्रजापत, कैलाश जी हर्निया, सुनील हर्निया, पप्पू गुर्जर, शेखर मराठा, सूरज बागवान, शाहिद शेख, मोनू अजमेरा अजय राठौर सुनील बागवान, अभिषेक जयसवाल मनीष माली, आशीष मंडलोई, अंकित मंडलोई, अमन खटीक कमल जी बागवान, बंटी बागवान, विजय बागवान, संदीप बागवान, पिंटू धानवे, दीपक हर्निया, करण हर्निया, समस्त कार्यकर्ता गण उपस्थित थे।

ग्राम पंचायतों का संचालन पुनः करेंगे ग्राम प्रधान, मध्यप्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव

राजेश मेवाड़ा

शुजालपुरः मध्यप्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव कि अचार संहिता समाप्त होने के बाद यही कयास लगाए जा रहे थे कि अब पंचायतो का संचालन अब कौन करेगा काफी अफवाहों के बाद आखिकार मध्यप्रदेश सरपंच एकता संगठन के प्रदेश अध्यक्ष निर्भयसिह यादव, प्रदेश उपाध्यक्ष मनोहरसिह बाघेला, प्रदेश प्रवक्ता राधेश्याम राजपूत, रामबाबू शिवहरे व मीडिया प्रभारी वीरेंद्र पंवार की कड़ी मेहनत व प्रयास कि वजह से पुनःपूर्व की तरह ही यथावत ग्राम प्रधानो को मध्यप्रदेश शासन ने वापस ग्राम पंचायत संचालन का कार्य आखिरकार आज सोप दिया। जैसे ही पत्र जारी हुआ वैसे ही प्रधानो के चेहरे खिल गये वहीँ पूरे सरपंच संगठन ने मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराजसिह चौहान व सभी मंत्रीजन व सभी विधायकजनो का आभार माना वहीँ प्रदेश अध्यक्ष निर्भयसिह यादव ने कहा कि हम मध्यप्रदेश सरकार के स्वर्णिम ग्राम बनाने के सपने को शासन, प्रसासन के साथ मिलकर साकार करेंगे।

आनंद विभाग के गठन की मंजूरी, अध्यात्म विभाग का नाम भी परिवर्तित

देवेन्द्र कुमार जैन

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में मंगलवार को मंत्रि-परिषद की बैठक में आनंद विभाग का गठन एवं अध्यात्म विभाग का नाम परिवर्तित कर धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग करने के लिये कार्य (आवंटन) नियम में संशोधन करने का अनुमोदन किया। मंत्रि-परिषद ने स्ट्रेंथनिंग टीचिंग- लर्निंग एंड रिजल्ट्स फॉर स्टेटस (स्टार्स) कार्यक्रम के क्रियान्वयन की सैद्धांतिक स्वीकृति दी। स्टार्स भारत शासन का कार्यक्रम है, जिसे 6 राज्यों-मध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, राजस्थान और केरल में स्वीकृत किया गया है। स्टार्स कार्यक्रम का उद्देश्य स्कूल शिक्षा की गुणवत्ता और शासन-विधि (गवर्नेंस) का सुधार है। स्टार्स परियोजना में ऐसी गतिविधियाँ तथा नवाचार प्रस्तावित हैं, जो समग्र शिक्षा अभियान में प्रावधानित नहीं किये जा सकते हैं। स्टार्स परियोजना में सबके लिये शिक्षा, समग्र शिक्षा अभियान, सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्ज़ और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, सम्पूर्ण विद्यालय दृष्टिकोण (होल स्कूल अप्रोच) रहेंगे। मंत्रि-परिषद ने मध्यप्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी में अमरकंटक ताप विदयुत गृह, चचाई में 1x660 मेगावाट क्षमता की सुपर क्रिटिकल तकनीक आधारित ताप विद्युत विस्तार इकाई, जिसका क्रियान्वयन मध्यप्रदेश पॉवर जनरेटिंग कंपनी लिमिटेड एवं कोल इंडिया लिमिटेड की सहायक कम्पनी एस.ई.सी.एल के मध्य गठित संयुक्त उपक्रम द्वारा किया जाना प्रस्तावित है, के लिये नीतिगत/सैद्धांतिक स्वीकृति दी। प्रस्तावित परियोजना की अनुमानित लागत 4665 करोड़ 87 लाख रूपये है। परियोजना के लिये राज्य शासन द्वारा 15 प्रतिशत राशि अंशपूंजी के माध्यम से दी जाएगी। मंत्रि-परिषद ने संचालनालय नगर तथा ग्राम निवेश के नये सेटअप में कार्यालयों के विस्तार/पुनर्गठन के लिये कुल 941 पद (नियमित 693, संविदा-201, आउटसोर्स 47) एवं 140 प्रतिनियुक्ति के पद, प्रोजेक्ट मैनेजमेंट यूनिट के 5 पद तथा इसके अतिरिक्त प्रोजेक्ट मॉनिटरिंग यूनिट की स्थापना, 25 इन्टर्न्स को रखने का अनुमोदन तथा 13 करोड़ 45 लाख रूपये के वार्षिक व्यय की स्वीकृति दी गई। संचालनालय के सेटअप में सहायक संचालक स्तर के 5 नये जिला कार्यालय (मुरैना, टीकमगढ़, धार, बालाघाट, सीहोर) स्वीकृत किये गये हैं। सहायक संचालक, जिला कार्यालय कटनी का उन्नयन उप संचालक स्तरीय कार्यालय में किया गया है। इससे इन जिलों में जन-सामान्य को सुविधा होगी और विकास कार्यों को भी गति मिलेगी। मंत्रि-परिषद ने राज्य शासन में राज्य एजेंसियों की हानि की प्रतिपूर्ति करने तथा कृषकों की उपज नियमित रूप से समर्थन मूल्य पर क्रय हो, इसे सुनिश्चित करने के लिए दो योजना (मध्यप्रदेश स्टेट सिविल सप्लाईज कार्पोरेशन को खाद्यान्न उपार्जन में हुई हानि की प्रतिपूर्ति तथा मध्यप्रदेश राज्य सहकारी विपणन संघ को खाद्यान्न उपार्जन में हुई हानि की प्रतिपूर्ति) के स्थान पर वर्ष 2020- 21 से नवीन योजना मुख्यमंत्री कृषक फसल उपार्जन सहायता योजना लागू करने का निर्णय लिया।

संक्षिप्त समाचार

लिट्टीपाड़ा-अमड़ापाड़ा पर सड़क हादसा में 10 की मौत

अन्नू कुमारी

झारखंड, पाकुड़ में बुधवार सुबह एक भीषण सड़क हादसे में 10 लोग की मौत हो गई, वज़ह बनी गैस सिलेंडर से लदा ट्रक, साहिबगंज से दुमका जा रही बस लिट्टीपाड़ा-अमड़ापाड़ा रोड पर पडेरकोला के पास गैस सिलेंडरों से लदे ट्रक से टकरा गई। बस में 40 से ज्यादा लोगों के सवार होने की जानकारी मिली है। इसमें करीब 25 लोग घायल हैं, टक्कर इतनी जोरदार थी कि दोनों ही गाड़ियों के परखच्चे उड़ गए। कई लोग बस के बाहर आकर गिर गए। बस में बैठे लोग कई लोग अंदर ही फंस हुए थे । बस की बॉडी काटकर लोगों को बाहर निकाला जा रहा है। बताया जा रहा है कि बस का ड्राइवर अब तक जिंदा है। वह बस में ही फंसा हुआ था स्थानीय लोगों ने बताया कि दुर्घटना में मरने वाले लोगो की संख्या बढ़ने की आशंका है। बताया जा रहा है कृष्णा रजत बस और LPG सिलेंडर्स से भरे ट्रक में हुई टक्कर इतनी तेज थी कि दोनों गाड़ियों के परखच्चे उड़ गए। पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए हैं। फिलहाल मारे गए लोगों की पहचान नहीं हो सकी है। घायलों को अस्पताल ले जाया गया है। हादसे की जानकारी मिलते ही सबसे पहले स्थानीय लोग मौके पर पहुँचे । प्रशासन और पुलिस के पहुँचने से पहले ही वे राहत और बचाव के कार्य में जुट गए। दुर्घटना के बाद जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन के अलावा अधिकारियों की टीम भी मौके पर पहुंच गई है। दुर्घटना की जाँच पड़ताल करने जब पुलिस घटना स्थल पर पहुँची तब उन्होंने बताया की यह हादसा कोहरे के कारण हुआ है हो सकता है की ट्रक चालक को सामने आती हुई बस नहीं दिखी और उसने सीधे बस में टक्कर मर दी, जिस समय यह हादसा हुआ उस समय में बस में बैठे काफी लोग सो रहे थे। इस कारण किसी को संभलने तक का समय नहीं मिला।

राष्ट्रीय मेघवाल परिसद गुजरात प्रात की कार्यकारिणी का कार्यकाल पूर्ण हुआ

प्रताप मेघवाल रामाशिया

पुरानी कार्यकरणी को भंग करते हुए नई कार्यकारणी का गठन किया गया, जिसमें नए अध्यक्ष श्री मान कुकारामजी पवार एवं चसिव सोमरामजी बोस कोचाध्यक्ष ताराचन्द जी मकवाणा साहब की नियुक्ति की गई। इस नियुक्ति में मेन्द्रजी चुण्डावत प्रतापजी मेघवाल (रामाशिया) अध्यक्ष मेघवाल शिक्षा संस्थान भवरजी मोबारसा एडवोकेट नरेन्द्र रारबड़ा मिश्रीलाल जी खाम्बू हिम्मत मल भंसाली सोहनजी, जोगावत नारायणजी डांगी, लीलाराम जी गहलोत जयंतीलाल, परमार मोहनजी सेजु एवम मेघवाल समाज के सभी सदस्यगण मौजूद रहे, नई कार्यकारणी की सभी ने बधाई दी, इस नई कार्यकारणी से मेघवाल समाज में ख़ुशी की लहर है।

चोरों का आतंक उड़ा रहा लोगों की नींद: दो दूकानों का शटर का ताला तोड़कर हजारो रुपए नकद सहित सामान ले फ़रार

सर्वर अहमद

शहाबगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत शहाबगंज कस्बा मे चोरो ने दो दूकानो के शटर तोड़कर नगदी सहित सामान ले गए। शहाबगंज स्थित अमर नाथ जायसवाल कि दूकान मे चोरो ने 28 हजार नगदी सहित कुछ सामान ले गए वहीँ पर मनोउवर कि भी दूकान से चोरो ने पांच हजार के करीब कीमत का सामान ले गए। बताया जा रहा है की रात करीब 1 बजे के करीब चोरो ने शटर तोडकर चोरी कि जिसमे 28 हजार नगदी सहित अन्य सामान भी ले गए, वहीँ बगल में एक दुकान थी मनौवर जी की उसका भी ताला तोडकर उसमे भी 5 हजार के कीमत की सामान ले गए हैं हालाकि चोरों का अभी तक पता नहीं चला है पुलिस जांच में जुटी हुई हैं।

दिनेश प्रताप सिंह व ब्लॉक प्रमुख उमेश प्रताप सिंह और पूर्व प्रधान माननीय उदय भान सिंह ने कंबल वितरण किये

हंसराज

हरचंदपुर विधानसभा में एमएलसी आदरणीय दिनेश प्रताप सिंह जी ने ग्राम सभा गुजरी और घड़ी दुलाराय के नौजवान भाइयों से मिलकर उनका कुशल क्षेम जाना और बुजुर्गों और माताओं बहनों से मिलकर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया और ठंड से बचने हेतु बुजुर्गों को कंबल प्रदान किए। माताओं को बहनों को साड़ी तथा नौजवानों साथियों को जैकेट प्रदान की इस मौके पर उपस्थित सभी कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धक किया उपस्थिति महोदय आदरणीय पूर्व प्रधान संघ अध्यक्ष उदय भान सिंह जी वाह उमेश प्रताप सिंह राजन बाजपेई विधानसभा क्षेत्र हरचंदपुर के मौजूदा विधायक राकेश सिंह भी मौजूद रहे, जो माननीय एमएलसी आदरणीय दिनेश प्रताप सिंह के छोटे भाई हैं और जनता से रुबरू हुए।

भाजपा को दिल्ली सरकार से मिल रहे सालाना 221.56 करोड़

नगर निगम खर्च कर पाई मात्र 141.45 करोड़: सौरभ भरद्वाज

एनसीआर समाचार

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के मुख्य प्रवक्ता सौरभ भारद्वाज ने कहा कि हर साल फंड न मिलने का रोना रोने वाली भाजपा शासित एमसीडी दिल्ली सरकार द्वारा 221.56 करोड़ रुपए मिलने के बावजूद मात्र 141.45 करोड़ ही खर्च कर पाई। दिल्ली हाई कोर्ट की बार-बार फटकार के बावजूद एमसीडी ने डेंगू की रोकथाम को लेकर कोई ठोस कदम नहीं उठाए। दिल्ली हाई कोर्ट ने कहा कि एमसीडी की सारी कार्रवाई सिर्फ कागज़ों पर है। उन्होंने कहा कि अपने निकम्मेपन और भ्रष्टाचार के कारण भाजपा एमसीडी में फेल हुई है। जनता चाहती है कि अब एमसीडी भाजपा के चंगुल से आज़ाद हो। आम आदमी पार्टी के मुख्य प्रवक्ता और ग्रेटर कैलाश से विधायक सौरभ भारद्वाज ने बुधवार को पार्टी मुख्यालय में प्रेसवार्ता को संबोधित किया। सौरभ भारद्वाज ने कहा कि हमने कहा था कि हम आपको दिल्ली नगर निगम के अंतर्गत आने वाली सभी ज़िम्मेदारियों से अवगत कराएंगे। आज की प्रेसवार्ता उसी कड़ी का हिस्सा है। दिल्ली के अंदर प्राइमरी हेल्थकेयर और पब्लिक हेल्थकेयर सीधा-सीधा दिल्ली नगर निगम के आधीन आता है। चाहे डिस्पेनसरी का काम हो, चाहे डेंगू, मलेरिया और चिकनगुनिया की रोकथाम हो, चाहे मच्छरों की ब्रीडिंग रोकने के लिए डीबीसी की नियुक्ति हो और चाहे फॉगिंग हो, यहा सारा का सारा काम दिल्ली नगर निगम के आधीन आता है। पिछले दो महीनों में हमने देखा कि दिल्ली में डेंगू काफी फैला। बहुत लोग उससे ग्रस्त हुए

- दिल्ली हाई कोर्ट की बार-बार फटकार के बावजूद एमसीडी ने डेंगू की रोकथाम को लेकर कोई ठोस कदम नहीं उठाए- सौरभ भारद्वाज
- दिल्ली हाई कोर्ट ने कहा कि एमसीडी की सारी कार्रवाई सिर्फ कागज़ों पर- सौरभ भारद्वाज
- दिल्ली में प्राइमरी और पब्लिक हेल्थकेयर एमसीडी के आधीन आता है, भाजपा उसमें भी फेल साबितः सौरभ भारद्वाज
- निकम्मेपन और भ्रष्टाचार के कारण एमसीडी में फेल भाजपा, जनता चाहती है कि भाजपा के चंगुल से आज़ाद हो एमसीडी

जिसके लिए दिल्ली हाई कोर्ट ने बार-बार एमसीडी की खिचाई की और डेंगू लेकर कड़ा रुख अपनाया। दिल्ली में डेंगू के बढ़ते मामलों पर कुछ खबरों का हवाला देते हुए सौरभ भारद्वाज ने कहा कि यह टाइम्स ऑफ इंडिया की 10 नवंबर की रिपोर्ट है, जिसमें हाई कोर्ट ने 'डेंगू को लेकर निगम ने क्या कदम उठाए', उसकी एक रिपोर्ट मांगी। अगली खबर 23 नवंबर की है, जिसमें दिल्ली हाई कोर्ट ने नाराज़ होकर एमसीडी से पूछा कि अगर आप डेंगू के मामलों की रोकथाम नहीं कर पा रहे हैं तो एमसीडी के अफसर किस बात की तनख्वाह लेते हैं? मलेरिया विभाग किस बात की तनख्वाह लेता है? 2 दिसंबर को फिर से एक खबर आई, जिसमें हाई कोर्ट ने कहा कि निगम के सिविक एडमिनिस्ट्रेशन और पूरे निगम प्रशासन को लकवा मार गया है। 2 दिसंबर को एक और खबर छपी, जो कहती है कि डेंगू के बढ़ते मामलों पर दिल्ली हाई कोर्ट की फटकार, कहा प्रशासन को पूरी तरह से लकवा मार गया है।

इसके बाद 24 दिसंबर को बेहद दुखी होकर हाई कोर्ट ने एमसीडी की सारी रिपोर्ट्स को खारिज करते हुए एमसीडी को कड़ी फटकार लगाई। भाजपा शासित निगम को कड़ी फटकार लगाई और कहा कि एमसीडी की सारी कार्रवाई सिर्फ कागज़ों पर है। क्योंकि अगर आप कागजों पर देखेंगे तो एमसीडी ने डेंगू की अच्छी रोकथाम की है। कागजों पर दवाई खरीदी भी गई, दवाई छिड़की भी गई, मलेरिया इंस्पेक्टर घर-घर गए, उन्होंने मलेरिया और डेंगू की रोकथाम से जुड़े हर कदम उठाए लेकिन सिर्फ कागज़ों पर। खबर में लिखा है कि मच्छरों के पनपने पर बिफरा दिल्ली हाई कोर्ट, निगम को फटकार लगा कहा, कागजों पर ही दिख रही बाजीगरी। मतलब दिल्ली हाई कोर्ट ने ही कागजों पर इनकी चोरी पकड़ी।

फतेहाबाद आजीविका मिशन कार्यालय से रिकॉर्ड चोरी से जुड़ा मामला भी शक के घेरे में

सुशिल कुमार

फतेहाबाद। भ्रष्टाचार के मामले में सुर्खियों में रहे हरियाणा आजीविका मिशन फतेहाबाद पर शिकायतों का सिलसिला रुकने का नाम नही ले रहा है। अपराध नियंत्रण एव सुधार संघठन के एक सदस्य ने मुख्यमंत्री हरियाणा सरकार और आयोग को उक्त मामले की सख्त जांच के लिए शिकायते दी है और आरटीआई में सूचनाएं छुपाने और गलत सूचना देने के मामले को भी उजागर कर उच्च अधिकारियो के समक्ष रखा है। आजीविका मिशन फतेहाबाद कार्यालय से रिकॉर्ड चोरी और सीसीटीवी की डीवीआर गायब होने से संबंधित मामला भी शक के घेरे में आया है, जिसमे हाल ही के तैनात कर्मचारियों और अधिकारियों के शामिल होने का अंदेशा है। भास्कर

रिपोर्ट अनुसार इंचार्ज व डीपीएम फतेहाबाद से सतबीर द्वारा दी गई शिकायत पर रिकॉर्ड चोरी मामले में पुलिस द्वारा जांच को भी अभी तक आगे नही बढ़ाया गया। आरटीआई कार्यकर्त्ता राकेश खैराती और वीरेंद्र का आरोप है आरटीआई में संबंधित विभाग सारी जानकारियां छुपा रहा है। भट्ठू कलां से बीपीएम द्वारा आरटीआई जानकारी में बताया गया है की एमसीआईपी यानी माइक्रो क्रेडिट निवेश प्लान भरने का कार्य एसएचजी के तीसरे सीसीएल लोन से किया जाता है और अभी तीसरा डोज सीसीएल (लोन) किसी का भी हुआ नही है। जबकि फतेहाबाद ब्लॉक के बीपीएम द्वारा एमसीआईपी का प्रयोग दूसरे सीसीएल लोन में ही किया गया है। जिससे ये बात तो साफ जाहिर होती है की बड़ा गोलमाल आजीविका मिशन फतेहाबाद ने किया है।पूर्व बीपीएम सुरजीत मेडल और अन्य की बर्खास्त की जांच दोबारा निष्पक्ष कराने और हाल ही में कार्यरत पदाधिकारियों के फर्जी अनुभव प्रमाण पत्रों की बारीकी से जांच के लिए शिकायत ग्रामीण विकास विभाग हरियाणा अतिरिक्त मुख्य सचिव को भेजी गई है। ह्यूमन राइट्स कार्यकर्ता कोमल ने भी आजीविका मिशन से जुड़ी गरीब ग्रामीण महिलाओ के हक और अधिकारों से हो रहे खिलवाड़ के लिए उच्च स्तरीय जांच की मांग की है।

जिला मंदसौर संपादक संघ का भव्य आयोजन

जिला अध्यक्ष शेख जफर कुरेशी ने पदभार ग्रहण किया

राजेंद्र योगी

मंदसौर जिला मंदसौर संपादक संघ के सालाना कार्यक्रम में जिलेभर से पधारे संपादक एवं पत्रकार उपस्थित रहे इस दौरान कार्यक्रम में पधारे अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर माँ सरस्वती का पूजन किया।

कार्यक्रम में प्रदेश भाजपा कार्यसमिति विशेष आमंत्रित सदस्य श्री राजेंद्र सिंह गौतम, प्रदेश कांग्रेस सचिव श्री ललित चंदेल, वरिष्ठ पत्रकार श्री मोहन रामचंदानी, वरिष्ठ पत्रकार श्री महावीर प्रकाश अग्रवाल, जिला प्रेस क्लब अध्यक्ष श्री बृजेश जोशी, जिला प्रेस क्लब संरक्षक श्री नरेंद्र अग्रवाल, दैनिक प्रभात के श्री महावीर जैन ने अपने विचार प्रकट कर उपस्थित पत्रकारों का मार्गदर्शन किया एवं नवनिर्वाचित जिलाध्यक्ष शेख जफर कुरेशी को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। उद्बोधन के बाद वरिष्ठ पत्रकार श्री महावीर प्रकाश अग्रवाल ने नवनिर्वाचित जिलाध्यक्ष शेख जफर कुरेशी को शपथ एवं पदभार ग्रहण करवाया। सदन में उपस्थित संपादक एवं पत्रकारों ने नवनिर्वाचित जिलाध्यक्ष का गर्मजोशी से स्वागत किया। इसके बाद रैली के रूप में होटल रितु वन रेलवे स्टेशन रोड से गांधी चौराहा पहुंच कर जिलाध्यक्ष श्री कुरैशी ने गांधी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया इसके बाद होटल रितु वन पहुंचकर सभी ने सहभोज किया कार्यक्रम का संचालन श्री विपिन जोशी ने किया एवं आभार जिला मंदसौर संपादक संघ के संस्थापक श्री ओंकार सिंह ने माना इस अवसर पर जिलेभर से पधारे संपादक एवं पत्रकार साथियों का जिला अध्यक्ष शेख जफर कुरेशी ने आभार माना!

15 से 18 वर्ष की उम्र के विद्यार्थियों का वैक्सीनेशन कैंप आयोजित

सारांश जैन

अरिहंत उच्च माध्यमिक विद्या मंदिर गंगापुर सिटी में प्रधानाचार्य जगदीश प्रसाद जैन के निर्देशन से ओर चिकित्सा विभाग गंगापुर सिटी एवं C.H.A माधव प्रसाद, सलमान खान, जूनैद खान, पवन गौत्तम, राहुल जाट, अक्षय शर्मा के नेतृत्व में विद्यालय में 15 से 18 साल तक के बच्चों के लिए कोविड 19 टीकाकरण अभियान आयोजित किया गया। वैक्सीनेशन के अभियान में सभी विद्यार्थियों को वैक्सीन लगवाई गई एवं अध्यापक सारांश जैन ने बताया कि सभी विद्यार्थी कोविड-19 से संबंधित सभी नीति नियमों का पालन करें, मास्क लगाएं, सैनिटाइजर का प्रयोग करें और अपना एवं अपने परिवार जनों का ध्यान रखें सभी वैक्सीन जरूर लगवाएं और 15 से 18 वर्ष के बच्चे जिनके वैक्सीन नहीं लगी है वह वैक्सीन लगाएं और अपने आसपास सभी लोगों को वैक्सीन लगवाने के लिए प्रेरित करें ताकि इस महामारी से बचा जा सके और सावधानी रखें और सुरक्षित रहे। कार्यक्रम में अध्यापिका रंजना शर्मा, स्वदेश शुक्ला, राकेश सैनी, गोविंद सेन, कीर्ति गुप्ता, नंदिनी शर्मा, रईस खान आदि अध्यापक और अध्यापिका के सानिध्य में सभी 15 से 18 वर्ष की उम्र के विद्यार्थियों के लिए वैक्सीनेशन का कार्यक्रम संपन्न किया गया।

पीएम का 42,750 करोड़ के प्रोजेक्टों का तोहफा

अन्नू कुमारी

प्रधानमंत्री ने 42,750 करोड़ के प्रोजेक्टों का तोहफा पंजाब को दिया दिल्ली-अमृतसर-कटरा एक्सप्रेस वे के साथ कपूरथला और होशियारपुर को मेडिकल कॉलेज का नींव पत्थर रखेंगे। इसके बाद वह फिरोजपुर में चुनावी रैली को संबोधित करेंगे, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज पहली किसान आंदोलन खत्म होने के बाद पंजाब दौरे पर पहुँचे है वह फिरोजपुर में PGI के सैटेलाइट सेंटर समेत 42,750 करोड़ रुपए के प्रोजेक्टों का उद्घाटन करेंगे, जिसमें दिल्ली-अमृतसर-करा एक्सप्रेसवे के साथ पंजाब के कपूरथला और होशियारपुर जिले में मेडिकल कॉलेज का नींव पत्थर रखेंगे। इसके बाद वह फिरोजपुर में चुनावी रैली को संबोधित करेंगे।

मेडिकल कॉलेज : कपूरथला और होशियारपुर में लगभग 325 करोड़ रुपए की लागत से लगभग 100 सीटों की क्षमता वाले दो मेडिकल कॉलेज बनाए जायेंगे, इस योजना के तहत पंजाब के लिए 3 मेडिकल कॉलेज मंजूर किए गए हैं, जिनमें से मोहाली के लिए मंजूर किए कॉलेज में कामकाज पहले ही शुरू हो चुका है। PGI सैटेलाइट सेंटर : फिरोजपुर में 490 करोड़ रुपए से अधिक की लागत से 100 बिस्तरों वाला पीजीआई सैटेलाइट सेंटर बनाया जाएगा। यह सेंटर आंतरिक चिकित्सा,इंटरनल मेडिसिन, शल्य-चिकित्सा (जनरल सर्जरी), हड्डी रोग, प्लास्टिक सर्जरी, न्यूरोसर्जरी, प्रसूति एवं स्त्री-रोग, बाल चिकित्सा, नेत्र-रोग, कान, नाक एवं गला रोग और मनोरोग चिकित्सा–नशा मुक्ति आदि में सेवाएं प्रदान करेगा। अमृतसर-ऊना फोर लेन : लगभग 1700 करोड़ रुपए की लागत से अमृतसर-ऊना रोड को फोर लेन बनाया जाएगा। कुल 77 किलोमीटर लंबी यह रोड उत्तरी पंजाब और हिमाचल प्रदेश के बीच अमृतसर से भोटा कॉरिडोर का हिस्सा है, जो चार प्रमुख नेशनल हाईवे यानी अमृतसर-बठिंडा-जामनगर आर्थिक कॉरिडोर, दिल्ली-अमृतसर-कटरा एक्सप्रेस-वे, उत्तर-दक्षिण कॉरिडोर और कांगड़ा-हमीरपुर-बिलासपुर-शिमला कॉरिडोर– को जोड़ता है। यह रोड श्री हरगोबिंदपुर और पुलपुक्ता शहर प्रसिद्ध गुरुद्वारा पुलपुक्ता साहिब का स्थान में स्थित धार्मिक स्थलों के लिए आवागमन को बेहतर करने में मदद करेगा। मुकेरियां-तलवाड़ा रेलवे लाइन : 410 करोड़ रुपए से अधिक की लागत से मुकेरियां और तलवाड़ा के बीच बनने वाली लगभग 27 किलोमीटर लंबी एक नई ब्रॉड गेज रेलवे लाइन बनेगी। इससे इस इलाके में सभी मौसम में आवागमन लायक परिवहन का साधन उपलब्ध होगा। यह मुकेरियां में मौजूदा जालंधर-जम्मू रेलवे लाइन से जुड़कर जम्मू एवं कश्मीर के लिए एक वैकल्पिक मार्ग के रूप में काम करेगी। इससे पंजाब के होशियारपुर और हिमाचल प्रदेश के ऊना के लोगों को फायदा होगा।

बिहार मंत्रालय पंहुचा कोरोना का कहर: जदयू के अध्यक्ष राजीव रंजन एवं दोनों डिप्टी सीएम समेत पांच मंत्री भी संक्रमित

मो अनीश

जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह, बिहार के दोनों उपमुख्यमंत्री तारकिशोर प्रसाद और रेणु देवी समेत चार मंत्री कोरोना संक्रमित पाए गए हैं। देश में जहां कोरोना संक्रमण की रफ्तार तेज हो गई है वहीं बिहार से एक बड़ी खबर सामने आ रही है। जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह, प्रदेश के उपमुख्यमंत्री तारकिशोर प्रसाद और रेणु देवी समेत पांच मंत्री कोरोना संक्रमित पाए गए हैं। मंत्रियों में सुनील कुमार, अशोक चौधरी और विजय चौधरी का नाम शामिल है। बताया जा रहा है कि बुधवार को बिहार कैबिनेट की बैठक होनी है।

संक्रमण की रिपोर्ट सामने आने के बाद ये सभी एहतियातन आइसोलेट हो गए हैं। सबसे चिंता की बात यह है कि कोरोना संक्रमित पाए गए डिप्टी सीएम तारकिशोर प्रसाद ने मंगलवार को जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह के साथ बाढ़ में आयोजित एक कार्यक्रम में शामिल हुए थे। इससे पहले बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी समेत उनके परिवार के कई सदस्य कोरोना की चपेट में आ गए थे। मांझी, उनकी पत्नी शांति देवी, बेटी पुष्पा मांझी, बहू दीपा मांझी, पीए गणेश पंडित समेत कुल 18 लोगों के कोरोना वायरस संक्रमित होने की पुष्टि हुई थी. इसके बाद ये सभी लोग आइसोलेट हो गए मांझी परिवार के सदस्यों और पीए के अलावा उनके सुरक्षागार्ड्स तक कोरोना की चपेट में आ गए।

सीएम नीतीश के करीबी अशोक चौधरी के कई परिजन भी कोरोना पॉजिटिव

सीएम नीतीश कुमार के करीबी और कैबिनेट के वरिष्ठ मंत्री अशोक चौधरी के साथ ही उनके कई परिजन भी कोरोना की चपेट में आ गए हैं। ऐसे में सभी तत्काल आइसोलेट और क्वारंटीन हो गए हैं। बिहार सरकार ने कोरोना के बढ़ते मामलों के कारण मुख्यमंत्री का 'जनता दरबार' और 'समाज सुधार अभियान' के सभी कार्यक्रम रद्द कर दिए हैं।

चरम सीमा पर गांजे का अवैध कारोबार

अजीम खान

बदायूं/सहसवान। नगर के मोहल्ला पठान टोला स्थित ईदगाह के पास, अकबराबाद शाहबाजपुर में जमकर हो रहा है सुल्फा, गांजा, चरस का अवैध कारोबार। बताते चलें गरीब तबके के एवं नौजवान छात्र प्रतिदिन लाखों रुपए का सुल्फा चरस गांजा के शिकार होती दिखाई दे रहे हैं। यहां के लोग कुछ लोगों ने दबी जुबान से बताया की वह बेरोजगारी के दौर से गुजर कर भी चरस गांजा सुल्फा लेकर नशा करने में चूर है उनके परिवार में आए दिन झगड़े फसाद होना आम बात है वहीँ बच्चों के खाने के लिए लाले पड़े हुए हैं लेकिन चरस गांजा सुल्फा का सेवन करने वाले लोग अपने परिवार को दरकिनार करते नजर आते दिखाई देते हैं। लेकिन परिवारिक

नौजवान एवं गरीब तबके के लोग हो रहे इसका शिकार घरों में होते हैं रोज झगड़े प्रभारी निरीक्षक ने दिए जांच कराकर कार्रवाई के आदेश

रिश्तो की मिठास इस अवैध कारोबार से एक दूसरे को अलग करने के लिए काफी है। कुछ विश्वसनीय सूत्रों से पता लगा है कि इसमें कुछ पुलिसकर्मियों की भी भूमिका संदिग्ध नजर आती है जिसके चलते इन चरस माफियाओं के खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो सकी है इस बाबत प्रभारी निरीक्षक संजीव शुक्ला से वार्ता की गई तो उन्होंने बताया अगर इस तरह का अवैध कारोबार हो रहा है तो उनके खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई कर दंडित किया जाएगा।

संपादकीय

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव कांग्रेस के लिए अग्निपरीक्षा की तरह हैं

पिछले दो लोकसभा चुनावों के बाद जिस प्रकार की राजनीतिक तस्वीर निर्मित हुई है, उससे यही परिलक्षित होता है कि देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस बहुत बड़ी और कठिन परीक्षा के दौर से गुजर रही है। अब देश के पांच राज्यों में विधानसभा चुनावों की कवायद चल रही है। इन राज्यों में कांग्रेस की वर्तमान हालात परिस्थिति के ऐसे भंवर में गोता लगा रही है, जहां से वह अपनी राजनीतिक स्थिति में सुधार कर पाएगी, यह असंभव-सा ही लगता है। असंभव इसलिए भी कहा जा सकता है कि देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में पहले से ही कांग्रेस की स्थिति ठीक नहीं है। और फिर वर्तमान के भाजपा शासन से उत्तर प्रदेश की भुक्तभोगी जनता बहुत ही संतुष्ट दिखाई दे रही है। ऐसा हम नहीं कह रहे, बल्कि वह जनता कह रही है जो पिछले शासन में दबंगई से परेशान थी। केवल दबंग ही नहीं, बल्कि प्रशासन के आला अधिकारी भी राजनीतिक संरक्षण प्राप्त करके अपनी मनमानी करती थी, जिसका खामियाजा सीधे तौर पर उत्तर प्रदेश की उस जनता को भुगतना पड़ता था जो बहुत ही संस्कारित भाव और ईमानदारी के साथ जीवन यापन करती थी। कौन नहीं जानता कि आज उत्तर प्रदेश के बड़े-बड़े दबंग महारथी या तो रास्ते पर आ गए हैं या फिर सुरक्षित स्थान पर पहुंचकर शांत भाव से प्रदेश की योगी सरकार की कार्यशैली को बिना किसी ना नुकुर के देख रहे हैं। कांग्रेस की विसंगति यह है कि आज के परिदृश्य में उसके साथ मिलकर कम से कम उत्तर प्रदेश में तो कोई भी दल चुनाव लड़ना नहीं चाहता, क्योंकि पिछले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने बड़ा सपना दिखाते हुए समाजवादी पार्टी को सत्ता सुख से वंचित कर दिया। अखिलेश यादव के सीने में यह टीस गाहे बगाहे उठती ही होगी। दूसरी बड़ी बात यह भी है कि गांधी परिवार की विरासती पृष्ठभूमि से राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने वाली श्रीमती प्रियंका वाड्रा भी वैसा राजनीतिक प्रभाव नहीं छोड़ पाईं, जैसी उम्मीद की जा रही थी। इसमें कांग्रेस के कमजोर होने एक प्रामाणिक तथ्य यह भी है कि राहुल गांधी ने अपने परिवार की परंपरागत सीट अमेठी का परित्याग कर केरल की राजनीतिक पिच पर अपना खेल खेला। हालांकि राहुल गांधी ने अमेठी से चुनाव अवश्य लड़ा, लेकिन भाजपा की ओर पूरी तैयारी करके जो चुनौती दी, राहुल गांधी उस चुनौती को स्वीकार करने की स्थिति में दिखाई नहीं दिए और अमेठी से शर्मनाक पराजय का सामना करना पड़ा। जहां तक उत्तर प्रदेश के साथ ही पंजाब राज्य की बात करें तो वहां पिछले छह महीने पहले जो राजनीतिक दृश्य दिखाई देता था, आज का दृश्य उसके एकदम उलट है। पहले जो कैप्टन अमरिंदर सिंह कांग्रेस की एक छत्र कमान संभाले थे, आज वे कांग्रेस के लिए ही चुनौती बनकर राजनीतिक मैदान में हैं। यह भी लगभग तय ही हो गया है कि वे भाजपा के साथ दोस्ती करके चुनाव लड़ेंगे। इससे यह लगने लगा है कि भाजपा और कैप्टन अमरिंदर सिंह को भले ही लाभ न मिले, लेकिन कांग्रेस का रसातल की ओर जाना तय-सा लग रहा है। पंजाब में आम आदमी पार्टी सत्ता बनाने लायक अपनी स्थिति मानकर चल रही थी, लेकिन अब उसके सपने पूरे होंगे या नहीं, संशय की स्थिति है। पंजाब में अब राजनीतिक महत्वाकांक्षा पालकर किसान आंदोलन करने वाले 22 किसान संगठनों ने सभी सीटों पर चुनाव लड़ने का ऐलान कर दिया है। इस मोर्चा ने जोर दिखाया तो सबके सपने धूमिल भी हो सकते है, लेकिन फिलहाल यह संभव नहीं लगता। जब से कांग्रेस ने पराभव की ओर कदम बढ़ाने प्रारंभ किए हैं, उस दिन के बाद न तो कांग्रेस में अपनी स्थिति सुधारने की दिशा में कोई प्रयत्न हुए हैं और न ही ऐसा कोई प्रयास ही किया गया है। इसका मुख्य कारण यह भी माना जा रहा है कि केंद्रीय स्तर पर कांग्रेस का कोई ऐसा राजनेता नहीं है जो प्रादेशिक क्षत्रपों को नियंत्रित करने का सामर्थ्य रख सके। इसको लेकर कांग्रेस में अंदर ही अंदर लावा सुलग रहा है, जिसकी हल्की-सी चिंगारी ने ही कांग्रेस को कमजोर किया है, लेकिन भविष्य में कांग्रेस के अंदर बड़े विस्फोट की भी आशंका निर्मित होने लगी है। आज कांग्रेस के दिग्गज नेता असहज महसूस करने लगे हैं। वरिष्ठ नेता के रूप में पहचान बनाने वाले आज मायूस हैं। वे कभी खुलकर बगावत करने की स्थिति में दिखाई देते हैं तो कभी अपने प्रति होने वाली उपेक्षा से दुखी दिखाई देते हैं। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जयराम रमेश ने एक बार अपना दुख प्रकट करते हुए कहा था कि अब कांग्रेस में वरिष्ठों के दिन समाप्त हो चुके हैं। राहुल गांधी जैसा चाहते हैं वैसा ही हो रहा है। इतना ही नहीं कई राजनेता पार्टी के पूर्णकालिक अध्यक्ष की मांग भी कई बार कर चुके हैं। यह मुद्दा लोकसभा चुनाव के बाद भी बहुत जोरशोर से उठा था, लेकिन इस मांग को राष्ट्रीय नेतृत्व ने दरकिनार कर दिया। जिसका खामियाजा कांग्रेस को असंतोष के रूप में भोगना पड़ रहा है, अब आगे क्या होगा, यह भविष्य के गर्भ में है, लेकिन यह अवश्य ही कहा जा सकता है कि कांग्रेस की भविष्य की राह आसान नहीं है। वस्तुतः वर्तमान समय को कांग्रेस के लिए अग्निपरीक्षा निरूपित किया जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। क्योंकि जिन पांच राज्यों में विधानसभा चुनावों की तैयारी चल रही है, उनमें उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, गोवा और मणिपुर हैं। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य को देखकर यही लगता है कि उत्तर प्रदेश में कांग्रेस वैसा चमत्कार करने की स्थिति में नहीं है, जिसकी उसके नेता विरासती पृष्ठभूमि से राजनेता बनी प्रियंका वाड्रा से आशा कर रहे थे। उत्तराखंड में भी हालात इससे कम नहीं हैं। पंजाब में घमासान चल ही रहा है। वास्तव में इन सब बातों को सुधारने के लिए कांग्रेस को लोकतांत्रिक पद्धति से अपने प्रभावी नेताओं के दुख को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। इसके अलावा लोकसभा चुनाव में मिली असफलता के बाद कांग्रेस के नेताओं को अपनी दशा सुधारने के लिए आत्ममंथन भी करना चाहिए था, लेकिन नहीं किया गया। पांच राज्यों के चुनाव कांग्रेस के लिए किस प्रकार की स्थिति निर्मित करेंगे, यह अभी देखने का समय है।

सर्वेक्षण तो यूपी में भाजपा की सरकार बनवा रहे हैं, परन्तु हकीकत क्या है?

संजय सक्सेना

समाजवादी पार्टी भाजपा को टक्कर तो दे रही है, लेकिन सत्ता में आने में कामयाब होती नहीं दिख रही है। तमाम सर्वेक्षणों का निचोड़ निकाला जाए तो इस वर्ष होने वाले विधानसभा चुनाव में 403 सीटों वाली यूपी विधानसभा में बीजेपी 230 से 249 सीटें जीत सकती है।

उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव की घड़ी लगातार नजदीक आती जा रही है। हफ्ते-दस दिन में चुनाव की घोषणा के साथ ही प्रदेश में आचार संहिता भी लग जाएगी। 14 मार्च तक 18वीं विधान सभा का गठन हो जाना है। समय के साथ तमाम पार्टियों में प्रचार के साथ-साथ प्रत्याशियों के चयन की प्रक्रिया भी तेजी पकड़ती जा रही है। टिकट के लिए दावेदारों में सबसे अधिक मारामारी भाजपा और समाजवादी पार्टी के भीतर दिखाई दे रही है। पहली बार बसपा में टिकट के इच्छुक नेताओं की संख्या काफी कम नजर आ रही है, उससे भी खराब स्थिति कांग्रेस की है। प्रियंका गांधी वाड्रा की लाख कोशिशों के बाद भी पार्टी को तमाम विधान सभा सीटों पर जिताऊ उम्मीदवार नहीं मिल पा रहे हैं। इसके अलावा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय लोकदल के भीतर भी टिकट के लिए नेताओं के बीच काफी गहमागहमी नजर आ रही है। सभी दलों का शीर्ष आलाकमान प्रत्याशी चयन के लिए उम्मीदवार की योग्यता, जातीय गणित से लेकर क्षेत्रीय समीकरण भी देख रहे हैं। चुनाव तारीखों के ऐलान से पहले ही प्रचार अभियान बेहद तेज हो चुका है। ऐसे में बड़ा सवाल यह है कि यूपी की जनता का मूड क्या है? यूपी में क्या किसी एक पार्टी की दो बार सरकार नहीं बनने के इतिहास को ठेंगा दिखाते हुए एक बार फिर योगी मुख्यमंत्री बनेंगे या अखिलेश यादव की पांच वर्ष के बाद सत्ता से वापसी होगी। बसपा सुप्रीमो मायावती या फिर कांग्रेस की महासचिव और यूपी की प्रभारी प्रियंका गांधी वाड्रा उनसे (योगी से) सत्ता छीनने में कामयाब रहेंगे? तमाम सर्वेक्षणों पर नजर दौड़ाई जाए तो कयास यही लगाए जा रहे हैं कि यूपी में एक बार फिर बीजेपी की सरकार बनने जा रही है। समाजवादी पार्टी भाजपा को टक्कर तो दे रही है, लेकिन सत्ता में आने में कामयाब होती नहीं दिख रही है। तमाम सर्वेक्षणों का निचोड़ निकाला जाए तो इस वर्ष होने वाले विधानसभा चुनाव में 403 सीटों वाली यूपी विधानसभा में बीजेपी 230 से 249 सीटें जीत सकती है। वहीं, समाजवादी पार्टी 137 से 144 सीटों पर कब्जा कर सकती है। बीएसपी और कांग्रेस के प्रदर्शन में इस बार भी सुधार होता नहीं दिख रहा है। सर्वे के नतीजे कहते हैं कि मायावती की पार्टी जहां 9-14 सीटों पर सिमट सकती है तो कांग्रेस को महज 4-6 सीटें मिलने की भविष्यवाणी की जा रही है। यह जरूर है कि पूरे प्रदेश में एक की बयार नहीं बह रही है, कहीं बीजेपी अच्छी स्थिति में नजर आ रही है तो कहीं समाजवादी पार्टी भारी पड़ रही है। तमाम चुनाव सर्वे के अनुसार उत्तर प्रदेश में बीजेपी को 38.6 फीसदी वोट मिल सकते हैं तो समाजवादी पार्टी 34.4 फीसदी वोट पाती दिख रही है। बसपा को 14.1 फीसदी तो कांग्रेस को 6.1 फीसदी वोट मिलने का अनुमान है। वहीं अन्य के खाते में 6.8 फीसदी वोट जा सकते हैं। ऐसा लग रहा है कि ज्यों ज्यों चुनाव की तारीख नजदीक आ रही है त्यों त्यों भाजपा के प्रति वोटरों की नाराजगी कम होती जा रही है। इसकी एक वजह यह भी है कि योगी सरकार ने पिछले एक-डेढ़ वर्ष में जनता के लिए सरकारी खजाना पूरी तरह से खोल दिया है। वोटर नहीं चाहते हैं कि किसी और को वोट देकर वह इस खजाने का रूख किसी और तरफ मोड़ दें। खैर, पूरे प्रदेश के चुनाव की स्थितियों का अलग-अलग आकलन किया जाए तो सबसे दिलचस्प स्थिति पश्चिम यूपी की है। यहां समाजवादी पार्टी को फायदा है लेकिन बीजेपी भी ज्यादा पीछे नहीं नजर आ रही है। मतलब किसान आंदोलन और किसानों की नाराजगी के चलते बीजेपी को जितना नुकसान सोचा जा रहा था, उसे उतना नुकसान नहीं हो रहा है। सर्वे के मुताबिक, पश्चिम उत्तर प्रदेश में 2017 के चुनाव के मुकाबले समाजवादी पार्टी का प्रदर्शन बेहतर रह सकता है। लेकिन बीजेपी अब भी यहां सबसे अधिक सीटें जीतती दिख रही है। पश्चिमी यूपी की 97 सीटों में बीजेपी 57-60 जीत सकती है तो समाजवादी पार्टी 35-30 सीटों पर जीत हासिल कर सकती है। बसपा को यहां 0-1 और कांग्रेस को 1-2 सीटें मिलने की संभावना है। पश्चिम यूपी को लेकर सर्वे के नतीजे इसलिए भी दिलचस्प हैं, क्योंकि यूपी के इसी हिस्से में किसान आंदोलन का सबसे अधिक असर था। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या कृषि कानूनों की वापसी के बाद किसानों की नाराजगी पूरी तरह खत्म हो गई है। बुंदेलखंड में भी बीजेपी की स्थिति बेहतर नजर आ रही है। सर्वे के अनुसार बुंदेलखंड की करीब 18 सीटों में बीजेपी को 14-15 तो समाजवादी पार्टी को 3-5 सीटें मिलने का अनुमान है। बसपा को यहां पर एक सीट मिल सकती है तो कांग्रेस का यहां खाता खुलता नहीं दिख रहा है। इसी तरह से रुहेलखंड में बीजेपी 30-36 सीटों पर जीत हासिल कर सकती है तो समाजवादी पार्टी के खाते में 17-18 सीटें जा सकती हैं। बीएसपी को 1-2 तो कांग्रेस को 1 सीट मिल सकती है। अवध क्षेत्र में बीजेपी 57-65 सीटें जीत सकती है तो समाजवादी पार्टी यहां 31-33 सीटों पर कब्जा कर सकती है। सर्वे के मुताबिक, बीएसपी को 3 सीटें मिल सकती है तो कांग्रेस 2-3 सीटों पर जीत हासिल कर सकती है। यहां 1 सीट अन्य के खाते में भी जा सकती है। मध्य यूपी की बात करें तो यहां की 35 सीटों में से बीजेपी को 17-21 सीटें, तो समाजवादी पार्टी को 12-13 सीटें मिल सकती है। बीएसपी एवं कांग्रेस और अन्य के खाते में 0-1 सीटें रह सकती हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बाद पूर्वांचल से भी समाजवादी पार्टी को काफी उम्मीदे हैं। यहां कुल 102 विधानसभा सीटें हैं। पूर्वांचल की वाराणसी सीट से ही प्रधानमंत्री मोदी लोकसभा चुनाव जीत कर जाते हैं। गोरखपुर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का गढ़ है। यहां मोदी की प्रतिष्ठा सबसे अधिक दांव पर लगी है। सर्वे के नतीजे बताते हैं कि बीजेपी यहां 49-58 सीटें जीत सकती है तो समाजवादी पार्टी भी यहां 39 से 45 सीटें जीतती दिख रही है। बीएसपी को यहां 5-6 सीटें मिल सकती हैं तो कांग्रेस का यहां भी खाता खुलता नहीं दिख रहा है। यूपी चुनाव में 'आप' (आम आदमी पार्टी) और ओवैसी की पार्टी वोट कटवा ही नजर आ रही हैं। यह दोनों दल किसको कितना नुकसान पहुंचाएंगे इसका पता नतीजे आने के बाद चलेगा। इसी प्रकार से भीम आर्मी बसपा के लिए नुकसानदायक साबित हो रही है। बात आम आदमी पार्टी की कि जाए तो उसके पास कोई ऐसा चेहरा ही नहीं है जिसे वह यूपी में सीएम के रूप में आगे कर सके। कहने को संजय सिंह की यूपी की जिम्मेदारी दी गई है, लेकिन उनकी स्वयं की ही छवि विवादों से घिरी है, इसके चलते आप को वह कोई खास फायदा नहीं पहुंचा पा रहे हैं। फिर भी फ्री की राजनीति करने में माहिर अरविंद केजरीवाल ने वोटरों को कई तरह के लालच जरूर दे रखे हैं।

नेता रैलियां करें और जनता कोरोना प्रोटोकाल का पालन

यदि चुनावी रैलियों में सभी राजनीतिक दलों द्वारा इसी प्रकार भारी भीड़ जुटाई जाती रही तो डर यही है कि कहीं फिर से वही हालात न पैदा हों, जैसे मार्च-अप्रैल में चुनाव प्रचार के लिए रैलियों में जुटाई गई भारी भीड़ के चलते हुए थे।

योगेश कुमार गोयल

देश में ओमिक्रॉन के लगातार बढ़ते मामलों से दहशत का माहौल बनने लगा है। लगभग तमाम विशेषज्ञ इसी की वजह से बढ़ रहे मामलों को देखते हुए फरवरी माह में तीसरी लहर की भविष्यवाणी करने लगे हैं। ऐसे में पहले से ही रोजी-रोटी के संकट से जूझ रहे करोड़ों लोगों को स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के साथ-साथ एक और लॉकडाउन लगने का डर अभी से सताने लगा है। दरअसल चंद दिनों में ही ओमिक्रॉन के देशभर में 700 से भी ज्यादा मरीज सामने आ चुके हैं और यह आंकड़ा प्रतिदिन तेजी से बढ़ रहा है। इसी के चलते कुछ राज्यों द्वारा 'नाइट कर्फ्यू' लगाए जाने की शुरुआत हो चुकी है। हालांकि ओमिक्रॉन को लेकर सरकार द्वारा स्पष्ट कर दिया गया है कि इसमें ऑक्सीजन की जरूरत कम ही है लेकिन जिस प्रकार कई देशों में कोरोना संक्रमण की रफ्तार बढ़ाने वाला कोरोना का ओमिक्रॉन वेरिएंट डेल्टा से ताकतवर रूप में सामने आ रहा है, उससे तीसरी लहर की भविष्यवाणियों को लेकर चिंता का माहौल बनना स्वाभाविक ही है।

इन परिस्थितियों के मद्देनजर इससे निपटने के लिए समय रहते केन्द्र तथा राज्य सरकारों द्वारा प्रभावी उपाय किए जाने की सख्त आवश्यकता है। 24 नवम्बर 2021 को जहां ओमिक्रॉन का पहला मामला दक्षिण अफ्रीका में सामने आया था, वहीं भारत सहित पूरी दुनिया में केवल एक महीने के अंदर ही यह 110 से भी ज्यादा देशों में फैल चुका है और इस एक महीने में दुनियाभर में इस वेरिएंट के लाखों मामले सामने आ चुके हैं। ओमिक्रॉन फैलने की रफ्तार के आंकड़ों पर नजर डालें तो दक्षिण अफ्रीका में कोरोना संक्रमण के 95 फीसदी मामलों की प्रमुख वजह ओमिक्रॉन ही है। ब्रिटेन में जहां 29 नवम्बर तक ओमिक्रॉन के 0.17 फीसदी मामले सामने आ रहे थे, वहीं 23 दिसम्बर तक इसके 38 फीसदी मामले दर्ज किए गए। यही हाल अमेरिका का भी है, जहां ओमिक्रॉन की वजह से संक्रमण दर में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है और 22 दिसम्बर तक हर चौथा मामला ओमिक्रॉन की वजह से ही सामने आ रहा है। भारत में भी यह संक्रमण फैलने की रफ्तार काफी तेज हो गई है। दुनियाभर में फैलते ओमिक्रॉन के कहर को लेकर चिंताजक स्थिति यह है कि इसमें अब तक कुल 53 म्यूटेशन हो चुके हैं और यह डेल्टा के मुकाबले बहुत तेजी से फैलता है। डेल्टा में कुल 18 और इसके स्पाइक प्रोटीन में दो म्यूटेशन हुए थे लेकिन ओमिक्रॉन के स्पाइक प्रोटीन में 32 म्यूटेशन हो चुके हैं जबकि इसके रिसेप्टर बाइंडिंग डोमेन में भी 10 म्यूटेशन हो चुके हैं। वायरस स्पाइक प्रोटीन के जरिये ही मानव शरीर में प्रवेश करता है। लंदन के इंपीरियल कॉलेज के वायरोलॉजिस्ट डॉ. टोम पीकॉक के मुताबिक वायरस में जितने ज्यादा म्यूटेशन के जरिए वेरिएंट बनेगा, वह उतना ही अधिक प्रभावशाली होगा और ऐसा वेरिएंट हमें ज्यादा नुकसान पहुंचाएगा। विश्व स्वास्थ्य संगठन ओमिक्रोन को कई दिनों पहले ही 'वेरिएंट ऑफ कंसर्न' घोषित करते हुए कह चुका है कि तेजी से फैलने वाला यह वेरिएंट लोगों के लिए काफी खतरनाक साबित हो सकता है। यूके स्वास्थ्य सुरक्षा एजेंसी के मुख्य चिकित्सा सलाहकार डॉ. सुसान हॉपकिंस का कहना है कि कोरोना का यह वेरिएंट दुनियाभर में प्रमुख डेल्टा स्ट्रेन सहित अन्य किसी भी वेरिएंट के मुकाबले बदतर होने की क्षमता रखता है। विशेषज्ञों के अनुसार डेल्टा वेरिएंट की आर वैल्यू 6-7 थी अर्थात एक व्यक्ति वायरस को 6-7 व्यक्तियों में फैला सकता है जबकि ओमिक्रॉन की आर वैल्यू डेल्टा के मुकाबले करीब छह गुना ज्यादा है, जिसका अर्थ है कि ओमिक्रॉन से संक्रमित मरीज 35-45 लोगों में संक्रमण फैलाएगा।

भारत में ओमिक्रॉन का पहला मामला 2 दिसम्बर को सामने आया था और उसके बाद से मूल वायरस के मुकाबले तीन गुना से भी ज्यादा तेज रफ्तार से फैल रहा है। दक्षिण अफ्रीका में ओमिक्रॉन का सबसे पहले पता लगाने वाली 'साउथ अफ्रीकन मेडिकल एसोसिएशन' की अध्यक्ष डॉ. एंजेलिक कोएत्जी का भारत के संदर्भ में कहना है कि कोरोना वायरस के इस नए वेरिएंट के कारण यहां संक्रमण के मामलों में बढ़ोतरी दिखेगी लेकिन मौजूदा टीकों से इस रोग को फैलने से रोकने में निश्चित ही मदद मिलेगी किन्तु टीकाकरण नहीं कराने वाले लोगों को शत-प्रतिशत खतरा है। यही वजह है कि इस समय टीकाकरण पर बहुत ज्यादा जोर दिया जा रहा है और बहुत सारी सेवाओं में टीकाकरण प्रमाण पत्र को अनिवार्य किया जा रहा है। एंजेलिक कोएत्जी का कहना है कि यदि किसी व्यक्ति का टीकाकरण हो चुका है या जो व्यक्ति पहले भी कोरोना वायरस से संक्रमित हो चुका है, उससे संक्रमण कम लोगों को फैलेगा और टीकाकरण नहीं कराने वाले लोग वायरस को संभवतः शत-प्रतिशत फैलाएंगे। डॉ. एंजेलिक कोएत्जी के मुताबिक ओमिक्रॉन उच्च संक्रमण दर के साथ तेजी से फैल रहा है, लेकिन अस्पतालों में गंभीर मामले अपेक्षाकृत कम हैं। यह बच्चों को भी संक्रमित कर रहा है और वे भी औसतन 5 से 6 दिन में ठीक हो रहे हैं लेकिन ओमिक्रॉन भविष्य में अपना स्वरूप बदलकर अधिक घातक बन सकता है, इसलिए बेहद सतर्क, सावधान और सुरक्षित रहने की आवश्यकता है।

हिंदुत्व की राजनीति में भाजपा टॉपर भले है लेकिन और दलों के नेता भी अच्छे अंक लाते रहे हैं

नीरज कुमार दुबे

अखिलेश हिंदुत्व की राजनीति में भाजपा का मुकाबला करने की तैयारी कर चुके हैं लेकिन सवाल यह है कि ऐसा करने से कहीं उनका मुस्लिम वोटबैंक तो नहीं छिटक जायेगा? विशेषज्ञों की मानें तो ऐसा होने की संभावना नहीं है क्योंकि अखिलेश जानते हैं कि मुस्लिम वोटबैंक पूरी तरह उनके साथ खड़ा है। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव जैसे-जैसे नजदीक आ रहे हैं मथुरा राजनीति का केंद्रबिंदु बनता जा रहा है। भाजपा नेता ही नहीं स्वयं मुख्यमंत्री भी मथुरा का मुद्दा उठा रहे हैं। ऐसे में अब समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव ने भी कह दिया है कि भगवान श्रीकृष्ण उन्हें रोज सपने में आकर बताते हैं कि इस बार उनकी सरकार बनने जा रही है। अखिलेश यादव ने तो कुछ समय पहले यहां तक भी कहा था कि यदि अयोध्या मामले में फैसला आने के समय उनकी सरकार रही होती तो अब तक अयोध्या में राममंदिर बन भी गया होता। यही नहीं अखिलेश यादव ने गत रविवार को लखनऊ में गोसाईगंज के पास स्थित महुराकलां गांव में नवनिर्मित भगवान परशुराम मंदिर में पूजा अर्चना भी की थी। इससे पहले जब पिछले साल हरिद्वार में कुंभ लगा था तब उसमें भी अखिलेश यादव गये थे। यही नहीं अखिलेश यादव जब-तब संतों का आशीर्वाद ले रहे हैं। साफ है कि अखिलेश यादव हिंदुत्व की राजनीति में भाजपा का मुकाबला करने की तैयारी कर चुके हैं लेकिन सवाल यह है कि ऐसा करने से कहीं उनका मुस्लिम वोटबैंक तो नहीं छिटक जायेगा? विशेषज्ञों की मानें तो ऐसा होने की संभावना नहीं है क्योंकि अखिलेश यादव जानते हैं कि मुस्लिम वोटबैंक पूरी तरह उनके साथ खड़ा है। मुस्लिमों ने जैसे तमाम विकल्पों के बावजूद पश्चिम बंगाल में भाजपा को हराने के लिए तृणमूल कांग्रेस नेता ममता बनर्जी का साथ दिया उसी तरह उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में भी एकमुश्त तरीके से मुस्लिम वोट समाजवादी पार्टी और उसके गठबंधन सहयोगियों को ही पड़ने जा रहा है। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में भले असदुद्दीन ओवैसी कितनी रैलियां कर लें, भले अन्य पार्टियों के मुस्लिम नेता कितने वोट मांग लें, भले अल्पसंख्यकों के लिए केंद्र सरकार की ओर से किये गये कार्यों को कितना ही गिनाया जाये, लेकिन याद रखिये जब मतदान का वक्त आयेगा तब मुस्लिमों का वोट सपा और उसके गठबंधन सहयोगियों को ही पड़ेगा। अपनी बात को वजन देने के लिए आपको जरा पश्चिम बंगाल में हुए चुनाव प्रचार की याद दिलाते हैं। उस समय ममता बनर्जी रैलियों में जिस तरह चंडी पाठ कर रही थीं उसको देखते हुए मीडिया के एक वर्ग में माना जा रहा था कि अल्पसंख्यक वर्ग का वोट उनसे छिटक सकता है। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। ममता को अपने वोटबैंक पर विश्वास था जिसके चलते मुस्लिमों का वोट तो उन्हें मिला ही साथ ही जिस तरह हिन्दुत्व की राजनीति में उन्होंने भाजपा का मुकाबला किया उससे हिंदुओं के वोट भी बड़ी संख्या में उन्हें मिले। अखिलेश यादव ठीक ममता बनर्जी की तर्ज पर आगे बढ़ रहे हैं। उन्हें अपने मुस्लिम वोटबैंक पर विश्वास है और अब वह हिंदू खासकर सवर्ण वोटरों को भी आकर्षित करने में जुटे हैं। तभी तो आत्मविश्वास में भरकर अखिलेश दावा कर रहे हैं कि स्वयं भगवान श्रीकृष्ण आकर उन्हें कह रहे हैं कि इस बार उनकी सरकार बनने जा रही है। दूसरी ओर जहां तक मथुरा पर हो रही राजनीति की बात है तो मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कह चुके हैं कि अयोध्या में भव्य राम मंदिर और काशी में विश्वनाथ धाम का भव्य निर्माण शुरू हो चुका है ऐसे में 'मथुरा वृंदावन कैसे छूट जाएगा।' देखना होगा कि मथुरा का मुद्दा गर्माने का भाजपा को कितना चुनावी लाभ होता है।

NCR समाचार

संपादकीय कार्यालय

जी-12/276, संगम विहार, नई दिल्ली-110062. सोमवार से शनिवार प्रातः 9:00 से सायं 9:00

फोन: 8888833968, 9811111715

आवश्यक सूचना

एनसीआर समाचार के समस्त पाठकों तथा पत्र के साथ जुड़े समस्त पत्रकारों, व्यावसायिक संयोजक, सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं/संस्थानों को यह सूचित किया जाता है कि गत वर्षों से श्री बलबीर सिंह के नेतृत्व व स्वामित्व में चले आ रहे वर्तमान एनसीआर समाचार पत्र का प्रकाशन व स्वामित्व मो. हनीफ, पुत्र श्री इस्माईल खान मास्टरजी, संगम विहार के स्वामित्व व नेतृत्व में हो रहा हैं। अतः भविष्य में समस्त प्रकार की व्यावसायिक, कानूनी एवं सामाजिक गतिविधियों के संचालन हेतु मो. हनीफ/ नये कार्यालय जी 12/276, संगम विहार, नई दिल्ली - 110062, दूरभाष (मोबाईल) 8888883968, 9811111715 से सम्पर्क करें

संक्षिप्त समाचार

सीएसबी बैंक के एमडी-सीईओ राजेंद्रन ने कार्यकाल पूरा होने से पहले सेवानिवृत्ति ली

नई दिल्ली, एजेंसी। सीएसबी बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) सी वी आर राजेंद्रन ने स्वास्थ्य कारणों से समय से पहले सेवानिवृत्ति लेने का निर्णय लिया है। उनके उत्तराधिकारी की तलाश के लिए बैंक एक समिति का गठन करेगा। सीएसबी बैंक ने शेयर बाजार को दी जानकारी में बताया कि बैंक के निदेशक मंडल ने आठ जनवरी, 2022 को हुई बैठक में सी वी आर राजेंद्रन के समयपूर्व सेवानिवृत्ति के अनुरोध पर विचार किया और इसे स्वीकार कर लिया। इसमें बताया गया कि निदेशक मंडल ने राजेंद्रन से अनुरोध किया है कि वह 31 मार्च, 2022 तक अपने पद पर बने रहें। उन्हें नौ दिसंबर, 2016 को बैंक का एमडी एवं सीईओ बनाया गया था और उनका कार्यकाल आठ दिसंबर, 2022 तक है। बैंक ने बताया कि निदेशक मंडल ने एमडी और सीईओ पद के लिए उम्मीदवार की खोज को एक समिति के गठन का फैसला किया है।

बैंककर्मियों को भी दी जाए 'बूस्टर डोज', अग्रिम पंक्ति का कर्मचारी माना जाए: एआईबीओसी

नई दिल्ली, एजेंसी। पूरे देश में कोविड-19 संक्रमण के बढ़ते मामलों के बीच बैंक अधिकारियों के संगठन एआईबीओसी ने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से अपील की है कि एहतिहाती खुराक (बूस्टर डोज) देने के लिए बैंक कर्मचारियों को भी अग्रिम पंक्ति का कर्मचारी (फ्रंटलाइन वर्कर) माना जाए। अखिल भारतीय बैंक अधिकारी परिसंघ (एआईबीओसी) ने वित्त मंत्री को लिखे पत्र में सुझाव दिया कि वायरस के संक्रमण की श्रृंखला को तोड़ने के लिए बैंकों को सप्ताह में पांच दिन खोला जाए। पत्र में यह आग्रह भी किया गया कि सभी शाखाओं या कार्यालयों में केवल 50 प्रतिशत कर्मचारियों की प्रत्यक्ष उपस्थित होनी चाहिए, और बाकी कर्मचारियों को घर से काम करने की अनुमति दी जाए। एआईबीओसी ने बैंक कर्मचारियों को उपनगरीय रेलवे सेवाओं सहित सार्वजनिक परिवहन का लाभ उठाने के लिए विशेष दर्जा देने की मांग भी की। सरकार ने कहा है कि कोविड-19 वैक्सीन की एहतियाती खुराक 10 जनवरी से स्वास्थ्य कर्मियों, अग्रिम पंक्ति के कर्मचारियों और 60 साल तथा उससे अधिक उम्र के लोगों को दी जाएगी। एआईबीओसी के महासचिव सौम्य दत्ता ने पत्र में कहा कि नियमित अंतराल पर बैंक कर्मचारियों की जांच करने के लिए अनिवार्य रैपिड एंटीजन परीक्षण होना चाहिए। पत्र में कहा गया कि पहली दो लहर में लगभग 2,000 बैंक कर्मचारियों ने अपनी जान गंवाई। परिसंघ ने कहा, ''हम खुद को वित्तीय सेना का हिस्सा मानते हैं, जिन्होंने बाधाओं को दूर किया है और संकट के समय में देश की सेवा की।'' केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के ताजा आंकड़ों के अनुसार, देश में अब तक ओमीक्रोन संक्रमण के 3,071 मामले सामने आ चुके हैं और कोरोना वायरस संक्रमण के मामलों में एक दिन में 1,41,986 की बढ़ोतरी हुई है।

रिपोर्ट का दावा, भारत की अर्थव्यवस्था वर्ष 2030 तक जापान को पीछे छोड़ देगी

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत वर्ष 2030 तक जापान को पीछे छोड़कर एशिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकता है। उस समय तक भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का आकार जर्मनी एवं ब्रिटेन से भी आगे हो जाने और दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की संभावना है। आईएचएस मार्किट की शुक्रवार को जारी एक रिपोर्ट में भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए यह दशक काफी अच्छा रहने की संभावना जताई गई है। भारत इस समय अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी एवं ब्रिटेन के बाद दुनिया की छठी बड़ी अर्थव्यवस्था है। इस रिपोर्ट के मुताबिक भारत का बाजार मूल्य पर जीडीपी के वर्ष 2021 के 2,700 अरब डॉलर से बढ़कर 2030 तक 8,400 अरब डॉलर हो जाने का अनुमान है। इस तीव्र रफ्तार वाली वृद्धि से भारतीय जीडीपी का आकार 2030 तक जापान से आगे निकल जाएगा जिससे भारत चीन के बाद एशिया-प्रशांत क्षेत्र की दूसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। इसके साथ ही भारत की जीडीपी उस समय तक जर्मनी, फ्रांस और ब्रिटेन को भी आकार के मामले में पीछे छोड़ चुकी होगी। मार्किट की रिपोर्ट कहती है, कुल मिलाकर भारत के अगले दशक में सर्वाधिक तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बने रहने की संभावना है। इस उच्च वृद्धि दर को दीर्घकालिक परिदृश्य में कई अहम कारकों से समर्थन मिलने की उम्मीद है। तेजी से बढ़ता मध्य वर्ग का आकार भारत में उपभोक्ता व्यय को मजबूती दे रहा है जिससे वर्ष 2030 तक देश का उपभोक्ता व्यय दोगुना होकर तीन अरब डॉलर होने की संभावना है। रिपोर्ट के मुताबिक, चालू वित्त वर्ष में भारत की वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर 8.2 फीसदी रहने का अनुमान है जबकि वर्ष 2020-21 में इसमें 7.3 फीसदी की गिरावट आई थी।

सरकार ने शाओमी को 653 करोड़ रुपये के आयात शुल्क चोरी को लेकर नोटिस

नई दिल्ली, एजेंसी। चीन की फोन विनिर्माता कंपनी शाओमी की भारतीय इकाई को आयात शुल्क की कथित चोरी को लेकर 653 करोड़ रुपये का नोटिस जारी किया गया है। एक आधिकारिक बयान में यह जानकारी दी गई। केंद्रीय वित्त मंत्रालय ने बुधवार को कहा कि शाओमी इंडिया को उसके परिसरों में तलाशी के दौरान बरामद दस्तावेजों के आधार कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है। शाओमी ने इस बारे में फिलहाल कोई जवाब नहीं दिया है। राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) ने जांच के दौरान पाया था कि शाओमी इंडिया और उसके अनुबंध वाली विनिर्माता कंपनियां द्वारा आयात किए गए माल के निर्धारित मूल्य में रॉयल्टी की राशि शामिल नहीं थी, जो सीमा शुल्क कानून का उल्लंघन है। मंत्रालय ने कहा कि लेनदेन मूल्य में रॉयल्टी और लाइसेंस शुल्क नहीं जोड़कर शाओमी इंडिया सीमा शुल्क से बच रहा था। मंत्रालय के अनुसार, डीआरआई की जांच पूरी होने के बाद शाओमी टेक्नोलॉजी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड को सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 के प्रावधानों के तहत एक अप्रैल, 2017 से 30 जून, 2020 की अवधि के लिए 653 करोड़ रुपये के शुल्क की मांग और वसूली को लेकर तीन कारण बताओ नोटिस जारी किए गए हैं।

प्रधानमंत्री आवास योजना को लेकर मोदी सरकार का बड़ा फैसला

अनुराग ठाकुर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में इस आशय के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई जिसके तहम ग्रामीण इलाकों में सभी को आवास सुनिश्चित किया जा सकेगा।

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्र की मोदी सरकार सभी को घर सुनिश्चित करने को लेकर प्रतिबद्ध है। यही कारण है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से सभी को घर देने के लिए कई बार ऐलान किया जा चुका है। इन सबके बीच केंद्रीय मंत्रिमंडल ने प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण को जारी रखने को लेकर मंजूरी दे दी थी जिसे मार्च 2021 से मार्च 2024 तक भी बढ़ाने की बात कही गई है। सरकार के इस फैसले के बाद लाखों ग्रामीणों को घर हासिल हो सकेगा। इस बात की जानकारी सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने दी। अनुराग ठाकुर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में इस आशय के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई जिसके तहम ग्रामीण इलाकों में सभी को आवास सुनिश्चित किया जा सकेगा।

अपने बयान में ठाकुर ने आगे बताया कि वर्ष 2016 में ग्रामीण क्षेत्रों में सभी को आवास के संबंध में आकलन किया गया था कि 2.95 करोड़ लोगों के पक्के मकान की जरूरत होगी। इसमें बड़ी संख्या में परिवारों को आवास प्रदान किये गए हैं। ठाकुर ने कहा कि शेष परिवारों को भी आवास मिल सके, इसके लिये इस योजना को 2024 तक जारी रखने का निर्णय किया गया है। सरकारी बयान के अनुसार, इस योजना के तहत शेष 1.55 करोड़ मकानों के निर्माण के लिये वित्तीय प्रभाव 2.17 करोड़ रूपये आयेगा जिसमें केंद्र की हिस्सेदारी 1.25 लाख करोड़ रूपये तथा राज्य की हिस्सेदारी 73,475 करोड़ रूपये होगी। इसके तहत नाबार्ड को अतिरिक्त ब्याज के पुनःभुगतान के लिये 18,676 करोड़ रूपये की अतिरिक्त जरूरत होगी। इसके पहले केंद्र सरकार ने प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के तहत महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश सहित पांच राज्यों में 1.07 लाख घरों के निर्माण के लिए अपनी मंजूरी दी है। केंद्रीय आवास एवं शहरी मामलों के सचिव दुर्गा शंकर मिश्रा की अध्यक्षता वाली केंद्रीय मंजूरी एवं निगरानी समिति (सीएसएमसी) ने बृहस्पतिवार को इस प्रस्ताव को मंजूरी दी। बयान के अनुसार केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय ने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के तहत आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, पुडुचेरी और उत्तराखंड से 1.07 लाख घरों के निर्माण के लिए परियोजना प्रस्तावों को मंजूरी दी गई। इसके अलावा सचिव ने अन्य राज्यों में इस योजना के कार्यान्वयन की प्रगति की भी समीक्षा की। मंत्रालय ने कहा कि इस मिशन के तहत स्वीकृत घरों की कुल संख्या अब 1.14 करोड़ है, जिनमें से 53 लाख से अधिक घर लाभार्थियों को वितरित किए जा चुके हैं। 1.85 लाख करोड़ रुपये की केंद्रीय सहायता के साथ मिशन के तहत कुल निवेश 7.52 लाख करोड़ रुपये है। अब तक 1.14 लाख करोड़ रुपये की केंद्रीय सहायता जारी की जा चुकी है। आवास और शहरी मामलों के सचिव ने राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों को घरों के निर्माण में तेजी लाने का निर्देश दिया।

वित्त मंत्री सीतारमण ने सौर उत्पादों पर बुनियादी आयात शुल्क लगाने का दिया आश्वासन

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने घरेलू कंपनियों को विदेशी प्रतिस्पर्द्धा से राहत देते हुए आश्वस्त किया है कि एक अप्रैल 2022 से सौर उपकरणों पर बुनियादी आयात शुल्क लगाया जाएगा। सौर उद्योग की संस्था एनआईएमएमए, भारतीय सौर विनिर्माता संघ और अखिल भारतीय सौर उद्योग संघ के प्रतिनिधियों को सीतारमण ने बृहस्पतिवार को यह आश्वासन दिया। प्रतिनिधियों ने इस मुलाकात में सौर पैनल पर शुल्क-मुक्त आयात की छूट होने से अपना कारोबार बंद होने की आशंका जताते हुए कहा कि चीन एवं अन्य देशों से सस्ते उत्पाद आने से उन्हें नुकसान हो रहा है। एनआईएमएमए की तरफ से जारी बयान के मुताबिक, उसकी चिंताओं पर गौर करते हुए वित्त मंत्री ने कहा कि एक अप्रैल 2022 से सौर उत्पादों के आयात पर बुनियादी शुल्क (बीसीडी) लगाया जाएगा। बयान के मुताबिक, सौर उत्पादों के आयात पर बीसीडी लगने से घरेलू सौर विनिर्माताओं को राहत मिलेगी। सीतारमण ने सौर विनिर्माताओं को नीतिगत समर्थन पर बल देते हुए कहा कि इस उद्योग के पूरी क्षमता से काम करने के लिए यह जरूरी है।

अब म्यामांर तक जाएगी भारतीय रेल, रेल मंत्रालय ने दी इंडो-म्यांमार रेल लिंक परियोजना को मंजूरी

एजेंसी

नई दिल्ली। इससे पहले भी म्यामांर तक रेल लाइन बिछाने के लिए का प्रपोजल दिय गया था। लेकिन इस प्रपोजल को रेल मंत्रालय ने मंजूरी नहीं दी थी। आपको बता दें अभी भारतीय इलाके में इंफाल तक रेल लाइन है। रेलवे की इंडो-म्यामांर रेल लिंक योजना के जरिये इंफाल से मोरेह तक ट्रैक बिछाया जाएगा।

अब तक भारतीय रेलवे देश में ही चलती है, लेकिन अब यह म्यामांर तक जाएगी। इसी सिलसिले में पूर्वोत्तर से म्यामांर की सीमा तक भारतीय क्षेत्र में रेल लाइन बिछाने के लिए रेल मंत्रालय ने फाइनल सर्वे को मंजूरी दे दी है।रेल मंत्रालय के मुताबिक, मणिपुर सीएम एन बीरेन सिंह की मांग पर ये मंजूरी 2 घंटे के भीतर दी गई। रेल मंत्री अश्वनी वैष्णव की मणिपुर यात्रा के दौरान मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने यह मांग की थी कि, म्यांमार तक नई रेल लाइन को एक्सटेंशन दिया जाए। रेल मंत्री ने रेल मंत्रालय के अधिकारियों से बात कर रेल लाइन बिछाने के लिए सर्वे को मंजूरी दे दी। इससे पहले भी म्यामांर तक रेल लाइन बिछाने के लिए का प्रपोजल दिय गया था। लेकिन इस प्रपोजल को रेल मंत्रालय ने मंजूरी नहीं दी थी। आपको बता दें अभी भारतीय इलाके में इंफाल तक रेल लाइन है। रेलवे की इंडो-म्यामांर रेल लिंक योजना के जरिये इंफाल से मोरेह तक ट्रैक बिछाया जाएगा। मोरेह को म्यामांर के अंतिम रेल स्टेशन टामू से कनेक्ट किया जाएगा। इंडो-म्यांमार रेल लिंक परियोजना से दोनों देशों के बीच रिश्ते बेहतर होंगे।

पड़ोसी देश से व्यापारिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रिश्ते भी मजबूत होंगे। दोनों देशों के बीच सर्वे के अनुसार 111 किलोमीटर की रेल लाइन बिछाई जाएगी। मंत्रालय के मुताबिक, सभी पड़ोसी देशों के बीच रेल लिंक बिछाई जाए, ये सरकार का सपना है। आपकी जानकारी के लिए बता दें बांग्लादेश के चिल्लामारी और भारत के हल्दीबाड़ी के बीच भी रेल लिंक का काम हो रहा है।

देश की आर्थिक वृद्धि दर 2021-22 में 9.2 प्रतिशत रहने का अनुमान, कोविड-पूर्व स्तर को करेगी पार

एजेंसी

नई दिल्ली। देश की आर्थिक वृद्धि दर वित्त वर्ष 2021-22 में 9.2 प्रतिशत रहने का अनुमान है। विभिन्न क्षेत्रों खासकर कृषि, खनन और विनिर्माण क्षेत्र के बेहतर प्रदर्शन से वृद्धि दर कोविड-पूर्व स्तर को भी पार कर जाएगी। राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय (एनएसओ) के शुक्रवार को जारी राष्ट्रीय आय के पहले अग्रिम अनुमान के मुताबिक, अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में वृद्धि देखने को मिली है। पिछले वित्त वर्ष 2020-21 में कोविड-19 महामारी और उसकी रोकथाम के लिये लगाए गए सख्त 'लॉकडाउन' से जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) वृद्धि दर में 7.3 प्रतिशत की गिरावट आयी थी।

एनएसओ ने एक बयान में कहा, ''स्थिर मूल्य पर वास्तविक जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) 2021-22 में 147.54 लाख करोड़ रुपये रहने का अनुमान है। जबकि 31 मई, 2021 को 2020-21 के लिये जारी अस्थायी अनुमान में यह 135.13 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह 2021-22 में वास्तविक जीडीपी की वृद्धि 9.2 प्रतिशत रहने का अनुमान है। जबकि एक साल पहले 2020-21 में इसमें 7.3 प्रतिशत की गिरावट आयी थी।'' इस अनुमान के अनुसार 2021-22 में निरपेक्ष रूप से जीडीपी कोविड-पूर्व स्तर 2019-20 के 145.69 लाख करोड़ रुपये के आंकड़े को पार कर जाएगी। मार्च 2020 में देश में आयी महामारी की रोकथाम के लिये 25 मार्च, 2020 से लगाए गए 'लॉकडाउन' से वित्त वर्ष 2020-21 में आर्थिक वृद्धि पर प्रतिकूल असर पड़ा था। हालांकि एनएसओ का वृद्धि अनुमान भारतीय रिजर्व बैंक के 2021-22 के लिए जताए गए 9.5 प्रतिशत जीडीपी वृद्धि दर के अनुमान से कुछ कम है। बयान के अनुसार आधार मूल्य पर वास्तविक सकल मूल्य-वर्धन (जीवीए) 2021-22 में 135.22 लाख करोड़ रुपये रहने का अनुमान है जो पिछले वित्त वर्ष 2020-21 में 124.53 लाख करोड़ रुपये था। यह 8.6 प्रतिशत वृद्धि को बताता है। चालू वित्त वर्ष में कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर 3.9 प्रतिशत रहने का अनुमान है। यह वित्त वर्ष 2020-21 के 3.6 प्रतिशत के मुकाबले अधिक है। वहीं विनिर्माण क्षेत्र में 12.5 प्रतिशत वृद्धि का अनुमान है जबकि वर्ष 2020-21 में इसमें 7.2 प्रतिशत की गिरावट थी। एनएसओ के अनुसार खनन और उत्खनन में 14.3 प्रतिशत और व्यापार, होटल, परिवहन, संचार तथा प्रसारण से जुड़े सेवा क्षेत्र में 11.9 प्रतिशत वृद्धि की संभावना है।

नए साल में ठप पड़ा होटल सेक्टर, 200 करोड़ का हुआ नुकसान

एजेंसी

नई दिल्ली। कोरोना वायरस के कारण शादी समारोह के साथ-साथ क्रिसमस और नए साल के जश्न के लिए बुकिंग रद्द होने से होटल, रेस्तरां एवं अन्य संबंधित क्षेत्र को 200 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। फेडरेशन ऑफ होटल एंड रेस्टोरेंट एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एफएचआरएआई) ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। कोरोना वायरस के नए मामलों में वृद्धि के साथ उसकी रोकथाम के लिये विभिन्न राज्यों में पाबंदियां लगने से अनिश्चितता बढ़ी है। इससे उद्योग को डर है कि सरकार के समर्थन के बिना उन्हें अपने काम-धंधे फिर बंद करने पड़ेंगे। एचआरएआई के संयुक्त मानद सचिव प्रदीप शेट्टी ने पीटीआई-को बताया, नए साल के आस पास बहुत सारे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना था। अब शादियों का सीजन है और वह रद्द हो गई है। नए वर्ष और क्रिसमस के आस-आस समारोह तथा कार्यक्रमों के रद्द होने की वजह से उद्योग को अबतक करीब 200 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। उन्होंने ओमीक्रोन के नए स्वरूप के प्रभाव को लेकर कहा पिछले वर्ष 25 दिसंबर के बाद से शहर के होटल कमरों के उपयोग और शुल्क में भारी गिरावट आई है। शेट्टी ने कहा कि रेस्टोरेंट में भी लोगों की संख्या में बड़ी गिरावट आई है और यह पचास प्रतिशत से भी कम हो गई है। बिक्री और आय दिसंबर के मुकाबले घटकर केवल दस से 20 प्रतिशत रह गई है। उन्होंने कहा, छुट्टियों मनाने और रिसॉर्ट जैसे स्थानों पर भी होटल कमरों का उपयोग 50 प्रतिशत से भी अधिक घट गया है, जो पहले अच्छा चल रहे थे। शेट्टी ने कहा कि कोरोना वायरस की दूसरी लहर के बाद अक्टूबर 2021 से होटलों और रेस्तरां में राजस्व और लोगों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है। हालांकि वर्तमान में उद्योग फिर से अनिश्चिताओं की तरफ जा रहा है।

विज्ञापन जगत की जानीमानी हस्ती गर्सन दाकुन्हा का 92 वर्ष की उम्र में निधन

मुंबई, एजेंसी। विज्ञापन जगत की जानीमानी हस्ती एवं बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी गर्सन दा कुन्हा का शुक्रवार को यहां निधन हो गया। वह 92 वर्ष के थे। दा कुन्हा ने विज्ञान में स्नातक करने के बाद अपने करियर की शुरुआत प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया में एक पत्रकार के रूप में की। वह उसके बाद विज्ञापन के क्षेत्र में चले गए। दा कुन्हा एजीएनआई (एक्शन फॉर गुड गवर्नेंस एंड नेटवर्किंग इन इंडिया) सहित नागरिकों से जुड़ी गतिविधियों में लगे कई मंचों के साथ जुड़े थे। एक सार्वजनिक-निजी साझेदारी 'मुंबई फर्स्ट' ने कहा कि उसे दा कुन्हा के निधन से गहरा दुख हुआ है। दा कुन्हा मुंबई फर्स्ट के गवर्निंग बोर्ड के सदस्य थे। वरिष्ठ पत्रकार राजदीप सरदेसाई ने याद किया कि दा कुन्हा ने 1992-93 के सांप्रदायिक दंगों से प्रभावित मुंबईवासियों की मदद की थी। दा कुन्हा ने विज्ञापन उद्योग में 25 साल के अपने कार्यकाल के दौरान लिंटास का नेतृत्व किया, जो उस समय विज्ञापन व्यवसाय में प्रमुख नामों में से एक था।

रिसर्च पतंगे कपड़े के भीतर घुसकर अंधेरे स्थानों पर खाने का आनंद लेते हैं

कीड़े आपके कपड़े खा रहे हैं? यह भूखे छोटे लार्वा हैं - कैसे पाएं छुटकारा

क्या आपने लॉकडाउन के बाद बहुत दिन से बंद पड़ी अपनी कपड़ों की अलमारी को खोला है और यह देखकर हैरान हैं कि आपके गर्मी के कीमती और सुंदर कपड़ों में छेद हो चुके हैं?

एजेंसी

यिंग लू, ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी और एंड्रियास ज़्विक मॉलिक्यूलर सिस्टमैटिस्ट, सीएसआईआरओ कैनबरा, पांच जनवरी (द कन्वरसेशन) क्या आपने लॉकडाउन के बाद बहुत दिन से बंद पड़ी अपनी कपड़ों की अलमारी को खोला है और यह देखकर हैरान हैं कि आपके गर्मी के कीमती और सुंदर कपड़ों में छेद हो चुके हैं? आप शायद इसके लिए कपड़ों में लगने वाले कीड़ों को दोष दे रहे हैं लेकिन असली अपराधी लार्वा (कैटरपिलर) हैं। लेकिन ये कीड़े कौन हैं? तथ्य यह है कि वे आपके कीमती कपड़े, रेशे और धागे खाते हैं, वास्तव में यह एक दिलचस्प और - पतंगों के लिए - असामान्य जीव विज्ञान को दर्शाता है। एक पुराना दुश्मन ग्रीक और रोमन साहित्य में कपड़ों के पतंगों के शुरुआती संदर्भों से पता चलता है कि मनुष्य हजारों सालों से कपड़े के पतंगों से जूझ रहे हैं। कपड़े के पतंगे कीटों (टिनिडे) के एक प्राचीन वंश का हिस्सा हैं और इन्होंने इस तरह कुछ विचित्र व्यवहार और अनुकूलन को संरक्षित किया है जिसके कारण कुछ प्रजातियां कीट बन गई हैं। ऑस्ट्रेलिया में कपड़े के पतंगे की सबसे प्रसिद्ध प्रजातियाँ हैं वेबिंग कीट (टिनोला बिसेलिएला) और केस बनाने वाले कीट (टिनिया पेलियोनेला)। कपड़े के वयस्क कीड़े का आकार 4 मिमी से 9 मिमी तक होता है - चावल के दाने के आकार के बराबर। एक बार जब लार्वा वयस्क पतंगों में बदल जाते हैं, तो वे फिर कभी नहीं खाते हैं। एक असुविधाजनक आहार कपड़ों के पतंगों की विकासवादी उत्पत्ति बहुत समय पहले अन्य सभी पतंगों के 98% से अलग हो गई थी, इसलिए ये पतंगे कुछ चीजें अन्य पतंगों से कुछ अलग तरीके से करते हैं। अधिकांश टाइनीड प्रजातियां सामान्य कैटरपिलर की तरह जीवित पौधों पर नहीं, बल्कि सड़ती हुई लकड़ी, कवक, लाइकेन, डिट्रिटस और यहां तक कि गुफाओं में चमगादड़ों के मल को भी खाते हैं। तो यह आश्चर्यजनक नहीं है कि कुछ प्रजातियां प्राकृतिक रेशों में पाए जाने वाले केराटिन (एक प्रकार का प्रोटीन) को भी खाती हैं। वे फर, ऊन और रेशम जैसे जानवरों से प्राप्त वस्तुओं को खाना पसंद करते हैं। लेकिन आपकी अलमारी में सिंथेटिक या मिश्रित फाइबर भी सुरक्षित नहीं हैं। क्लॉथ मोथ लार्वा सिंथेटिक और मिश्रित रेशों से अपना पेट भरने के लिए जाने जाते हैं, विशेष रूप से वे जो पसीने या भोजन से सने होते हैं। इन कैटरपिर्स के पसंदीदा आहार का मतलब है कि कुछ प्रजातियां हमारे घरों में अवांछित कीट बन गई हैं। सभी कपड़े मोथ कीट नहीं होते हैं! सौभाग्य से, 2,600 से अधिक प्रजातियों वाले इस समूह की केवल कुछ प्रजातियां ही कीट हैं। ऑस्ट्रेलिया में हमारे पास क्लॉथ मोथ समूह से संबंधित पतंगों की 190 से अधिक ज्ञात प्रजातियां हैं, और ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय कीट संग्रह में स्थित कई और अनाम नमूने वैज्ञानिकों द्वारा औपचारिक रूप से उन्हें कोई नाम दिए जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। शोधकर्ता इस लेख के लेखकों सहित अपरंपरागत तरीकों से भोजन करने वाले पतंगों की विविधता और व्यवहार के बारे में अधिक समझने के लिए काम कर रहे हैं। हम में से एक (यिंग लुओ) वर्तमान में उन पतंगों का अध्ययन कर रहा है जिनके लार्वा पत्ती के बाहर की बजाय पत्ती के अंदर खाते हैं। शुक्र है, ये आपको अपने वॉर्डरोब में नहीं मिलेंगे। वे मेरे घर में क्यों हैं - और मैं उनसे कैसे छुटकारा पाऊं? यहां बताए गए कपड़े के पतंगे ऑस्ट्रेलिया में खूब पाए जाने वाले एक अच्छी तरह से स्थापित कीट हैं और दुर्घटनावश यहां लाए गए थे।

संक्षिप्त समाचार

ISIS के खतरे से निपटने के लिए तालिबान आत्मघाती हमलावरों की करेगा सेना में भर्ती

एजेंसी

तालिबान आधिकारिक तौर पर सेना का हिस्सा बनने के लिए आत्मघाती हमलावरों की भर्ती करेगा। काबुल पर कब्जे के बाद से प्रतिद्वंद्वी इस्लामिक स्टेट तालिबान के लिए सबसे बड़े सुरक्षा खतरे के रूप में सामने आया है। पिछले साल सत्ता में आने से पहले, तालिबान ने 20 साल के युद्ध में अमेरिकी और अफगान सैनिकों पर हमला करने और उन्हें हराने के लिए आत्मघाती हमलावरों को एक महत्वपूर्ण हथियार के रूप में इस्तेमाल किया था। तालिबान के उप प्रवक्ता बिलाल करीमी ने कहा कि अब समूह एक इकाई के तहत काम करने और अफगानिस्तान की रक्षा के लिए देश भर में आत्मघाती हमलावरों के बिखरे हुए दस्तों को सुधारना और संगठित करना चाहता है। उनका मुख्य लक्ष्य अब इस्लामिक स्टेट की स्थानीय शाखा होगी। करीमी ने कहा कि विशेष बल जिनमें जान कुर्बान करने वाले शामिल हैं का उपयोग अधिक परिष्कृत और विशेष अभियानों के लिए किया जाएगा। उन्होंने कहा कि कट्टरपंथी समूह देश भर में और सीमाओं पर "रक्षा को मजबूत करने के लिए एक मजबूत और संगठित सेना" का निर्माण कर रहा है, जिसमें आत्मघाती हमलावर रणनीति का एक अभिन्न हिस्सा बन रहे हैं। एक मीडिया रिपोर्ट में कहा , इस बीच, तालिबान शासन ने कहा है कि वह सीमा पर बाड़ लगाने के विवादास्पद मुद्दे पर पड़ोसी देशों के बीच बढ़ते तनाव के बीच डूरंड रेखा पर पाकिस्तान द्वारा बाड़ लगाने की अनुमति नहीं देगा।' तालिबान के कमांडर मावलवी सनाउल्लाह संगीन ने बुधवार को अफगानिस्तान के टोलो न्यूज को बताया, "हम (तालिबान) किसी भी समय, किसी भी रूप में बाड़ लगाने की अनुमति नहीं देंगे। उन्होंने (पाकिस्तान ने) पहले जो कुछ किया, हम अब इसकी अनुमति नहीं देंगे। अब कोई बाड़ नहीं होगी।'

गुजरात में कोविड मामलों में वृद्धि के कारण नेपाली प्रधानमंत्री की भारत यात्रा रद्द

एजेंसी

काठमांडू। नेपाल के प्रधान मंत्री शेर बहादुर देउबा की अगले सप्ताह होने वाली भारत यात्रा कोविड मामलों में वृद्धि के कारण गुजरात सरकार द्वारा 'वाइब्रेंट गुजरात सम्मेलन' स्थगित किए जाने के बाद रद्द कर दी गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 10 जनवरी को गुजरात सम्मेलन के 10वें संस्करण का उद्घाटन करने वाले थे। प्रधानमंत्री के निजी सचिवालय के सूत्रों ने बताया कि गुजरात सम्मेलन रद्द होने के कारण देउबा की नौ जनवरी से शुरू होने वाली चार दिवसीय भारत यात्रा रद्द कर दी गई है। सम्मेलन में भाग लेने के अलावा, देउबा अपनी इस यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी से भी मुलाकात करने वाले थे। कोविड मामलों में वृद्धि के मद्देनजर, गुजरात सरकार ने 'वाइब्रेंट गुजरात सम्मेलन' के 10वें संस्करण का आयोजन स्थगित करने का बृहस्पतिवार को निर्णय लिया। इस सम्मेलन में कई देशों के प्रतिनिधियों और बड़ी कंपनियों के मुख्य कार्यपालक अधिकारियों के शामिल होने की उम्मीद थी। गुजरात में बुधवार को कोविड के 3,350 नए मामले सामने आए। पिछले साल 26 मई के बाद पहली बार नए मामलों की संख्या 3,000 को पार कर गयी। इसके अलावा, गुजरात में बुधवार को ओमीक्रोन संक्रमण के 50 नए मामले दर्ज किए जिससे राज्य में ऐसे मामलों की संख्या बढ़कर 204 हो गयी।

ईरान ने 1980 के दशक के युद्ध में मारे गए लोगों के लिए सामूहिक अंतिम संस्कार किया

दुबई, एजेंसी। ईरान-इराक युद्ध में मारे गए लोगों में से 250 के अवशेषों के सामूहिक अंतिम संस्कार के लिए बृहस्पतिवार को हजारों लोग नम आंखों के साथ ईरानी शहरों की सड़कों पर एकत्र हो गये। युद्ध के मैदानों से हालमें बरामद सैनिकों के कुछ अवशेषों को लेकर एक अंत्येष्टि जुलूस राजधानी तेहरान से होकर गुजरा। वहीं, कई अन्य अवशेषों को अन्य प्रांतों में भेज दिया गया। हालांकि, ईरान और इराक 1980 के दशक में आठ साल तक चले युद्ध में मारे गए सैनिकों के अवशेषों का समय-समय पर आदान-प्रदान करते रहे हैं, लेकिन आज हुआ अंतिम संस्कार आयोजन हाल के वर्षों में हुआ इस तरह का सबसे बड़ा आयोजन है। इस युद्ध में दोनों देशों के 10 लाख से अधिक लोग मारे गए थे। आज के अंतिम संस्कार समारोह से लोगों की देशभक्ति के साथ ही ईरान के कट्टरपंथी नेताओं की शक्ति की झलक भी दिखी। यह आयोजन ऐसे समय हुआ है जब देश के राजनयिकों ने परमाणु समझौते को लेकर वियना में वार्ता की। अंतिम संस्कार जुलूस में शामिल हुए हजारों लोग मृतक सैनिकों की याद में रोते देखे गए। इस युद्ध के समय इराक में सद्दाम हुसैन का शासन था।

उ कोरिया ने किया हाइपरसोनिक मिसाइल दूसरा सफल परीक्षण, तिलमिलाया अमेरिका

सियोल, एजेंसी। उत्तर कोरिया ने बृहस्पतिवार को दावा किया कि उसने एक हाइपरसोनिक मिसाइल का का दूसरा सफल परीक्षण किया है। इससे कुछ दिन पहले देश के सर्वोच्च नेता किम जोंग उन ने कोविड महामारी की दुश्वारियों के बीच सैन्य क्षमता को बढ़ाने का संकल्प लिया था। बुधवार को किया गया परीक्षण, पिछले दो महीने में उत्तर कोरिया द्वारा किया गया पहला परीक्षण था। इससे संकेत मिलते हैं कि यह देश निरस्त्रीकरण की दिशा में बातचीत करने की बजाय अपने नाभिकीय और मिसाइल भंडार के आधुनिकीकरण की योजना पर जोर देगा। आधिकारिक कोरियाई समाचार एजेंसी ने कहा कि सत्ताधारी 'वर्कर्स पार्टी' ने मिसाइल परीक्षण पर संतोष व्यक्त किया है। अभी यह स्पष्ट नहीं है कि उत्तर कोरिया कितनी जल्दी इस प्रकार की मिसाइलों का निर्माण करेगा लेकिन यह हथियार उन जटिल सैन्य उपकरणों में से एक है जिसका किम ने पिछले साल खुलासा किया था।

अपने गहरे दोस्त से मिलने चीन जाएंगे पाकिस्तान के पीएम इमरान खान

इमरान खान द्विपक्षीय संबंध मजबूत करने और निवेश के लिए चीन का दौरा करेंगे।

एजेंसी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान की योजना अगले महीने के शुरू में चीन जाने की है। उनके इस दौरे का मुख्य मकसद बीजिंग के साथ अपने सदाबहार द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने के अलावा सीपीईसी के तहत विभिन्न परियोजनाओं के लिए अधिक से अधिक निवेश हासिल करना होगा। 'चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा' (सीपीईसी) मामले में प्रधानमंत्री इमरान खान के विशेष सहयोगी खालिद मंसूर ने बुधवार को सालाना ''एपीसीईए सतत विकास रिपोर्ट 2021'' के विमोचन के अवसर पर कहा कि प्रधानमंत्री चीन दौरे से पहले निवेशकों की राह में आने वाली सभी अड़चनों को दूर कर देना चाहते हैं। मंसूर सीपीईसी प्राधिकरण के प्रमुख भी हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री इमरान खान सीपीईसी परियोजनाओं की प्रगति की जानकारी हर 15 दिन में लेते हैं। इस्लामाबाद स्थित चीनी दूतावास में सालाना ''एपीसीईए सतत विकास रिपोर्ट-2021'' का विमोचन पाकिस्तान-चाइना इंस्टीट्यूट (पीसीआई) और ऑल-पाकिस्तान चाइनीज एंटरप्राइजेज एसोसिएशन (एपीसीईए) ने किया। एक अधिकारिक बयान के मुताबिक, प्रधानमंत्री इमरान खान ने पाकिस्तान में विदेशी निवेशकों की सुविधा के लिए 37 नियमों को हटाकर एकल खिड़की संचालन की व्यवस्था सुनिश्चित करने के आदेश दिए हैं। करीब 60 अरब अमेरिकी डॉलर की लागत वाला सीपीईसी चीन के संसाधन संपन्न शिनजियांग प्रांत को पाकिस्तान के बलूचिस्तान स्थित रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण ग्वादर बंदरगाह को जोड़ता है। सीपीईसी चीन की बेल्ट एंड रोड पहल का सबसे अहम हिस्सा है जो चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग की सबसे पसंदीदा योजना है। इस परियोजना का मकसद चीनी वित्त-पोषितआधारभूत ढांचे के बूते दुनियाभर में चीन का प्रभाव बढ़ाना है। सीपीईसी प्राधिकरण की ओर से कहा गया कि पाकिस्तान में चीनी उद्यमों के काम ने जो अंतर पैदा किया है उसे खान ने देखा है और सीपीईसी के कारण ही थार कोल एनर्जी का सपना साकार हो सका। कार्यक्रम में मौजूद वक्ताओं ने इमरान खान के फरवरी के शुरु में होने वाले चीन दौरे का स्वागत किया और कहा कि इससे दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंध मजबूत होंगे।इस दौरान चीन के राजदूत नोंग रोंग ने सीपीईसी में चीनी निवेश पर प्रकाश डाला। रोंग ने कहा कि चीन ने पाकिस्तान में बन रहे सीपीईसी पर अब तक 25 अरब अमेरिकी डॉलर खर्च किए हैं जिससे 75 हजार लोगों को काम मिला, इसके तहत 500 किलोमीटर लंबे राजमार्ग और सड़कें बनीं तथा 5500 किलोवाट विद्युत उत्पादन हुआ। एपीसीईए उन 200 चीनी कंपनियों का प्रतिनिधित्व करता है जो पाकिस्तान में कार्यरत हैं। इस कार्यक्रम में 100 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया जिसमें चीनी कंपनियों के सीईओ भी शामिल थे। गौरतलब है कि चीन और

कैंटीन में विस्फोट में तीन लोगों की मौत, 20 मलबे में फंसे

चीन में कैंटीन में विस्फोट में तीन लोगों की मौत हो गई। सरकारी समाचार एजेंसी 'सिन्हुआ' के मुताबिक बचाव कार्य जारी है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार जब विस्फोट हुआ तब लोग कैंटीन में खाना खा रहे थे। कई लोग घायल हो गए और उन्हें अस्पताल ले जाया गया।

एजेंसी

बीजिंग। दक्षिण-पश्चिम चीन में उप-जिला कार्यालय में शुक्रवार कोसंदिग्ध गैस रिसाव के कारण एक इमारत ढहने से कम से कम तीन लोगों की मौत हो गई और 20 अन्य लोग मलबे में फंस गए। विस्फोट वूलोंग जिले के चोंगकिंग नगर पालिका में उप-जिला कार्यालय में हुआ। सरकारी सीजीटीएन-टीवी ने मौके पर मौजूद आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम के हवाले से बताया कि 13 लोगों को मलबे से बाहर निकाला गया, जिनमें से तीन की बचाव प्रयासों के दौरान मौत हो गई। नगर प्रचार विभाग ने कहा कि दुर्घटना दोपहर 12:10 बजे संदिग्ध गैस रिसाव के कारण हुई, जिससे विस्फोट हुआ और कैंटीन की इमारत ढह गई। आधिकारिक मीडिया खबरों के अनुसार, विस्फोट के बाद 20 से अधिक लोगों के मलबे में फंसे होने की आशंका है। सरकारी समाचार एजेंसी 'सिन्हुआ' के मुताबिक बचाव कार्य जारी है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार जब विस्फोट हुआ तब लोग कैंटीन में खाना खा रहे थे। कई लोग घायल हो गए और उन्हें अस्पताल ले जाया गया। चीन के आपातकालीन प्रबंधन मंत्रालय ने बचाव प्रयासों का मार्गदर्शन करने के लिए कई विशेषज्ञों को भेजा है। आपातकालीन प्रबंधन मंत्री हुआंग मिंग ने स्थिति का तुरंत निरीक्षण करने, फंसे हुए पीड़ितों की सही संख्या का पता लगाने, दुर्घटना के कारण का पता लगाने और ऐसी दुर्घटनाओं को दोबारा होने से रोकने के प्रयासों का आह्वान किया है। स्थानीय अग्निशमन एवं बचाव विभाग ने 260 विशेषज्ञों की टीम को मौके पर भेजा है।

पिछले सप्ताह कोविड-19 के नये वैश्विक मामलों में 71 फीसदी की वृद्धि हुईः डब्ल्यूएचओ

एजेंसी

संयुक्त राष्ट्र/जिनेवा। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने बृहस्पतिवार को कहा कि 27 दिसंबर से दो जनवरी के दौरान इससे पिछले सप्ताह के मुकाबले कोरोना वायरस संक्रमण के नये वैश्विक मामलों में 71 फीसदी की वृद्धि देखी गई जबकि इसी अवधि में मौत के मामलों में 10 फीसदी की गिरावट रही। कोरोना वायरस के नए स्वरूप ओमीक्रोन को नए मामलों में वृद्धि के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है। डब्ल्यूएचओ के प्रमुख ने चेताया है कि ओमीक्रोन के कारण आई मामलों की सुनामी ने दुनियाभर में स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली पर बोझ अत्याधिक बढ़ा दिया है। डब्ल्यूएचओ द्वारा जारी कोविड-19 के साप्ताहिक आंकड़ों के मुताबिक, पिछले साल अक्टूबर से संक्रमण के मामलों में क्रमिक वृद्धि के बाद वैश्विक स्तर पर 27 दिसंबर से दो जनवरी के सप्ताह के दौरान इससे पिछले सप्ताह की तुलना में संक्रमण के नये मामलों में 71 फीसदी बढ़ोतरी दर्ज की गई। इसके मुताबिक, इसी अवधि में संक्रमण के कारण मौत के मामलों में 10 फीसदी गिरावट रही। पिछले सप्ताह के दौरान दुनियाभर में संक्रमण के करीब 95 लाख नये मामले सामने आए जबकि 41,000 से अधिक मरीजों की मौत हो गई। आंकड़ों के मुताबिक, सभी क्षेत्रों में साप्ताहिक मामलों में वृद्धि देखी गई, जिसमें से अमेरिका में सर्वाधिक 100 फीसदी का इजाफा हुआ। डब्ल्यूएचओ के महानिदेशक टेड्रस अधानम घेब्रेयेसस ने कहा, पिछले सप्ताह, महामारी के बाद से अब तक सर्वाधिक मामले सामने आए। इसके साथ ही हम जानते हैं कि शायद अवकाश के कारण नमूनों की जांच लंबित रहने के कारण मामलों की वास्तविक संख्या इससे अधिक भी हो सकती थी। जिनेवा में प्रेसवार्ता के दौरान उन्होंने चेताया कि वायरस का नया स्वरूप ओमीक्रोन, भले ही डेल्टा स्वरूप से कम गंभीर प्रतीत होता हो लेकिन इसका यह कतई मतलब नहीं कि इसे हल्के की श्रेणी में रखना चाहिए।

पाकिस्तान के सेना प्रमुख जनरल बाजवा के सेवा विस्तार पर फैसले में अभी वक्त है : सरकार

एजेंसी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने कहा है कि उन्होंने सेना प्रमुख जनरल कमर जावेद बाजवा के कार्यकाल के विस्तार के बारे में अभी नहीं सोचा है क्योंकि उनके कार्यकाल के समाप्त होने में अब भी समय है। मीडिया में शुक्रवार को इस बारे में रिपोर्ट आई। 'डॉन' अखबार की रिपोर्ट के अनुसार बाजवा के कार्यकाल में विस्तार के विवादास्पद मुद्दे पर प्रधानमंत्री खान ने कहा कि सैन्य नेतृत्व के साथ उनके अभूतपूर्व संबंध हैं। प्रधानमंत्री के हवाले से रिपोर्ट में कहा गया है, ''मौजूदा साल अभी शुरू ही हुआ है और नवंबर अभी दूर है। फिर सेना प्रमुख के कार्यकाल में विस्तार की चिंता क्यों है।''

खान ने कहा कि उन्होंने अब तक सीओएएस बाजवा के कार्यकाल में विस्तार के बारे में नहीं सोचा है। बाजवा (61) सेना प्रमुख के पद पर 28 नवंबर, 2022 तक रहेंगे। खान के करीबी, बाजवा अपने तीन साल के मूल कार्यकाल के खत्म होने पर 29 नवंबर, 2019 को सेवानिवृत्त होने वाले थे, लेकिन प्रधानमंत्री खान ने एक अधिसूचना के माध्यम से क्षेत्रीय सुरक्षा स्थिति का हवाला देते हुए सेना प्रमुख को उतने ही समय का एक और सेवा विस्तार दिया। उच्चतम न्यायालय ने 28 नवंबर को सरकारी आदेश को यह कहकर निलंबित कर दिया कि सेना प्रमुख के कार्यकाल को बढ़ाने के लिए कोई कानून नहीं है। लेकिन शीर्ष

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने कहा है कि उन्होंने सेना प्रमुख जनरल कमर जावेद बाजवा के कार्यकाल के विस्तार के बारे में अभी नहीं सोचा है क्योंकि उनके कार्यकाल के समाप्त होने में अब भी समय है। मीडिया में शुक्रवार को इस बारे में रिपोर्ट आई।

अदालत ने सरकार के इस आश्वासन पर जनरल बाजवा को छह महीने का विस्तार दिया कि संसद छह महीने के भीतर किसी सेना प्रमुख के सेवा विस्तार/पुनर्नियुक्ति पर कानून पारित करेगी। सरकार ने प्रारंभिक गतिरोध के बाद मुख्य विपक्षी दलों का समर्थन हासिल किया और सेना, नौसेना और वायु सेना के प्रमुखों और ज्वाइंट चीफ ऑफ स्टाफ समिति के अध्यक्ष पद के लिए सेवानिवृत्ति की आयु 60 से 64 वर्ष तक बढ़ाने के संबंध में नेशनल असेंबली में तीन विधेयक पेश किए। सरकार गिराने के संबंध में पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) और सेना के बीच संभावित समझौते की अफवाहों के बारे में खान ने कहा कि वह व्यक्तिगत रूप से किसी तरह के दबाव में नहीं हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि क्रिकेटर से नेता बने खान ने कहा कि उन्हें सहयोगियों का समर्थन प्राप्त है और उन्होंने भरोसा जताया कि उनकी सरकार 2023 तक पांच साल का कार्यकाल पूरा करेगी।

पाकिस्तान सुप्रीम कोर्ट की पहली महिला जज बनेंगी आयशा मलिक

एजेंसी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में पहली बार एक महिला सुप्रीम कोर्ट की जज बनने जा रही है। लाहौर हाई कोर्ट की जस्टिस आयशा मलिक अब पाकिस्तान सुप्रीम कोर्ट की पहली महिला जज का पद संभालेगी। पाकिस्तानी अखबार डॉन की एक रिपोर्ट के मुताबिक, प्रधान न्यायाधीश गुलजार अहमद की अध्यक्षता में पाकिस्तान के न्यायिक आयोग ने गुरुवार को न्यायमूर्ति आयशा मलिक को पांच मतों के बहुमत से सुप्रीमकोर्ट का जज बनने को लेकर मंजूरी दे दी है। बता दें कि, आयशा मलिक के पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट के जज बनने के निर्णय पर दूसरी बार बैठक की गई थी। इससे पहले पिछले साल 9 सितंबर को आयशा का नाम जज के लिए दिया गया था लेकिन सबका मत नहीं मिलने के कारण आयशा का नाम खारिज कर दिया गया था।

बार एसोसिएशन ने किया था विरोध

बता दें कि, न्यायमूर्ति आयशा मलिक के सुप्रीम कोर्ट जज की नियुक्ति को लेकर कई विरोध भी हुए। पाकिस्तान के बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अब्दुल लतीफ अफरीदी ने देशव्यापी विरोध किया था और मीडिया से बातचीत के दौरान अपने बयान में कहा था कि, आयशा मलिक सुप्रीम कोर्ट के जज की नियुक्ति के लिए जुनियर हैं। गुरूवार को पाकिस्तान बार काउंसिल ने धमकी भी दी थी कि अगर जस्टिस आयशा मलिक को पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट का जज नियुक्त किया गया तो कोर्ट का बहिष्कार किया जाएगा। हालांकि, पाकिस्तान के न्यायिक आयोग के सिफारिश पर संसदीय समिति काफी सहमत है और इसलिए जस्टिस आयशा मलिक अब पाकिस्तान की पहली महिला सुप्रीम कोर्ट की जज बनने के कगार पर आ चुकी हैं।

कौन है आयशा मलिक

आयशा मलिक ने हार्वर्ड लॉ स्कूल से एलएलएम ग्रेजुएट किया है।साल 2012 में आयशा लाहौर उच्च न्यायालय मेंन्यायाधीश के रूप में नियुक्त हुई थी। इससे पहले वह एक प्रमुख कॉर्पोरेट और वाणिज्यिक कानून फर्म में पार्टनर भी रह चुकी हैं। इस दौरान वह लाहौर उच्च न्यायालय में चौथी सबसे वरिष्ठ न्यायाधीश हैं। आयशा को उनके अनुशासन, निष्पक्षता और अखंडता के लिए जाना जाता है। आयशा ने कई मुद्दों पर फैसला सुनाया है जिसमें से चुनावों में संपत्ति की घोषणा, गन्ना उत्पादकों को भुगतान और पाकिस्तान में अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता लागू होना शामिल है। अगर आयशा सुप्रीम कोर्ट के जज के लिए नियुक्त हो जाती है तो वह साल 2031 तक काम करेंगी।

पाक के राष्ट्रपति दूसरी बार कोरोना संक्रमित

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के राष्ट्रपति आरिफ अल्वी ने बृहस्पतिवार को कहा कि वह दूसरी बार कोरोना वायरस से संक्रमित हुए हैं। देश वैश्विक महामारी की पांचवी लहर से जूझ रहा है। अल्वी ने सोशल मीडिया पर घोषणा की कि उन्हें हल्का बुखार है और कोई अन्य लक्षण नहीं हैं। उन्होंने ट्वीट किया, "मैं फिर से कोविड-19 की जद में हूं। पिछले चार-पांच दिन से गले में दर्द था और ठीक हो रहा था। दो रात पहले कुछ घंटों के लिए हल्का बुखार आया। कोई अन्य लक्षण नहीं थे।" उन्होंने लोगों से सरकार द्वारा घोषित दिशा-निर्देशों का पालन करने के लिए भी कहा। उन्होंने कहा, दोस्तों, कृपया सावधानियां फिर से बरतनी शुरू कर दें और मानक परिचालन प्रक्रिया (एसओपी) का पालन करें।" अल्वी पिछले साल 29 मार्च को पहली बार संक्रमित हुए थे। उससे पहले वह कोविड-19 टीके की पहली खुराक ही ले सके थे। राष्ट्रपति उस दिन संक्रमित मिले जिस दिन पाकिस्तान में लगभग तीन महीनों में पहली बार 1,000 से अधिक मामले सामने आाए।

सुर्खियां विशेषज्ञ का दावा- ओमीक्रोन को हल्के में न लें, मास्क पहनें

अमेरिका के अस्पतालों में 100 फीसदी वेंटिलेटर का हो रहा इस्तेमाल

एजेंसी

सामने आ रहे इस तरह के दावों के बीच अमेरिकी महामारी विशेषज्ञ फहीम योनुस ने सभी को चेताते हुए कहा कि कोरोना के नए वेरिएंट 'ओमीक्रोन' को हल्का समझने की भूल नहीं करें। उन्होंने कहा कि इस ओमीक्रोन को हल्के में न लें, क्योंकि उनके अस्पताल में सारे वेंटिलेटर भर गए हैं।

न्यूयॉर्क। अमेरिका में कोरोना वायरस संक्रमण ने सबसे ज्यादा हड़कंप मचाया हुआ है। यहां पर हर दिन 10 लाख से अधिक कोरोना संक्रमण के नए मामले सामने आ रहे हैं। संक्रमितों को अस्पतालों में जगह नहीं मिल रही है, लेकिन कोरोना का मौजूद वेरिएंट डेल्टा की तुलना में हल्का है। विशेषज्ञों का मानना है कि अस्पतालों में वेंटिलेटर की जररूत नहीं पड़ रही है। सामने आ रहे इस तरह के दावों के बीच अमेरिकी महामारी विशेषज्ञ फहीम योनुस ने सभी को चेताते हुए कहा कि कोरोना के नए वेरिएंट 'ओमीक्रोन' को हल्का समझने की भूल नहीं करें। उन्होंने कहा कि इस ओमीक्रोन को हल्के में न लें, क्योंकि उनके अस्पताल में सारे वेंटिलेटर भर गए हैं। अमेरिकी यूनिवर्सिटी ऑफ मेरिलैंड में महामारी मामलों के विशेषज्ञ डॉ. फहीम योनुस ने मेरिलैंड के अस्पताल में आईसीयू भरे होने की जानकारी देते हुए एक ट्वीट में लिखा कि मेरे अस्पतालों में 100 फीसदी वेंटिलेटर का इस्तेमाल कोरोना मरीजों के लिए हो रहा है। मास्क पहने, कोरोना वैक्सीन की बूस्टर डोज लें और भीड़भाड़ वाली जगहों पर जाने से बचें। वहीं उन्होंने इस तरह के दावों को भी खारिज किया, जिसमें कहा गया कि ओमीक्रोन से बचना संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि आप इस खतरे से बच सकते हैं और आपको इससे बचना चाहिए। दरअसल, उन्होंने मास्क पहनने और वैक्सीन की बूस्टर डोज लेने पर जोर दिया। डॉ. फहीम योनुस ने एक अन्य ट्वीट में संक्रमित हो रहे लोगों की क्रोनोलॉजी समझाई। उन्होंने अपने अस्पताल के कोरोना मरीजों के आंकड़ों के हिसाब से एक डेटा तैयार किया। जिसके मुताबिक उनके अस्पताल में भर्ती हुए कोरोना संक्रमितों में से 76 फीसदी ऐसे हैं, जिन्होंने वैक्सीन नहीं ली है। जबकि वैक्सीन की एक या फिर दो डोज ले चुके संक्रमित लोगों की संख्या 24 फीसदी है और बूस्टर डोज लेना वाला कोई भी संक्रमित व्यक्ति उनके अस्तपाल में नहीं है। वहीं उन्होंने एक अध्ययन के माध्यम से बताया कि बूस्टर डोज ने कोरोना से होने वाले मौत के खतरे को 90 फीसदी तक कम कर दिया है। डॉ. फहीम योनुस का मानना है कि ओमीक्रोन की लहर कुछ हफ्तों में खत्म हो जाएगी। उन्होंने कहा कि आप इस संक्रमण को रोक सकते हैं। इसके लिए आप लोगों को मास्क पहनना पड़ेगा और भीड़-भाड़ वाली जगहों से दूरियां बनानी होगी। उन्होंने ट्वीट में लिखा कि यह एक खतरनाक और लापरवाह विचार है कि 'ओमीक्रोन इतना ज्यादा संक्रामक है कि सभी इसकी चपेट में आ जाएंगे।

संक्षिप्त समाचार

मेरठ में बोले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, हॉकी में ओलंपिक पदक नहीं जीत पाने के लिये पिछली सरकारें दोषी

मेरठ, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ओलंपिक में हॉकी में लंबे समय तक पदक नहीं जीत पाने के लिये पिछली सरकारों को दोषी ठहराते हुए कहा कि देश को खेलों के प्रति उदासीन रवैये के कारण दशकों तक इसके लिये इंतजार करना पड़ा। भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने 41 साल बाद पिछले साल तोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक जीता। इससे पहले भारत ने 1980 के मॉस्को ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीता था। मेजर ध्यानचंद खेल विश्वविद्यालय के शिलान्यास के बाद एक जनसभा में मोदी ने कहा ,'' पिछली सरकारों ने युवाओं की क्षमता को महत्व नहीं दिया। यह सरकार की जिम्मेदारी थी कि खेलों के प्रति समाज का नजरिया बदले लेकिन इसका उलटा हुआ और खेलों के प्रति रवैया उदासीन हो गया।'' उन्होंने कहा ,'' इसका नतीजा यह हुआ कि हॉकी में हमें पदक के लिये दशकों तक इंतजार करना पड़ा जबकि गुलामी के दौर में मेजर ध्यानचंद जैसे प्रतिभाशाली खिलाड़ियों ने देश का परचम लहराया था।'' उन्होंने कहा ,'' विश्व हॉकी आम मैदानों की बजाय एस्ट्रो टर्फ पर होने लगी है। हम जब तक जागे, बहुत देर हो चुकी थी। अभ्यास से लेकर टीम चयन तक , हर स्तर पर भाई भतीजावाद, जातिवाद और भ्रष्टाचार था। पक्षपात था और पारदर्शिता जरा भी नहीं थी। हर खेल की यही कहानी थी। पिछली सरकारें नयी तकनीकों, बदलती मांगी और निखरते हुनर के लिये उत्कृष्ट ढांचा नहीं बना सकी।

ऑस्ट्रेलियाई ओपन चैंपियन नाओमी ओसाका ने जीत के साथ सत्र की शुरुआत की

मेलबर्न, एजेंसी। ऑस्ट्रेलियाई ओपन चैंपियन नाओमी ओसाका ने यहां चल रहे समर सेट टेनिस टूर्नामेंट में से एक में मंगलवार को अलिज़े कॉर्नेट पर 6-4, 3-6, 6-3 से हराकर 2022 सत्र की जीत से शुरुआत की। पिछले साल फरवरी में आस्ट्रेलियाई ओपन जीतने के बाद ओसाका ने पहली बार रॉड लीवर एरेना में वापसी की। सितंबर में यूएस ओपन के तीसरे दौर में लिलाह फर्नांडिस से हारने के बाद यह उनका टूर स्तर पर पहला मैच था। कोविड-19 महामारी के कारण यात्रा प्रतिबंधों को देखते हुए आस्ट्रेलियाई ओपन से पहले कार्यक्रम काफी व्यस्त है। ऑस्ट्रेलियाई ओपन 17 जनवरी से शुरू होगा। मेलबर्न में इस सप्ताह डब्ल्यूटीए के दो और एटीपी का एक टूर्नामेंट खेला जा रहा है। एडीलेड में एटीपी और डब्ल्यूटीए टूर्नामेंट चल रहा है। सिडनी में एटीपी कप खेला जा रहा है। मेलबर्न में खेले जा रहे एक अन्य टूर्नामेंट के पहले दौर में शीर्ष वरीयता प्राप्त जेसिका पेगुला ने इरीना कामेलिया बेगु को 7-6 (6), 6-3 से हराया। एडीलेड में 2020 की फ्रेंच ओपन चैंपियन इगा स्वियातेक ने डारिया साविले को 6-3, 6-3 से हराकर अपने खिताब के बचाव का अभियान शुरू किया। इससे पहले के मैचों में अमेरिकी किशोरी कोको गौफ ने नॉर्वे की उलरिके ईकेरी को 6-2, 6-1 से हराया। उनका अगला मुकाबला शीर्ष वरीयता प्राप्त ऐश बार्टी से होगा। आस्ट्रेलियाई ओपन 2020 की चैंपियन सोफिया केनिन ने लूसिया ब्रोंज़ेटी को 7-5, 7- से हराया जबकि अनास्तासिया गैसानोवा ने दो घंटे 34 मिनट तक चले मैच में आठवीं वरीयता प्राप्त एलिना स्वितोलिना को 5-7, 6-4, 6-3 से पराजित किया।

दक्षिण अफ्रीका ने भारत को 7 विकेट से हराया, 1-1 की बराबरी पर पहुंची तीन टेस्ट मैचों की श्रृंखला

सेंचुरियन, एजेंसी। सेंचुरियन में शानदार खेल दिखाने वाली टीम इंडिया दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ जोहानिसबर्ग में कुछ खास कमाल नहीं कर पाई। जोहानिसबर्ग में दूसरे टेस्ट मुकाबले में भारत को 7 विकेट से हार का सामना करना पड़ा है। भारत के हार के साथ ही तीन टेस्ट मैचों की श्रृंखला 1-1 से बराबर पर है। दक्षिण अफ्रीका के सामने भारत में 240 रनों का लक्ष्य रखा था। बारिश से प्रभावित चौथे दिन दक्षिण अफ्रीका की टीम ने यह लक्ष्य आसानी से हासिल कर लिया। दक्षिण अफ्रीका के सिर्फ 3 विकेट गिरे थे। कप्तान डीन एल्गर ने नाबाद 96 रनों की पारी खेली। पहली पारी के आधार पर दक्षिण अफ्रीका को भारत पर 27 रनों की बढ़त थी। पहली पारी में भारत ने 202 रन बनाए थे जबकि पहली पारी में दक्षिण अफ्रीका ने 229 रन बनाए थे। भारत ने अपनी दूसरी पारी में अजिंक्य रहाणे और चेतेश्वर पुजारा के संघर्षशील पारी की बदौलत 266 रन बनाने में कामयाब जरूर हुआ था लेकिन 240 रनों के लिए लक्ष्य को भारत बचा नहीं पाया। श्रृंखला का तीसरा और अंतिम टेस्ट मैच 11 जनवरी से केपटाउन में खेला जाएगा। भारत की ओर से अश्विन ने 2 विकेट लिए जबकि एक विकेट शार्दुल ठाकुर के खाते में गया। जोहानिसबर्ग के वांडरर्स मैदान पर भारत की छह टेस्ट मैचों में यह पहली हार है। दक्षिण अफ्रीका ने चौथे पारी में 240 रनों के लक्ष्य को हासिल कर एक नया इतिहास रच दिया है। दक्षिण अफ्रीका के आगे अब सिर्फ ऑस्ट्रेलिया है जिसने पर्थ में 340 रनों के लक्ष्य को हासिल किया था वह भी 1977-78 में। जबकि वेस्टइंडीज ने 276 रनों का लक्ष्य दिल्ली में हासिल किया था वह भी 1987-88 में।

विदेशी कोच के साथ प्रेक्टिस नहीं करना चाहते बजरंग पूनिया और रवि

एजेंसी

नई दिल्ली। तोक्यो ओलंपिक कांस्य पदक विजेता बजरंग पूनिया विदेशी कोच के साथ विदेश में ज्यादा समय नहीं बिताना चाहते इसलिये उन्होंने 2024 पेरिस खेलों की तैयारी के लिये देश में भारतीय कोच के साथ अभ्यास करने का फैसला किया है। बजरंग ही नहीं बल्कि तोक्यो ओलंपिक के रजत पदक विजेता रवि ने भी भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) को बता दिया है कि वे विदेश के निजी कोच रखने के बजाय भारतीय प्रशिक्षकों के साथ अभ्यास करना पसंद करेंगे। बजरंग जार्जिया के शाको बेनटिनिडिस के साथ ट्रेनिंग करते थे जबकि रवि के पास रूस के कमाल मालिकोव थे, जिनके साथ

बजरंग ही नहीं बल्कि तोक्यो ओलंपिक के रजत पदक विजेता रवि ने भी भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) को बता दिया है कि वे विदेश के निजी कोच रखने के बजाय भारतीय प्रशिक्षकों के साथ अभ्यास करना पसंद करेंगे।

भारतीय कोच भी छत्रसाल स्टेडियम में उनकी मदद करते थे। बजरंग बेनटिनिडिस के साथ संबंध खत्म करने के बाद विदेशी कोच ढूंढने की कोशिश कर रहे थे लेकिन उन्हें कोई कोच नहीं मिला। रूस में उनके मौजूदा अभ्यास शिविर के दौरान भी वह कोच ढूंढ रहे थे और 27 वर्षीय पहलवान के अनुसार कोई भी भारत आने को तैयार नहीं हुआ। बजरंग ने मास्को से पीटीआई से कहा, ''ये कोच चाहते थे कि मैं सत्र का कम से कम 80 प्रतिशत समय उनके देश में बिताऊं और यह शर्त मुझे स्वीकार नहीं थी। मैं आधा समय बिताने को तैयार था लेकिन कोई भी भारत आने को तैयार नहीं था इसलिये मैंने भारतीय कोच के साथ ट्रेनिंग करने का फैसला किया।'' उन्होंने कहा, ''मैं नहीं जानता कि उन्हें भारत आने में क्या परेशानी है।'' बजरंग से पूछने पर कि वह किस कोच के साथ अभ्यास करेंगे तो उन्होंने कहा कि अभी तय करना बाकी है। वह भारतीय रेलवे के साथ जुड़े हुए हैं तो उम्मीद है कि वह रेलवे का कोच रखेंगे। रवि ने हाल में अपने ट्रेनिंग सेंटर में अभ्यास शुरू किया था और उनके 'स्पारिंग' जोड़ीदार अरूण कुमार उनकी मदद कर रहे हैं। डब्ल्यूएफआई के सहायक सचिव विनोद तोमर ने कहा, ''रवि और अधिक ट्रेनिंग जोड़ीदार चाहता हैं। हम गोंडा में रैंकिंग सीरीज प्रतियोगिता के दौरान उसके वर्ग में किसी को देखेंगे।'' उम्मीद है कि दीपक पूनिया भी अपने लंबे समय के ट्रेनर वीरेंद्र कुमार के साथ ट्रेनिंग जारी रखने को तरजीह देंगे जिन्होंने दिल्ली के बाहरी इलाके मरमूरपुर में नया ट्रेनिंग केंद्र बनाया है। देश में कोविड-19 की तीसरी लहर आने का खतरा बना हुआ है तो डब्ल्यूएफआई को भी राष्ट्रीय शिविरों के लिये विदेशी कोच नियुक्त करने में मुश्किल हो रही है।

भारतीय टीम में शामिल हुए दो खिलाड़ी, लीजेंड्स क्रिकेट लीग के लिए खेलंगे

कैफ, बिन्नी 'लीजेंड्स क्रिकेट लीग' के लिए भारतीय टीम में शामिल हो गए है। इसमें भारत, एशिया और शेष विश्व की टीमें शामिल हैं।

नई दिल्ली। मोहम्मद कैफ और स्टुअर्ट बिन्नी को 20 जनवरी से मस्कट में शुरू हो रहे 'लीजेंड्स लीग क्रिकेट (एलएलसी)' के लिए भारत महाराजा टीम में शामिल किया गया है। टूर्नामेंट के आयुक्त रवि शास्त्री ने कहा, ''मोहम्मद कैफ और स्टुअर्ट बिन्नी का भारतीय क्रिकेट में बहुत बड़ा योगदान है और मुझे लगता है कि लीग में भी उनकी बड़ी भूमिका होगी।''एलएलसी के पहले सत्र में भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर भाग लेंगे। इसमें तीन टीमें भाग लेंगी जिसमें भारत, एशिया और शेष विश्व की टीमें शामिल हैं।

कोरोना मामले आने पर एमसीए कार्यालय तीन दिन के लिये बंद

एजेंसी

मुंबई। मुंबई क्रिकेट संघ (एमसीए) को शुक्रवार को अपना कार्यालय तीन दिन के लिये बंद करने के लिये बाध्य होना पड़ा क्योंकि उसके 15 स्टाफ सदस्यों को कोविड-19 पॉजिटिव पाया गया है।

विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि बीसीसीआई (भारतीय क्रिकेट बोर्ड) के कार्यालय में भी कुछ कोविड-19 पॉजिटिव मामले सामने आये हैं। बीसीसीआई का मुख्यालय क्रिकेट सेंटर है जो दक्षिण मुंबई में स्थित है। एमसीए का कार्यालय भी इसी इमारत में है। एमसीए के एक सूत्र ने कहा, ''स्टाफ सदस्य कोविड-19 पॉजिटिव आये हैं जिसके बाद हमने आज से

मुंबई क्रिकेट संघ को शुक्रवार को अपना कार्यालय तीन दिन के लिये बंद करने के लिये बाध्य होना पड़ा क्योंकि उसके 15 स्टाफ सदस्यों को कोविड-19 पॉजिटिव पाया गया है

तीन दिन के लिये कार्यालय बंद कर दिया है।'' बीसीसीआई के एक सूत्र ने शुक्रवार को दोपहर को पीटीआई से कहा, ''हां, कुछ पॉजिटिव मामले सामने आये हैं क्योंकि मुंबई में कोविड-19 के मामले बढ़ रहे हैं। 90 प्रतिशत स्टाफ घर से काम कर रहा है जबकि बोर्ड के कार्यालय में बहुत कम स्टाफ काम कर रहा है। हालांकि कार्यालय अभी खुला है, हमने इसे बंद नहीं किया है।''

वनडे विश्व कप के लिए हुआ भारतीय महिला क्रिकेट टीम का ऐलान, इन दो को नहीं मिली जगह

एजेंसी

नई दिल्ली। स्टार बल्लेबाज जेमिमा रौड्रिगेज को चार मार्च से तीन अप्रैल तक न्यूजीलैंड में होने वाले आईसीसी वनडे विश्व कप के लिये भारत की 15 सदस्यीय महिला क्रिकेट टीम में जगह नहीं मिली है। मिताली राज टीम की कप्तान होंगी जबकि हरमनप्रीत कौर उपकप्तान रहेंगी। 39 वर्ष की मिताली कह चुकी हैं कि वह विश्व कप के बाद संन्यास के बारे में सोचेंगी। टीम में स्मृति मंधाना, झूलन गोस्वामी और युवा शेफाली वर्मा को भी शामिल किया गया है। जेमिमा और हरफनमौला शिखा पांडे को खराब फॉर्म की वजह से टीम में जगह नहीं मिली है। जेमिमा पिछले साल एक भी अंतरराष्ट्रीय मैच में दोहरे अंक तक नहीं पहुंच सकी। उन्होंने हालांकि इंग्लैंड में 'द हंड्रेड' टूर्नामेंट और आस्ट्रेलिया में बिग बैश लीग में अच्छा प्रदर्शन किया। वहीं पांडे ने अंतरराष्ट्रीय मैचों में अच्छाप्रदर्शन नहीं किया। बीसीसीआई के एक सूत्र ने बताया कि दोनों को वनडे प्रारूप में खराब फॉर्म के कारण बाहर किया गया है। रिचा घोष और तानिया भाटिया के रूप में भारत ने दो विकेटकीपरों को मौका दिया हे। यही भारतीय टीम न्यूजीलैंड के खिलाफ नौ से 24 फरवरी तक सीमित ओवरों की श्रृंखला खेलेगी जिसमें एक टी20 और पांच वनडे मैच खेले जायेंगे। भारत को विश्व कप में छह मार्च को तौरंगा में पाकिस्तान से पहला मैच खेलना है। इसके बाद 10 मार्च को हैमिल्टन में न्यूजीलैंड से, फिर वेस्टइंडीज (12 मार्च , हैमिल्टन), गत चैम्पियन इंग्लैंड (16 मार्च , तौरंगा), आस्ट्रेलिया (19 मार्च , आकलैंड), बांग्लादेश (22 मार्च , हैमिल्टन) और दक्षिण अफ्रीका (27 मार्च , क्राइस्चर्च) से खेलना है। पिछली बार 2017 मेंभारतीय टीम फाइनल में इंग्लैंड से नौ रन से हारकर इतिहास रचने से चूक गई थी।

टीम : आईसीसी महिला विश्व कप 2022 और न्यूजीलैंड के खिलाफ वनडे के लिये : मिताली राज (कप्तान), हरमनप्रीत कौर, स्मृति मंधाना, शेफाली वर्मा, यस्तिका भाटिया, दीप्ति शर्मा, रिचा घोष , स्नेह राणा, झूलन गोस्वामी, पूजा वस्त्राकर, मेघना सिंह, रेणुका सिंहझ कुर, तानिया भाटिया, राजेश्वरी गायकवाड़, पूनम यादव। स्टैंडबाय : एस मेघना, एकता बिष्ट, सिमरन दिल बहादुर। न्यूजीलैंड के खिलाफ टी20 : हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना,शेफाली वर्मा, यस्तिका भाटिया, दीप्ति शर्मा, रिचा घोष, स्नेह राणा, पूजा वस्त्राकर, मेघना सिंह, रेणुका सिंह ठाकुर, तानिया भाटिया, राजेश्वरी गायकवाड़, पूनम यादव, एस मेघना, एकता बिष्ट, सिमरन दिल बहादुर।

ओलंपियन ललित उपाध्याय ने ठुकराई ओएसडी पद की नौकरी, कहा पैसों के लिए नहीं करनी नौकरी

एजेंसी

वाराणसी। टोक्यो ओलंपिक्स में 5 अगस्त को हुए ऐतिहासिक मैच भारतीय हॉकी टीम ने जर्मनी को टीम को हराकर, 41 सालों बाद हॉकी में कांस्य पदक जीतकर देश का सम्मान बढ़ाया था, लेकिन यूपी की सरकार ने इन खिलाड़ियों का सम्मान नही किया। विजेता टीम के सदस्य और अर्जुन अवार्ड से सम्मानित ललित कुमार उपाध्याय, जो की वाराणसी के शिवपुर स्थित मंगलपुर गांव के निवासी है, उन्हे उत्तर प्रदेश सरकार मृतक आश्रितों को दी जाने वाली ओएसडी पद की नौकरी दे रही है, जिसपर ललित ने आपत्ति जताई।

ललित ने मीडिया से हुई बातचीत में ओएसडी पद की जॉब प्रोफाइल बताते हुए कहा की, नौकरी में ना ही उनकी पदोन्नति होती और ना ही पुलिस की वर्दी मिलती, शासन की ओर से भेजे गए पत्र में नौकरी को भी अस्थायी बताया गया है। अभी बीपीसीएल में मैनेजर के पद पर तैनात ललित बोले की, मैं पैसों के लिए नौकरी नहीं

विजेता टीम के सदस्य और अर्जुन अवार्ड से सम्मानित ललित कुमार उपाध्याय, जो की वाराणसी के शिवपुर स्थित मंगलपुर गांव के निवासी है, उन्हे उत्तर प्रदेश सरकार मृतक आश्रितों को दी जाने वाली ओएसडी पद की नौकरी दे रही है, जिसपर ललित ने आपत्ति जताई।

चाहता, बल्कि मेरा उद्देश्य प्रदेश में हॉकी को बढ़ावा देना है, इसलिए उन्होंने इस नौकरी का ऑफर ठुकरा दिया। उन्होंने कहा की अगर नौकरी देनी ही है तो, किसी सम्मानित पद पर अच्छी नौकरी दे। ललित ने बताया की, इस नौकरी का ऑफर सरकार द्वारा खेल और खिलाड़ियों के सम्मान का संदेश है। उन्होंने बताया की टीम का हिस्सा रहे बाकी खिलाड़ियों को उनके प्रदेश की सरकारों ने अच्छी नौकरी और सुविधाएं दी है, सिर्फ उत्तर प्रदेश में ही खिलाड़ियों के साथ ऐसा बर्ताव किया जा रहा है। बता दे की, पदक जीत कर लौटने पर खिलाड़ियों का खूब सम्मान किया गया था, पीएम द्वारा दावत भी दी गई थी, एवं उन्होंने ललित से अलग जाकर बात भी की थी।

रणजी ट्राफी टूर्नामेंट को लेकर सौरव गांगुली ने राज्य संघों को लिखा पत्र

एजेंसी

मुंबई। बीसीसीआई (भारतीय क्रिकेट बोर्ड) अध्यक्ष सौरव गांगुली ने राज्य इकाईयों को आश्वस्त किया कि बोर्ड ''कोविड-19 के बढ़ने से उत्पन्न हुई परिस्थितियों के नियंत्रण में आने के बाद घरेलू सत्र को दोबारा शुरू करने के लिये सबकुछ करेगा।''

देश भर में कोविड-19 के बढ़ते मामलों के कारण बीसीसीआई को मंगलवार को रणजी ट्राफी सहित कुछ बड़े टूर्नामेंट को स्थगित करने के लिये बाध्य होना पड़ा। रणजी ट्राफी इस महीने के अंत में शुरू होनी थी। गांगुली ने राज्य संघों को लिखे एक पत्र में कहा, ''आप इस बात से वाकिफ ही हो कि हमें कोविड-19 हालात के खराब होने के कारण मौजूदा घरेलू सत्र को रोकना पड़ा।'' रणजी ट्राफी और सीके नायुडू ट्राफी इस महीने शुरू होनी थी जबकि सीनियर महिला टी20 लीग फरवरी में आयोजित होती। गांगुली ने सभी राज्य इकाईयों के अध्यक्षों और सचिवों को लिखे मेल में कहा, ''कोविड-19 मामले तेजी से बढ़ रहे हैं और कई टीमों में कई पॉजिटिव मामले सामने आये। इससे खिलाड़ियों, अधिकारियों और टूर्नामेंट को चलाने से संबंधित अन्य लोगों के स्वास्थ्य के लिये खतरा पैदा हो गया।'' पीटीआई के पास गांगुली द्वारा लिखा ईमेल है। गांगुली ने कहा कि घरेलू सत्र को दोबारा शुरू करने के लिये बोर्ड सबकुछ करेगा। उन्होंने कहा, ''बीसीसीआई आश्वस्त

करना चाहेगा कि जैसे ही कोविड-19 हालात काबू में आते हैं, बोर्ड घरेलू सत्र को फिर से शुरू करने के लिये सबकुछ करेगा।'' गांगुली ने कहा, ''हम इस सत्र के बचे हुए टूर्नामेंट आयोजित करने के लिये प्रतिबद्ध हैं। बोर्ड संशोधित योजना के साथ जल्द ही आपके पास वापस आयेगा।'' उन्होंने कहा, ''मैं आपके सहयोग और परिस्थितियों को समझने के लिये आपका शुक्रगुजार हूं। अपना ध्यान रखिये और सुरक्षित व स्वस्थ रहिये।'' बंगाल टीम के सात सदस्य और भारतीय आल राउंडर शिवम दुबे के साथ मुंबई टीम के वीडियो विश्लेषक रणजी ट्राफी के शुरू होने से पहले कोविड-19 पॉजिटिव पाये गये थे जिसे 13 जनवरी से शुरू होना था। महामारी के कारण 2020-2021 का सत्र भी आयोजित नहीं हो सका था।

निराशाजनक | ऋषभ पंत का बल्ला नहीं चला और वो शून्य पर पवेलियन लौट गए

ऋषभ को गावस्कर ने बताया बकवास, बोले-दिखानी चाहिए थी जिम्मेदारी

एजेंसी

जोहानिसबर्ग। भारत और साउथ अफ्रीका के खिलाफ जोहानिसबर्ग में खेले जा रहे दूसरे टेस्ट मैच की दूसरी पारी में भारतीय विकेटकीपर ऋषभ पंत के प्रदर्शन को लेकर पूर्व दिग्गज खिलाड़ी सुनील गावस्कर काफी नाराज हैं।

दरअसल, भारत ने साउथ अफ्रीका को 240 रनों का लक्ष्य दिया था, जिसका पीछा करते हुए विरोधी टीम ने अपने 2 विकेट गंवाकर 118 रन बना चुकी है। हालांकि चौथे दिन भारत को या तो 8 विकेट चटकाने होंगे या फिर डीन एल्गर की टीम 122 और जोड़कर इस मुकाबले को जीत लेगी। फिलहाल तीन टेस्ट मैचों की सीरीज में भारत 1-0 से आगे चल रही है।

तीसरे दिन का खेल शुरू होते ही भारत की तरफ से चेतेश्वर पुजारा और अजिंक्य रहाणे ने पारी को संभाले हुए था लेकिन पुजारा और रहाणे के आउट हो जाने के बाद टीम ताश के पत्तों की तरफ ढह गई। ऋषभ पंत का बल्ला भी नहीं चला और वो शून्य पर पवेलियन लौट गए। महज ऑलराउंडर हनुमा बिहारी ही एक छोर पर टिके रहे और टीम 266 रन पर ही आलआउट हो गई। दिग्गज खिलाड़ी सुनील गावस्कर ने कमेंट्री के दौरान ऋषभ पंत द्वारा

तीसरे दिन का खेल शुरू होते ही भारत की तरफ से चेतेश्वर पुजारा और अजिंक्य रहाणे ने पारी को संभाले हुए था लेकिन पुजारा और रहाणे के आउट हो जाने के बाद टीम ताश के पत्तों की तरफ ढह गई। ऋषभ पंत का बल्ला भी नहीं चला और वो शून्य पर पवेलियन लौट गए।

खेले गए शॉट पर नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि इस शॉट को खेलने के बाद आप कोई बहाना नहीं दे सकते हैं। इसमें आपका यह नेचुरल खेल है जैसी बकवास बात भी स्वीकार नहीं की जाएगी। रहाणे और पुजारा के आउट हो जाने के बाद उन्हें जिम्मेदारी दिखानी चाहिए। उन्हें शुरुआत में बड़ा हिट करने की कोशिश नहीं करना चाहिए थी।

मजबूत स्थिति में साउथ अफ्रीका

डीन एल्गर तीसरे दिन का खेल समाप्त होने तक 121 गेंदों पर 46 रन बनाकर खेल रहे थे। उन्होंने एडेन मार्कराम (31) के साथ पहले विकेट के लिए 47 और कीगन पीटरसन (28) के साथ दूसरे विकेट के लिए 46 रन की साझेदारियां कीं। तीसरे दिन स्टंप उखड़ने के समय डीन एल्गर के साथ रॉसी वान डर डुसेन 11 रन पर खेल रहे थे। हालांकि साउथ अफ्रीका के पास मुकाबले को जीतने के लिए महज 122 रनों की आवश्कता है और उनकी स्थिति इसलिए भी मजबूत है क्योंकि उनके पास 8 विकेट और 2 दिन का पर्याप्त समय है।

बाल काटते वक्त जावेद हबीब ने महिला के बालों पर क्यों थूका?

सामने आया सच, महिला आयोग ने लिया कड़ा ऐक्शन

राष्ट्रीय महिला आयोग ने उत्तर प्रदेश पुलिस से कहा है कि वह उस कथित वीडियो की सत्यता की जांच करे जिसमें जानेमाने हेयर स्टाइलिस्ट जावेद हबीब एक महिला के बाल पर थूकते हुए दिख रहे हैं। यह घटना उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में आयोजित एक कार्यशाला के दौरान की है।

नई दिल्ली। कुछ ही साल पहले हिंदू धर्म की भावनाओं को आहत करने के कारण हेयर स्टाइलिस्ट जावेद हबीब चर्चा में आये थे। इस घटना के बाद से जावेद हबीब सुर्खियों से गायब थे। न तो इनके किसी काम को लेकर कुछ बड़ी खबर सामने आयी न हीं उनकी कंपनी से जुड़ी कोई खबर। पर उन्होंने अपने काम के दौरान एक ऐसी चीज की है जिसने एक नया विवाद खड़ा कर दिया हैं। जावेद हबीब ने एक महिला के बाद काटने वक्त उसने बालों पर थूका, जिसके बाद नराज महिला ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो जारी करके जावेद हबीब को खरी-खरी सुना दी। मामला एक बड़े सिलेब्रिटी से जुड़ा है इस लिए इस मामले ने तूल पड़की और महिला आयोग तक पहुंच गया।

राष्ट्रीय महिला आयोग ने की जावेद हबीब से जुड़ी वीडियो की जांच की मांग

राष्ट्रीय महिला आयोग ने उत्तर प्रदेश पुलिस से कहा है कि वह उस कथित वीडियो की सत्यता की जांच करे जिसमें जानेमाने हेयर स्टाइलिस्ट जावेद हबीब एक महिला के बाल पर थूकते हुए दिख रहे हैं। यह घटना उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में आयोजित एक कार्यशाला के दौरान की है। आयोग ने उत्तर प्रदेश पुलिस को लिखे पत्र में कहा, ''आयोग ने इस घटना का गंभीरता से संज्ञानलिया है। वह इसकी न सिर्फ कड़ी निंदा करता है, बल्कि इसमें आपका तत्काल दखल चाहता है ताकि इस वायरल वीडियो की सत्यता की जांच की जा सके।''

जावेद हबीब ने महिला के बालों पर थूक क्यों लगाया?

महिला आयोग के मुताबिक, यह घटना केंद्रीय गृह मंत्रालय की ओर से जारी कोविड संबंधी दिशानिर्देशों का भी उल्लंघन है और ऐसे में लोगों के बीच थूकना दंडनीय अपराध भी है। आयोग ने जावेद हबीब को भी सुनवाई के लिए एक नोटिस भेजा है। वीडियो में दिख रहा है कि जावेद महिला के बाल पर थूक रहे हैं और यह भी कहते सुने जा रहे हैं कि 'जब पानी की कमी हो तो थूक का इस्तेमाल करिये।' इसमें वहां मौजूद लोग हंसते देखे जा सकते हैं।

बाल कटवाने वाली महिला ने वीडियो जारी करके दी जानकारी

पूजा गुप्ता नामक इस महिला का एक वीडियो सामने आया है जिसमें उन्होंने कहा, ''कल मैं जावेद हबीब की कार्यशाला में गई थी। उन्होंने बाल काटने के लिए स्टेज पर बुलाया। इसके बाद उन्होंने यह किया। अब मैं सड़क किनारे बाल कटवा लूंगी, लेकिन हबीब के पास नहीं जाऊंगी।

जावेद हबीब ने मांगी माफी

हबीब ने एक सेमिनार के दौरान एक महिला के बालों पर कथित तौर पर थूकने के बाद विवाद खड़ा कर दिया। सोशल प्लेटफॉर्म पर वीडियो के वायरल होने के तुरंत बाद, सोशल मीडिया पर लोगों ने हेयर स्टाइलिस्ट को मंच पर उसकी बेहूदा हरकत के लिए फटकार लगाई। लोगों की तरफ से बहुत ज्यादा ट्रोल होने के बाद, जावेद हबीब ने इंस्टाग्राम पर एक ताजा वीडियो जारी किया जिसमें बताया गया कि उसने ऐसा क्यों किया और अपने कार्यों के लिए माफी मांगी।

नॉटी मूड में संजीदा शेख ने शेयर की हॉट तस्वीर, क्लीवेज पर अटकी फैंस की नजरें

टेलीविज़न की सबसे बोल्ड अभिनेत्रियों में से एक संजीदा शेख अक्सर अपने सेक्सी फिगर और फैशन स्टेटमेंट की वजह से लाइमलाइट में बनी रहती हैं। इन दिनों भी वह सोशल मीडिया पर छाई हुईं हैं और इसका कारण हैं उनकी बोल्ड तस्वीरें जो इंटरनेट पर वायरल हो रही हैं। अभिनेत्री की बोल्डनेस देखकर उनके फैंस और फॉलोवर्स की नींदे उड़ गई हैं।

वायरल तस्वीरों में अभिनेत्री ने डीप नैक का जम्पसूट पहना हुआ हैं। जम्पसूट में अभिनेत्री का क्लीवेज साफ़ नजर आ रहा हैं। लोगों की नजरें अभिनेत्री के क्लीवेज पर अटक गयी हैं। संजीदा की तस्वीरों पर लोग प्यार लुटाते नहीं थक रहे हैं। कमेंट सेक्शन दिल और आग वाले इमोजी से भर गया है। एक सोशल मीडिया यूजर ने तस्वीरों पर कमेंट करते हुए लिखा, रहॉट एंड सेक्सीर। एक अन्य ने कमेंट किया, लवली एंड नॉटी। संजीदा शेख ने साल 2005 में धारावाहिक क्या होगा निम्मो का से अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत की। साल 2007 में वह अपने पूर्व पति आमिर अली के साथ नच बलिए 3 में नजर आईं और दोनों ने इस सीजन की ट्रॉफी भी अपने नाम की थी। साल 2014 में अभिनेत्री शो एक हसीना थी में नजर आईं। यह शो उनके करियर का टर्निंग पॉइंट साबित हुआ। पर्सनल लिखे की बात करें तो लम्बे समय तक अभिनेता आमिर अली को डेट करने के बाद 2012 में संजीदा ने उनसे शादी की। अगस्त 2020 में दोनों ने अपनी जिंदगी में सरोगेसी के माध्यम से बेटी आयरा अली का स्वागत किया। खबरों की मानें तो कपल 9 महीने पहले आधिकारिक तौर पर अलग हो चूका है।

जालीदार साड़ी के साथ बेहद ही बोल्ड ब्लाउज़ पहने नज़र आईं कुंडली भाग्य फेम श्रद्धा आर्या

टीवी की मशहूर अदाकारा श्रद्धा आर्या ने अपनी कुछ सेक्सी तस्वीरें शेयर करके इंटरनेट पर आग लगा दी हैं। अभिनेत्री अपनी इन बेहद ही हॉट तस्वीरों की वजह से सोशल मीडिया पर छाई हुई हैं। श्रद्धा हाल ही में मालदीव में हनीमून एन्जॉय करके वापस घर लौटी हैं। वहाँ से उन्होंने अपनी तस्वीरें पोस्ट की। पोस्ट होते ही तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हो गयीं हैं। अभिनेत्री के फैंस उनकी तस्वीरों पर दिल खोल कर प्यार लुटा रहे हैं। अभिनेत्री के ऑउटफिट की बात करें तो उन्होंने पिंक कलर की नेट वाली साड़ी पहनी हुई हैं। इस साड़ी के साथ उन्होंने डीप नैक का बड़ा ही सेक्सी ब्लाउज पहना हुआ है। इन ट्रेडिशन कपड़ों में अभिनेत्री बेहद ही खूबसूरत नजर आ रही हैं। तस्वीरों को अब तक चार लाख से ज्यादा लोग लाइक कर चुके हैं। फैंस तस्वीरें पसंद आ रही हैं और उन्होंने कमेंट सेक्शन को दिल वाले इमोजी से भर दिया है। एक सोशल मीडिया यूजर ने तस्वीरों पर कमेंट करते हुए लिखा, अति सुंदर। एक अन्य ने कमेंट किया, गजब। काम की बात करें तो अभिनेत्री श्रद्धा आर्या जाने माने टीवी शो कुंडली भाग्य में प्रीत की भूमिका निभा रही हैं। अभिनेत्री ने अपने करियर की शुरुआत ज़ी टीवी के टैलेंट हंट शो इंडियाज बेस्ट सिनेस्टार्स की खोज से की थी। साल 2011 में, श्रद्धा आर्या ने धारावाहिक मैं लक्ष्मी तेरे आंगन की के साथ टेलीविजन पर अपना डेब्यू किया। लाइफ ओके के सीरियल तुम्हारी पाखी में पाखी की भूमिका निभाकर उन्हें घर घर पहचान मिली।

स्टार किड्स ने इंटरनेट पर लगाया बोल्डनेस का तड़का

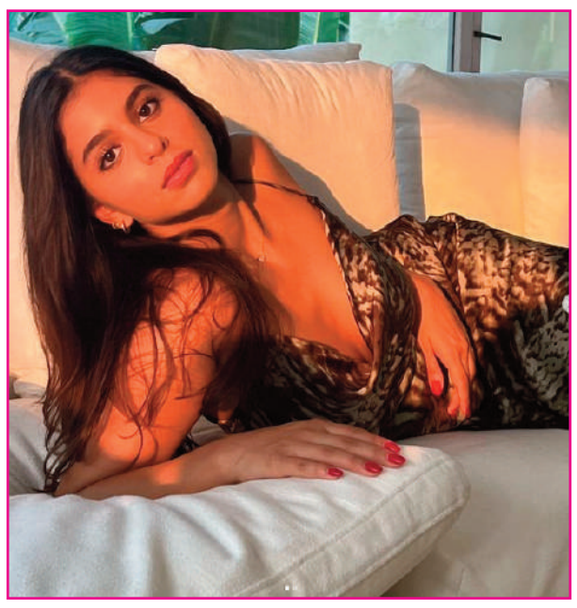

अभिनेत्री अनन्या पांडे और किंग खान की बेटी सुहाना खान ने अपने लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरें सोशल मीडिया पर पोस्ट की। पोस्ट होते ही तस्वीरें आग की तरफ सोशल मीडिया पर फैल गई। दोनों स्टार किड्स ने अपने अपने बोल्ड अंदाज से लोगों के होश उड़ा रखे हैं। इंटरनेट पर बॉलीवुड सितारों के जितने चर्चे रहते हैं उतने ही चर्चे स्टार किड्स के भी हैं। हाल ही में दो स्टार किड्स यानी कि अभिनेत्री अनन्या पांडे और किंग खान की बेटी सुहाना खान ने अपने लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरें सोशल मीडिया पर पोस्ट की। पोस्ट होते ही तस्वीरें आग की तरफ सोशल मीडिया पर फैल गई। दोनों स्टार किड्स ने अपने अपने बोल्ड अंदाज से लोगों के होश उड़ा रखे हैं। फैंस और फॉलोवर्स तस्वीरें देखकर पागल ही हो गए हैं।

सुहाना खान ने प्रिंटेड डीप नेक क्लीवेज गाउन पहनकर करवाया फोटोशूट

सुहाना खान ने अपनी इन तस्वीरों को शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा, रुको मुझे तुम्हारे लिए पोज देने दो। आउटफिट की बात करें तो सुहाना ने बेहद ही हॉट प्रिंटेड डीप नेक गाउन पहना हुआ है। इस गाउन में उनका क्लीवेज साफ़ नजर आ रहा है। सोफे पर लेट हुए सुहाना धुप सेक रही हैं और अपनी कातिलाना अदाओं से अपने फैंस का कतल कर दिया हैं। सुहाना का हॉट अवतार देखकर उनके सेलिब्रिटी फ्रेंड्स के साथ फैंस और फॉलोवर्स पागल हुए जा रहे हैं। उनके गुड लुक्स की तारीफ करते हुए लोग थक नहीं रहे हैं।

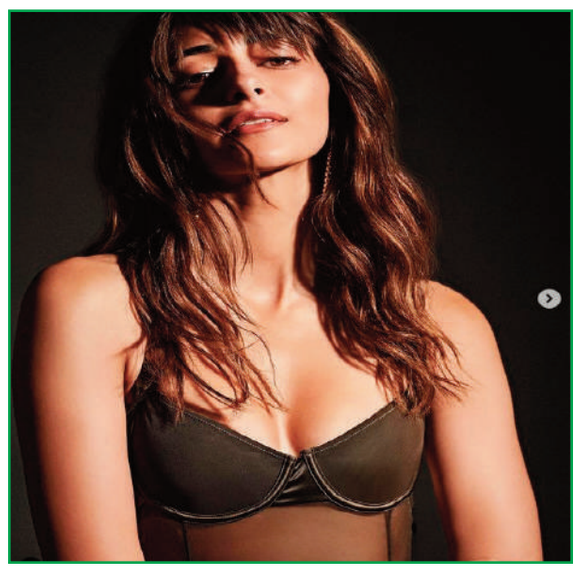

अनन्या पांडे ने डीप नेक ब्रालेट पहनकर करवाया फोटोशूट

अनन्या पांडे अक्सर अपनी बोल्ड फोटोशूट की तस्वीरें शेयर करके लोगों के दिलों को धड़का देती हैं। इस बार भी उन्होंने ब्रालेट टॉप पहनें एक बेहद ही हॉट फोटोशूट करवाया और उन तस्वीरों को अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर शेयर किया। अभिनेत्री की हद से ज्यादा बोल्ड तस्वीरें देखकर फैंस के दिलों में आग लग गई हैं। तस्वीरों को शेयर करते हुए अनन्या ने कैप्शन में लिखा, न्यू ईयर, न्यू मी। अभिनेत्री की इन हॉट तस्वीरों पर अब तक आठ लाख से ज्यादा लोग अपना दिल हार गए हैं।

स्वरा भास्कर कोरोना वायरस से संक्रमित

मुंबई। अभिनेत्री स्वरा भास्कर ने शुक्रवार को बताया कि वह कोरोना वायरस से संक्रमित पाई गई हैं और घर पर ही पृथक-वास में हैं। भास्कर (33) ने ट्वीट किया कि वह और उनके परिवार के सदस्यों में पांच जनवरी से ही लक्षण थे और वे पृथक रह रहे थे। भास्कर ने कहा, '' हेली कोविड। अभी आरटी-पीसीआर जांच की रिपोर्ट मिली और मैं संक्रमित हूं। पृथक-वास में हूं। बुखार, सिरदर्द और स्वाद न आने जैसे लक्षण है। मैंने टीके की दोनों खुराक ली है, उम्मीद करती हूं जल्दी इससे उबर जाऊं...सभी सुरक्षित रहें।'' अभिनेत्री ने एक बयान में उनके सम्पर्क में आए सभी लोगों से जांच कराने का आग्रह किया। भास्कर ने कहा, ''मैं पूरी एहतियात बरत रही हूं। मैंने पिछले एक सप्ताह के दौरान मेरे सम्पर्क में आए लोगों को बता दिया है, लेकिन अगर कोई और भी मेरे सम्पर्क में आया हो तो कृपया जांच कराएं। दो मास्क पहनें और सुरक्षित रहें।'' बृहन्मुंबई नगर निगम ने कहा कि मुंबई में बृहस्पतिवार को कोविड-19 के 20,181 नए मामले सामने आ आए , जबकि चार मरीजों की मौत हो गई।

बिकिनी में कातिलाना पोज देकर मौनी रॉय ने उड़ाए फैंस के होश

कलर टीवी के मशहूर शो नागिन से घर घर पहचान बनाने वाली अभिनेत्री मौनी रॉय अपनी बोल्डनेस से सुर्खियों में बनी रहती हैं। हाल ही में अभिनेत्री मौनी ने अपनी कुछ हॉट तस्वीरें सोशल मीडिया पर पोस्ट की। तस्वीरें पोस्ट होते ही सोशल मीडिया पर आग की तरह फ़ैल गई हैं। अभिनेत्री की बोल्डनेस देखकर लोगों की रातों की नींद उड़ गई हैं। अभिनेत्री मौनी रॉय इन दिनों अपनी क्लोज फ्रेंड्स के साथ हॉलिडे एन्जॉय कर रही हैं। वहां से उन्होंने अपनी कुछ तस्वीरें सोशल मीडिया पर शेयर की। तस्वीरों में अभिनेत्री ने सी ग्रीन कलर का सेक्सी बिकिनी टॉप और साइड स्लिट स्कर्ट पहनी हुई है। मौनी रॉय ने मैचिंग फ्लोई केप जैकेट के साथ अपने बिकिनी सेट को कम्पलीट किया है। अभिनेत्री बिकिनी पहनकर बेहद ही कातिलाना पोज दे रही हैं। उनकी इन बोल्ड तस्वीरों पर अब तक लगभग पांच लाख लोग अपना दिल हार गए हैं। मौनी के फैंस और फॉलोवर्स दिल खोलकर तस्वीरों पर कमेंट करने में लगे हुए हैं। इससे पहले भी उन्होंने अपनी कई बिकिनी फोटोज सोशल मीडिया पर शेयर की हुईं हैं। अभिनेत्री अक्सर अपने स्टाइलिश बिकिनी लुक्स की वजह से सुर्खियों में बनी रहती है।

दक्षिण फिल्मों के सुपरस्टार महेश बाबू हुए कोरोना से संक्रमित

हैदराबाद। तेलुगु फिल्मों के सुपरस्टार महेश बाबू ने बृहस्पतिवार को बताया कि वह कोविड-19 की जांच में संक्रमित मिले हैं। अभिनेता ने सोशल मीडिया पर घोषणा की और कहा कि उनमें कोविड-19 के हल्के लक्षण हैं और 'सभी जरूरी एहतियात बरतने के बावजूद' वह संक्रमित हो गए। एक पोस्ट में, महेश बाबू ने कहा कि वह घर में पृथक-वास में हैं और उचित चिकित्सा निर्देश का पालन कर रहे हैं। अभिनेता ने अपने पोस्ट में कहा, "मेरे संपर्क में आने वाले सभी लोगों से अनुरोध है कि वे अपनी जांच कराएं। मैं उन सभी से शीघ्र टीका लगवाने का आग्रह करता हूं जिन्होंने अपना टीकाकरण नहीं कराया है,क्योंकि यह गंभीर लक्षणों और अस्पताल में भर्ती होने के जोखिम को कम करता है। कृपया कोविड मानदंडों का पालन करें और सुरक्षित रहें। वापस आने का बेसब्री से इंतजार।

'उड़े जब जब जुल्फे तेरी' गाने पर झूमते दिखे धर्मेंद्र और हेमा मालिनी, रोमांटिक केमिस्ट्री देखकर खुशी से पागल हुए फैंस

अभिनेता धर्मेंद्र और अभिनेत्री हेमा मालिनी इन दिनों इंटरनेट पर छाए हुए हैं। दोनों का एक वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में धर्मेंद्र अपनी पत्नी हेमा मालिनी के साथ डांस करते नजर आ रहे हैं। 86 साल की उम्र में अभिनेता की जिंदादिली देखकर उनके फैंस बेहद खुश हैं।

वीडियो पर लोग प्यार लुटाते नहीं थक रहे हैं। धर्मेंद्र और हेमा मालिनी का वायरल हो रहा वीडियो पुराना है। इस वीडियो को अभिनेत्री के फैन पेज पर शेयर किया गया है। वीडियो में अभिनेता धर्मेंद्र बॉलीवुड के हिट गाने 'उड़े जब जब जुल्फे तेरी' गाने पर हेमा मालिनी के साथ नाचते हुए नजर आ रहे हैं। धर्मेंद्र और हेमा मालिनी एक दूसरे के साथ बेहद ही खुश नजर आ रहे हैं और दोनों की केमिस्ट्री लोगों को खूब पसंद आ रही हैं। दोनों की लव स्टोरी की बात करें तो धर्मेंद्र और हेमा मालिनी की पहली मुलाकात 1970 में फिल्म तुम हसीन मैं जवान की शूटिंग के दौरान हुई थी। फिल्म में दौरान ही दोनों में प्यार हो गया था। धर्मेंद्र पहले से ही प्रकाश कौर से शादी कर चुके थे और उनके दो बेटे बॉबी देओल और सनी देओल थे। जब प्रकाश कौर ने उन्हें तलाक देने से मना कर दिया तो हेमा मालिनी से शादी करने के लिए धर्मेंद्र ने इस्लाम धर्म अपना लिया। इसके बाद दोनों 1980 में शादी के बंधन में बंध गए।

वीडियो में अभिनेता धर्मेंद्र बॉलीवुड के हिट गाने 'उड़े जब जब जुल्फे तेरी' गाने पर हेमा मालिनी के साथ नाचते हुए नजर आ रहे हैं। धर्मेंद्र और हेमा मालिनी एक दूसरे के साथ बेहद ही खुश नजर आ रहे हैं और दोनों की केमिस्ट्री लोगों को खूब पसंद आ रही हैं।

काली बिकनी में कहर ढहाती नजर आयी इमरान हाशमी की एक्ट्रेस सोनल चौहान

बॉलीवुड एक्ट्रेस सोनल चौहान को फिल्म 'जन्नत' से जाना जाता हैं। एक्ट्रेस अपनी पहली ही फिल्म से काफी ज्यादा पॉपुलर हो गयी थी लेकिन का अन्य फिल्मों में वह अपना जलवा नहीं दिखा सकी। सोनल चौहान काफी समय से पर्दे से दूर हैं लेकिन सोशल मीडिया पर वह काफी एक्टिव रहती हैं। हाल ही में उन्होंने एक फोटोशूट करवाया है जिसे लेकर वह काफी चर्चा में हैं। उनकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रही हैं। ब्लॉकबस्टर फिल्म 'जन्नत' की एक्ट्रेस सोनल चौहान ने बीच पर बोल्ड फोटोशूट करवाया जिसकी तस्वीरें काफी वायरस हो रही हैं। सोनल अक्सर सोशल मीडिया पर चर्चा में रहती हैं, लेकिन इस बार एक्ट्रेस बिकिनी पिक्स से चर्चा में हैं। यह पहली बार नहीं है जब सोनल ने अपना बिकिनी अवतार दिखाया है। सोनल परफेक्ट फिगर को फ्लोट करना बखूबी जानती हैं। ये खूबसूरत तस्वीरें इसका सबूत हैं। एक्ट्रेस का मानना है कि हर किसी को अपनी बिजी लाइफ में से कुछ वक्त अपने लिए निकालना चाहिए और जिंदगी को खुशी से जीना चाहिए। क्या आप जानते हैं सोनल चौहान कोई डाइट प्लान फॉलो नहीं करती हैं।

स्वामित्व, मुद्रक, प्रकाशक एवं RNI No. DELHIHIN/2010/37009 संपादक मो हनीफ द्वारा अरावली प्रिंटर्स -WA30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित करवाकर, जी-12/276 , संगम विहार, नई दिल्ली-62 से प्रकाशित। फोन:8888883968, 9811111715 किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली न्यायालय में ही होगा।